सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 43, नई दिल्ली । बुधवार, 23 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सच्चाई और अच्छाई की तलाश में पूरी दुनिया घूम लें, अगर वह खुद के अंदर नहीं तो कहीं नहीं

03 डॉ भीमराव अम्बेडकर सम्मान अभियान संगोष्ठीयों का आयोजन

06 छात्रों को अद्वितीय नौकरियों पर विचार क्यों करना चाहिए

08 सूचना का अधिकार अभियान कार्यकर्ता सम्मेलन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित।

दिल्ली परिवहन आयुक्त आखिर किस तरह से जनता को सड़कों पर सुरक्षित वाहन सेवा उपलब्ध करवाना चाहते हैं ?

संजय बाटला

1. दिल्ली में प्राइवेट कंपनियों से किलोमीटर की दर पर वाहन लेकर और कॉन्ट्रेक्ट पर कर्मचारियों को लगाकर दिल्ली में सार्वजनिक सुरक्षित, सुखद और समयानुसार सवारी सेवा उपलब्ध कराकर,

2. निर्भया जैसी दुर्घटना घटने के बाद गृह सचिव की अध्यक्षता में गठित कमिटी के आदेश के बाद भी दिल्ली में बिना सही निवास स्थल जांच करे और गलत नाम से पंजीकृत वाहन मालिको के द्वारा बेखौफ सार्वजनिक सवारी सेवा चलवा कर,

3. वीएलटीडी संयंत्र के लिए कंट्रोल रूम बनाए बिना जनता और गृह मंत्री भारत सरकार के साथ माननीय सुप्रीम कोर्ट को गुमराह करने के लिए वाहन मालिकों से वाहनों में महिला सुरक्षा के नाम से वीएलटीडी संयंत्र लगवा कर जो कोई काम नहीं कर सकता,

4. दिल्ली में व्यवसायिक वाहन मालिकों को वाहन की जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए मुसीबत खड़ी कर बाहरी राज्यों से वाहन जांच प्रमाण पत्र प्राप्त करवाकर,

5. तकनीकी पदों पर जानबूझ कर गैर तकनीकी अधिकारियों को नियुक्त करके,

6. प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर जनता को लूटवाकर,

ऊपरलिखित सभी ऐसे मुद्दे हैं

1. जो किसी भी हालात में दिल्ली की जनता को सड़को पर सुरक्षा नहीं सिर्फ़ असुरक्षा ही दे सकते हैं,

2. और दिल्ली राज्य को कभी भी प्रदूषण मुक्त राज्य बनने नहीं दें सकता।

हा इन कार्यों से जो परिवहन आयुक्त कर रहे हैं और जिस तरह से कर रहे हैं उससे राजस्व में भयंकर इजाफा हो सकता हैं और साथ में जनता से भयंकर लूटपाट।

अब सवाल यह उठता है की क्या सिर्फ राजस्व के लोभ में ग्रस्त होकर दिल्ली के प्रशासक उपराज्यपाल दिल्ली और दिल्ली सरकार परिवहन आयुक्त को ऐसे कार्यों को करने की खुली छूट दे रहे हैं और परिवहन आयुक्त के खिलाफ कोई कार्यवाही करने को तैयार नहीं।

आप सब की जानकारी के लिए बता दे की आज के समय में **परिवहन आयुक्त ही एक ऐसे आईएएस अधिकारी है जो अपनी इच्छा से जिस तकनीक का प्रयोग कर कानूनी और गैर कानूनी तरीके अपनाकर दिल्ली को उम्मीद से ज्यादा राजस्व दिला रहे हैं।**

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
TRANSPORT DEPARTMENT: ADMINISTRATION BRANCH
5/9 UNDER HILL ROAD, DELHI-110054
(Website:www.transport.delhigovt.nic.in)

F. No. F8(13)/95/Admn/Tpt/Pt. File/Vol .II/1773\ Dated : 22/4/25

WORK/ BRANCH ASSIGNMENT ORDER IN RESPECT OF SCOTB & OTHER SENIOR LEVEL OFFICERS

S. No.	Name	Designation	Work/ Branch Assignment
1	Sachin Shinde	HD (DTC) & Spl. Commissioner (STA &Vig)	• STA • Vigilance • MD DTIDC
2	Vishwendra	Spl. Commissioner (OPs&Coord)	• Operations (including VIU, ARU & TU) • Caretaking & Estate Branch • Planning & Finance • Road Safety • Administration • Overall Coordination
3	Aom Dhole Kashinath Rao	Joint Commissioner (EV &Enf)	• EV Cell • Enforcement(including Scrapping)& PCD • MRTS/ RRTS
4	Piyush Singh Vijaykaran	Joint Commissioner (BT &IT)	• Bus Transport • IT
5	Dr. Ashutosh Kumar Srivastava	Deputy Director (Plg & Admn)	• Planning • Administration (including HOO charge)
6	Sunil Sehgal	Deputy Commissioner(STA)	• STA • Parliament/ Assembly questions (thru SCOT Coord)
7	KulbhushanBabbar	Deputy Commissioner (Vig&DTIDC)	• Vigilance • FAA (RTI/DRTI), Transport Department • ED DTIDC
8	Sanjay Allawadi	Deputy Commissioner (OPs)	• Operation (including DTO Zones & DTO(HQ)) • VIU
9	R. Ramanathan	Deputy Commissioner (TU & ARU)	• DC (TU & ARU) • Coordination of Litigation/Arbitration matters, including misc./overlapping Court/Arbitration cases, CCTV case, etc. • PGMS, CPGRAMS, LG Listening Post (Independently)
10	Navin Kocchar	Deputy Commissioner (CDC) (RS &Coordination)	• Road Safety • Coordination • CT & Estate • CPIO (RTI/DRTI), Transport Dept.
11	Krishna Kant	Sr. System Analyst	• IT (including Delhi Transport Stack) • All IT projects handled by NIC
12	RK Reddy	Dy. Controller of Accounts	• Finance & Accounts

Continued..

Scanned with OKEN Scanner

The following link officer arrangement would prevail:

#	Name of the officer	Link Officerfor
1	Sachin Shinde	S.No.2
2	Vishwendra	S.No.1
3	Aom Dhole Kashinath Rao	S.No.4
4	Piyush Singh Vijaykaran	S.No.3
5	Dr. Ashutosh Kumar Srivastava	S.No.6
6	Sunil Sehgal	S.No.5
7	Kulbhushan Babbar	S.No.10
8	Sanjay Allawadi	S.No.9
9	R. Ramanathan	S.No.8
10	NavinKocchar	S.No.7 (except for ED DTIDC)

NOTE:

1. Court cases/ Arbitration matters, relating to a branch, will be dealt with (selection of advocate, preparation of comprehensive response, representation before the Court/Arbitrator on the date of hearing, arguing the case where required, and payment of advocate fees) by the concerned branch only. However, the Litigation Branch shall be jointly and severally responsible for the timeliness of the Departmental response in the court, and the timely payment of advocate bills.
2. Any officer availing leave of any kind, including CL, shall be duty-bound to inform his Link Officer, especially regarding all significant and time-bound matters that will need to be disposed of in his absence.

This order comes into force with immediate effect, and issues with the approval of Addl. Chief Secretary cum Commissioner, Transport, GNCTD.

Dr. Ashutosh Kumar Srivastava
Dy. Director (Admin)/HOO
Transport Department

आप भी "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" के संचालन मंडल में हिस्सेदार बन सकते हैं।

जनता को दुनिया में हो रही गतिविधियों के सच से अवगत करवाने और उसके तथ्यों को सही ढंग से पहुंचाने का मुख्य दायित्व संचार माध्यम का बनता है। **समाचार पत्र /टेलीविजन/इंटरनेट नेटवर्क प्रकाशन जो सरकार या कॉर्पोरेट हितों के प्रभाव से मुक्त हों।**

किसी भी संचार माध्यम को स्वतंत्र रूप से सही/ सच और बिना तथ्यों को बदले बात पहुंचाने के लिए आवश्यकता है जनता/ संस्थाओ / सम्पन्न व्यवसायिक सहयोगियों / निर्माताओ एवम् जनता के सहयोग की जिससे संचार माध्यम के संचालक को सरकार और कॉरपोरेट के दबाव में ना आना पड़ें और वह बेखौफ/ निडर होकर आप तक सच पहुंचा सके।

"**परिवहन विशेष**" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र संचालक और सम्पूर्ण टीम जुड़े सहयोगियों के प्रति नतमस्तक हैं, जिनके सहयोग के कारण हम अपने समाचार पत्र को छापने और चलाए रखने में कामयाब रहे और आपको सच सही तथ्यों और सबूतों के साथ प्रस्तुत करने में सफल रहे। संचालक मंडल "**परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र**" आप सभी का दिल से आभार प्रकट करता है जिन्होंने अपनी क्षमता के अनुसार किसी भी रूप में हमें अपना सहयोग प्रदान किया जिस के बल पर हम स्वतंत्रता से संचार माध्यम को चलाने मे कामयाब रहे।

आपको सूचित करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है की आप सभी के सहयोग और समाचार पत्र के प्रति विश्वसनीयता के कारण हम बिना किसी बंदिश और दबाव के सच छापने और आप तक सच पहुंचाने में सक्षम रहे और सच को बेखौफ सबके सामने प्रस्तुत कर आपकी और जनता की आवाज बन सके। आर .एन .आई . भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद आपके बीच सच को निष्पक्ष रूप से छापते/ पहुंचाते हुए हमने 2 साल पूरे कर लिए हैं। हम स्वतंत्र संचार माध्यम के 2 साल पूरे होने की खुशी को जो सिर्फ आपके द्वारा प्रदान सहयोग से संभव हुआ। आप सभी से इस खुशी को मिलकर बाटने के लिए हम अपना दूसरा वार्षिक सम्मान समारोह 17 मई 2025 को कंस्टीट्यूशन क्लब में आयोजित करने जा रहे हैं।

हम आप से पुन: अनुरोध करते हैं की "**परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र**" के द्वितीय वार्षिक सम्मान समारोह के आयोजन में आप

1. पार्टनरशिप
2. स्पॉन्सरशिप और
3. एडवरटाइजमेंट (विज्ञापन)

के रूप में स्वयं, जानकार संस्थाओ / सम्पन्न व्यवसायिक सहयोगियों / निर्माताओं एवं अन्य सभी से करवा कर हमें इसी प्रकार स्वतंत्रता से स्वतंत्र, निष्पक्ष संचार माध्यम को चलाने की शक्ति प्रदान करने और इस सम्मान समारोह में हिस्सेदार बन सकते हैं।

विज्ञापन एवं स्पॉन्सरशिप के प्रति आपके द्वारा प्रदान की जाने वाली राशि आप नीचे दिए गए बैंक खाते में सीधे जमा कर हमें ईमेल एवं व्हाट्सएप के माध्यम से रसीद भेज सकते हैं।

Transport News Vishesh
208602000008973
IOBA0002086

इसके अतिरिक्त आप 9811732095 पर phonepay के माध्यम से भी राशि जमा कर सकते हैं।

सूचना **विज्ञापन और स्पॉन्सरशिप के लिए आपके द्वारा प्रदान की गई राशि के प्रति हम आपको आनलाइन जीएसटी रसीद जारी करेंगे।**

संजय बाटला (मुख्य संपादक)

सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कारगर उपाय जरूरी...

हरिहर सिंह चौहान

'हम सभी और परिवहन विभाग व सड़क सुरक्षा के लिए सभी व्यक्तियों सही दिशा में ही चलना होगा। सड़क दुर्घटनाओं के एक साल के आंकड़ों को जिस प्रकार बढ़ रहें हैं उसे देख कर ऐसा लगता है स्थिति बहुत भयभीत करने वाली है। एक लाख से अधिक लोग विभिन्न सड़क दुर्घटना में दुनिया से विदा हो गए। 11 प्रतिशत सड़क हादसे सिर्फ भारत मे होते है। लापरवाही चाहें चालक की हों या सड़क निर्माण में घटिया निर्माण सुरक्षा के उपाय पर सही तरीके से लगाना नहीं । या इंजिनियर जो सड़क निर्माण का सहयोगी है और वह कम्पनी या ठेकेदार जब तक यहां लोग इमानदारी नहीं रखें तब तक स्थिति कैसे ठीक होगी ? नौसिखियों वाहन चालक जिन्हें शॉटकट में लायसेंस दिलायें वह भी इन मौतों के दोषी है । पर भष्टाचार की लालिमा से खाईं बन गई है। दुर्घटनाओं में सिर्फ भारत

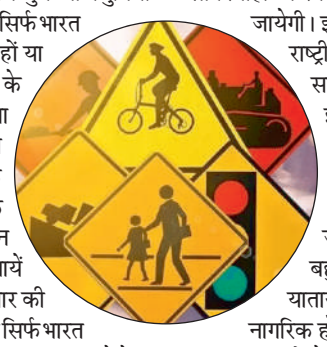

सड़क सुरक्षा को लेकर व दुर्घटनाओं की कमी लाने हेतु, कुछ कड़े फैसले भारत सरकार कर रही है इसके लिये अब और कार्य करने होंगे । यातायात व्यवस्था व सड़क सुरक्षा के लिए जनहित में स्कूली शिक्षा में पाठ्यक्रम शुरू करने की पहेल होने जा रही है। सड़क पर चलना वाहन कैसे चलाएं इस पर शिक्षा में यात्रायात व सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता लाने हेतु स्कूल में अध्ययन करने वाले बच्चों को सड़क सुरक्षा के लिए पढ़ाया जायेगा। वही केन्द्रीय सड़क परिवहन मंत्री बहुत बड़ी व अच्छी बात या कही कि सड़क दुर्घटना में घायल को जो व्यक्ति प्रायवेट व सरकारी अस्पताल पहुंचाएगा और जान बचाने में मददगार बनेगा उसे राहगीर योजना के तहत पुरस्कार भी दिया जायेगा। कोई एक्सीडेंट होता तो कोई भी अस्पताल उस घायल का ईलाज नहीं रोक सकता है। लापरवाही करने वाले अस्पताल पर कानून करवाईं की जायेगी। इतना सब कुछ हो रहा है मार्ग आपदा को राष्ट्रीय आपदा पर बहुत सुधार की जरूरत है। सड़कों पर घायल को त्वरित ईलाज मिले इसकी सार्थक पहल भारत सरकार द्वारा की जा रही है। आंकड़ों पर नजर डालें तो स्कूल व शिक्षा के अन्य केन्द्रों के आसपास युवाओं की सड़क दुर्घटनाओं में हजारों से ज्यादा युवाओं की जान गई है। ऐसे आकाडे बहुत भयभीत करते हैं। हम सभी को यातायात व्यवस्था व सड़क सुरक्षा के जिम्मेदार नागरिक होने का फर्ज अदा करना चाहिए। खून से लतपथ घायलों के प्रति हमारी करुणा हमेशा बनी रहे। हम तड़पते मरते व्यक्ति की जान बचा सकते हैं। मानवीय मूल्यों को खण्डित नहीं होने देवें। शराब वह अन्य नशा कर के वाहन चलाने वाले पर सख्त कार्रवाई भी बहुत जरूरी है। परिवहन विभाग को चाहिए कि एक सुरक्षा व्यूह बनाया जाए जिसमे परिवहन के लिए सजग प्रहरी सुरक्षित यात्राएं कर सके और दुर्घटनाओं में कमी आये। इसके लिए हम सभी को सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कारगर उपाय करना ही होंगे ।

1400 बस स्टॉप पर शेल्टर योजना अटकी...

दिल्ली में 1400 बस स्टॉप पर शेल्टर बनाने की योजना पिछले 10 सालों से अटकी हुई है। सरकार पीपीपी मॉडल के तहत काम करना चाहती है लेकिन निजी कंपनियां तैयार नहीं हैं। फंड की कमी के कारण यह प्रोजेक्ट रुका हुआ है जिससे यात्रियों को धूप और बारिश में परेशानी हो रही है। निजी कंपनियां इस व्यवस्था के तहत आने को तैयार नहीं हैं।

नई दिल्ली। चिलचिलाती धूप व गर्मी में सड़क किनारे खड़े होकर बसों का इंतजार करने वाले यात्रियों की परेशानी निकट भविष्य में दूर होने के आसार नहीं हैं। दिल्ली के 1400 बस स्टॉप पर शेल्टर बनाने व उनके रखरखाव की योजना पिछले 10 साल से ठंडे बस्ते में पड़ी है।

कहां फंसा है मामला ?

इस काम के लिए फंड की जरूरत है। सरकार चाहती है कि इस परियोजना के तहत पीपीपी (पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप) मोड में काम हो। लेकिन निजी कंपनियां इस व्यवस्था के तहत आने को तैयार नहीं हैं। यही वजह है कि पिछली आप सरकार 10 साल में भी इस योजना को आगे नहीं बढ़ा सकी।

यह काम दिल्ली परिवहन विभाग के तहत दिल्ली ट्रांसपोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड (डीटीआईडीसी) देखता है। इस संबंध में परिवहन मंत्री डॉ. पंकज सिंह से बात करने का प्रयास किया गया, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका।

आप की सरकार ने की ये गलती

परिवहन विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि इस प्रोजेक्ट पर तभी काम हो सकता है जब सरकार इसके लिए पैसा दे। उन्होंने कहा कि इस मामले को सरकार के समक्ष रखा जाएगा। अगर पिछली आप सरकार की बात करें तो पिछले 10 सालों में सरकार की ओर से कई बार इस प्रस्ताव को लौटाया गया।

उनके मुताबिक, आप सरकार चाहती थी कि पीपीपी मोड के जरिए इन बस स्टॉप पर शेल्टर बनाए जाएं, निजी कंपनियां अपना पैसा लगाकर इनका रखरखाव करें और सरकार को कुछ राजस्व भी दें। लेकिन ज्यादातर बस स्टॉप ऐसी जगहों पर हैं जो ग्रामीण या पिछड़े इलाकों में हैं।

निजी कंपनियां ऐसे स्टॉप पर शेल्टर लगाने और उनका रखरखाव करने को तैयार नहीं हैं। उनकी नजर में यह घाटे का सौदा साबित हो सकता है।

सूत्रों की मानें तो इन्हें बनाने का एक ही उपाय है कि सरकार ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में बसेरा तैयार करे। अगर ऐसा नहीं किया गया तो आने वाले समय में भी लोगों को धूप और बारिश में सड़क किनारे खड़े होकर बस का इंतजार करना पड़ेगा।

अब देखना यह है कि मौजूदा सरकार इस मामले में कितनी दिलचस्पी दिखाती है। हालांकि अभी सरकार को सत्ता में आए दो महीने ही हुए हैं और ऐसे में सरकार पर अचानक कई जिम्मेदारियां आ गई हैं, लेकिन आने वाले दिनों में यह देखना होगा कि सरकार इस ओर कितना और ध्यान देती है।

क्या है पीपीपी

पीपीपी मोड एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें सरकार और निजी क्षेत्र की कंपनियाँ मिलकर सार्वजनिक बुनियादी ढाँचे और सेवाओं का निर्माण और संचालन करती हैं। यह एक ऐसा समझौता है जिसके तहत निजी क्षेत्र सरकारी परियोजनाओं में निवेश करता है और बदले में परियोजनाओं से होने वाली आय का एक हिस्सा प्राप्त करता है।

गौरतलब है कि डीटीआईडीसी ने 178 बस स्टॉप पर शेल्टर बनाने और चलाने के लिए टेंडर जारी किए हैं। ये वो बस स्टॉप हैं, जहां पहले से शेल्टर बने हुए हैं। कुछ के टेंडर की अवधि खत्म हो गई है या कुछ टूट चुके हैं। बस स्टॉप पर शेल्टर लगाने के साथ ही कंपनियां इनका रखरखाव भी करेंगी।

कंपनियां विज्ञापन लगाकर अपना खर्चा पूरा करेंगी और सरकार को रेवेन्यू भी देंगी। डीटीआईडीसी ने इसके लिए टेंडर जारी किए हैं। ये वो बस स्टॉप हैं, जिन्हें पहले कंपनियां लगाने के बाद उनका रखरखाव कर रही थीं।

2.5 घंटे में गुरुग्राम से जयपुर, नए बांदीकुई लिंक से सफर होगा बेहद आसान

दिल्ली मुंबई एक्सप्रेस वे से गुरुग्राम से जयपुर का सफर बेहद आसान हो जाएगा। अब सिर्फ ढाई घंटे में लोग पिंक सिटी पहुंच सकेंगे। बांदीकुई-जयपुर एक्सप्रेसवे के जून तक शुरू होने से दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से कनेक्टिविटी बेहतर होगी। इससे राजधानी दिल्ली से जयपुर जाने वाले लोगों को काफी समय की बचत होगी क्योंकि वे दिल्ली-जयपुर हाईवे पर ट्रैफिक से बच जाएंगे।

गुरुग्राम। साइबर सिटी से पिंक सिटी यानी जयपुर चार घंटे की बजाय केवल दो से ढाई घंटे में पहुंचना संभव होगा। इसके लिए राजस्थान में बांदीकुई से जयपुर तक एक्सप्रेसवे का निर्माण अगले महीने के अंत तक पूरा हो जाएगा।

कितनी स्पीड पर दौड़ेंगे वाहन ?

जून से एक्सप्रेसवे को चालू करने का लक्ष्य रखा गया है। यह 67 किलोमीटर लंबा एक्सेस कंट्रोल चार लेन का एक्सप्रेसवे होगा। 125 किलोमीटर प्रति घंटे तक की गति से वाहन चल सकेंगे। इससे बांदीकुई से जयपुर केवल 30 मिनट में पहुंच जाएंगे।

वर्तमान में एक घंटे से अधिक लगता है। इस एक्सप्रेसवे के चालू होने से साइबर सिटी से जयपुर जाने के लिए दो बेहतर मार्ग हो जाएंगे। फिलहाल जयपुर जाने के लिए अधिकतर लोग दिल्ली-जयपुर हाईवे का उपयोग करते हैं।

दिल्ली-जयपुर हाईवे पर क्यों लगता है ज्यादा टाइम ?

बांदीकुई-जयपुर एक्सप्रेसवे चालू होने के बाद अधिकतर लोग खासकर दिल्ली की तरफ से आने वाले लोग दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से होते हुए जयपुर पहुंचेंगे। उन्हें इस मार्ग को अपनाने से डेढ़ से दो घंटे की बचत होगी। दिल्ली-जयपुर हाईवे पर ट्रैफिक का दबाव अधिक होने की वजह से आने-जाने में समय अधिक लगता है।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से बेहतर होगी कनेक्टिविटी

देश की आर्थिक राजधानी मुंबई एवं राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के बीच कनेक्टिविटी बेहतर करने को लेकर दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का निर्माण किया जा रहा है। 95 हजार करोड़ रुपये की लागत से बनने वाला यह आठ लेन का एक्सेस कंट्रोल ग्रीन फील्ड एक्सप्रेसवे होगा।

बांदीकुई से लेकर जयपुर तक चार लेन का एक्सप्रेसवे

1380 किलोमीटर लंबे इस एक्सप्रेसवे के गुरुग्राम से रणथंभोर तक का भाग विधिवत रूप से चालू किया जा चुका है। जयपुर दिल्ली-मुंबई

एक्सप्रेसवे पर नहीं पड़ता है। इस वजह से जयपुर जाने वाले लोग इसका उपयोग नहीं करते हैं। इसे देखते हुए दौसा मोड़ के नजदीक बांदीकुई से लेकर जयपुर तक चार लेन का एक्सप्रेसवे बनाया जा रहा है। इसके चालू होने से जयपुर दिल्ली-मुंबई एक्सपेसवे से जुड़ जाएगा।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे की तरह ही बांदीकुई-जयपुर एक्सप्रेसवे पर कहीं भी टोल प्लाजा नहीं होगा। एंट्री व एग्जिट प्वाइंट पर टोल सिस्टम लगा होगा। इससे मुख्य मार्ग पर कहीं भी वाहन नहीं रुकेगा। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के परियोजना निदेशक (दौसा) बीएस यादव का कहना है कि अगले महीने के अंत तक बांदीकुई-जयपुर एक्सप्रेसवे तैयार हो जाएगा। जून से इसे चालू कर दिया जाएगा।

जल्द चालू होगा वडोदरा तक का भाग

रणथंभोर से लेकर गुजरात में वडोदरा तक का भाग भी जल्द ही चालू होगा। राजस्थान के कोटा में टनल का निर्माण अंतिम चरण में पहुंच चुका है। इस भाग के चालू होते ही दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से गुरुग्राम से वडोदरा तक का सफर 20 से 22 घंटे के बजाय 10 से 12 घंटे में पूरा करना आसान होगा।

कोटा में टनल से पहले और टनल के आगे का निर्माण पूरा हो चुका है। वन्य जीवों को परेशानी न हो, इसके लिए कोटा में टनल के निर्माण के दौरान काफी सावधानी बरती जा रही है। कोटा में ही मुकुंदरा टाइगर रिजर्व है। टनल का निर्माण इस तरह से किया जा रहा है कि वन्य जीवों को अहसास ही नहीं होगा कि नीचे से वाहन निकल रहे हैं।

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से बेहतर होगी कनेक्टिविटी

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे का निर्माण इस साल के अंत तक पूरा करने का लक्ष्य है। इसके चालू होने से कई शहरों की कनेक्टविटी बेहतर हो जाएगी।

एक्सप्रेसवे दिल्ली एवं गुरुग्राम के अलावा अलवर, जयपुर, दौसा, किशनगढ़, अजमेर, रणथंभोर, सवाई माधोपुर, लालसोट, कोटा, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, भोपाल, उज्जैन, रतलाम, इंदौर, अहमदाबाद, वडोदरा एवं सूरत जैसे शहरों के नजदीक से होकर गुजर रहा है। इससे उम्मीद की जा रही है कि दिल्ली एवं मुंबई के साथ ही हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात का और तेजी से विकास तेजी से होगा।

एक्सप्रेसवे को आठ लेन से 12 लेन तक किया जा सकेगा

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे पर अधिकतम 120 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से वाहन चल सकते हैं। प्रोजेक्ट पूरा होने के बाद यदि वाहनों का दबाव अधिक बढ़ा तो एक्सप्रेसवे को आठ लेन से 12 लेन तक किया जा सकेगा। इसके लिए एक्सप्रेसवे पर 21 मीटर चौड़ाई की मीडियन बनाई जा रही है। इससे एक्सप्रेसवे को चौड़ा करने में दिक्कत नहीं आएगी।

भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के अधिकारियों का कहना है कि दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे दुनिया के आधुनिकतम एक्सप्रेसवे में से एक होगा। इसे विश्व स्तरीय बनाया जा रहा है। जिन इलाकों में वन्य जीव रह रहे हैं, उन इलाकों में टनल का निर्माण इस तरह किया जा रहा है कि एक प्रतिशत भी वन्य जीव परेशान नहीं होंगे।

एक नजर में दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे प्रोजेक्ट

95 हजार करोड़ रुपये की लागत से बनाया जा रहा है एक्सप्रेसवे

24 घंटे की जगह केवल 12 घंटे में पहुंच सकेंगे दिल्ली से मुंबई

32 करोड़ लीटर से अधिक ईंधन की बचत का अनुमान है हर साल

85 करोड़ किलोग्राम की कमी का अनुमान है कार्बन डाई आक्साइड में

500 मीटर के अंतराल पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम विकसित किया जा रहा

94 प्रकार की सुविधाएं विकसित की जा रहीं दिल्ली से मुंबई तक लोगों के लिए

एक्सप्रेसवे पर गांव अलीपुर के साथ ही कई जगह हेलीकाप्टर लैंड किए जा सकते हैं

दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे देश का सबसे बेहतर एक्सप्रेसवे होगा। एक साथ देश के कई शहर आपस में कनेक्ट हो जाएंगे। सबसे बड़ी बात यह है कि यह मैदानी इलाकों से गुजर रहा है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी विकास की गति तेज होगी। – ***जेएस सुहाग, पूर्व तकनीकी सलाहकार, एनएचएआई***

विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस आज

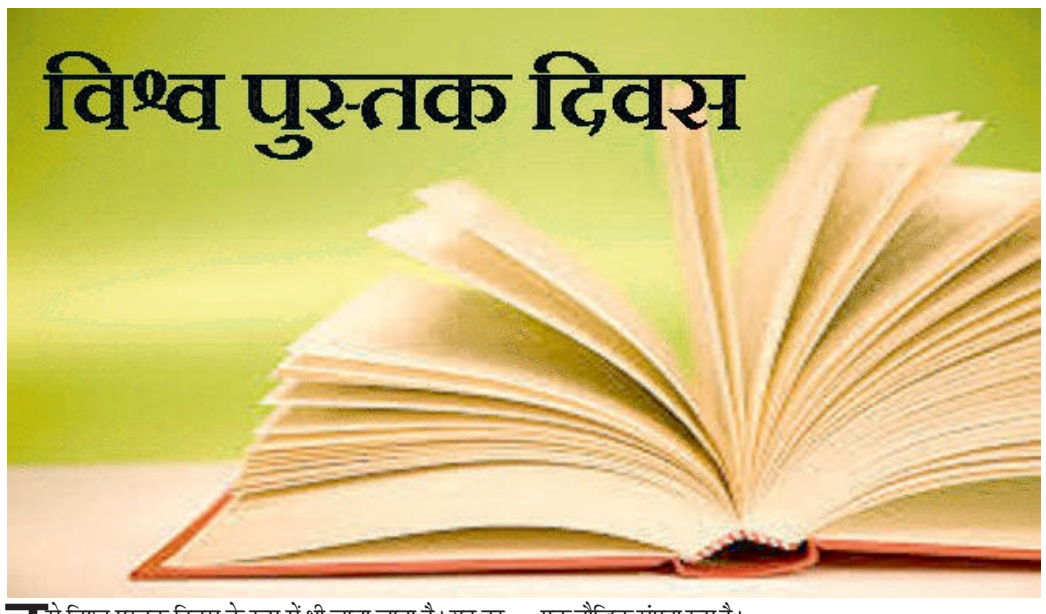

इसे विश्व पुस्तक दिवस के रूप में भी जाना जाता है। यह हर साल 23 अप्रैल को किताबें पढ़ने के महत्व को उजागर करने के लिए मनाया जाता है। यूनेस्को के अनुसार, ₹युवा पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए कहानी सुनाना एक अविश्वसनीय रूप से प्रभावी उपकरण है।₹ यह दिन विलियम शेक्सपियर, मिगुएल सर्वेंट्स और इंका गार्सिलसो डे ला वेगा सहित प्रसिद्ध लेखकों को सम्मान देने के लिए भी समर्पित है, जिनकी मृत्यु इसी दिन हुई थी। अपने समृद्ध इतिहास और सांस्कृतिक विरासत के कारण स्ट्रासबर्ग शहर को 2024 के लिए यूनेस्को की विश्व पुस्तक राजधानी के रूप में मान्यता दी गई है। यह दिन यूनेस्को और दुनिया भर के अन्य संबंधित संगठनों द्वारा लेखकों और पुस्तकों को सम्मानित करने, पढ़ने की कला को बढ़ावा देने आदि के लिए मनाया जाता है।

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवसः इतिहास यूनेस्को ने 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक दिवस के रूप में चुना है, ताकि इस दिन मरने वाले विलियम शेक्सपियर, मिगुएल सर्वेंट्स और इंका गार्सिलसो डे ला वेगा सहित महान साहित्यिक हस्तियों को श्रद्धांजलि दी जा सके। 1995 में, पेरिस में आयोजित यूनेस्को के आम सम्मेलन द्वारा दुनिया भर के लेखकों और पुस्तकों को श्रद्धांजलि देने और उनका सम्मान करने के लिए इस तिथि को अंतिम रूप दिया गया था।

कॉपीराइट क्या है? यह एक कानूनी अवधारणा है, जिसे अधिकांश सरकारों द्वारा अधिनियमित किया जाता है, जो मूल कार्य के लेखकों या रचनाकारों को आम तौर पर सीमित समय के लिए विशेष अधिकार प्रदान करता है। मूल रूप से, यह कॉपी करने का अधिकार है। यह कॉपीराइट धारक को कार्य और अन्य संबंधित अधिकारों के लिए श्रेय पाने का अधिकार भी देता है। इसलिए, यह एक बौद्धिक संपदा रूप है।

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवसः उद्देश्य इस अवसर पर दुनिया भर में पुस्तकों और लेखकों को श्रद्धांजलि दी जाती है, साथ ही लोगों को पढ़ने के आनंद को खोजने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इससे उन लोगों के प्रति सम्मान पैदा होगा जिन्होंने सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति में अपूरणीय योगदान दिया है। सहिष्णुता की सेवा में बच्चों और युवा लोगों के साहित्य के लिए यूनेस्को पुरस्कार प्रदान किया जाता है। साथ ही, यह दिन कॉपीराइट कानूनों और बौद्धिक कॉपीराइट की रक्षा के लिए अन्य उपायों के बारे में लोगों के बीच समझ को बढ़ाएगा। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह दिन दुनिया भर के लोगों, विशेषकर पुस्तक उद्योग के हितधारकों, जिनमें लेखक, प्रकाशक, शिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष, सार्वजनिक और निजी संस्थान, मानवीय गैर सरकारी संगठन और जनसंचार माध्यम शामिल हैं, के लिए एक मंच बनेगा, ताकि वे साक्षरता को बढ़ावा देने और सभी को शैक्षिक संसाधनों तक पहुंच बनाने में मदद करने के लिए एक साथ आ सकें।

विश्व पुस्तक दिवसः प्रतीक हर साल, पुस्तकों, पढ़ने, समझने आदि को बढ़ावा देने के लिए पोस्टर डिज़ाइन किए जाते हैं और दुनिया भर में प्रसारित किए जाते हैं। पोस्टर की छवियों को लोगों, विशेष रूप से बच्चों को किताबें पढ़ने और साहित्य की सराहना करने के लिए प्रोत्साहित करने के तरीके से डिज़ाइन किया गया है। वास्तव में, लोगो का उल्लेख विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस के लिए भी किया गया है। विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस 23 अप्रैल को मनाया जाने वाला एक कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य लोगों को पुस्तकों, पठन, कॉपीराइट कानूनों को समझने तथा बौद्धिक कॉपीराइट की सुरक्षा के उपायों के बारे में प्रोत्साहित करना है।

काल सर्प दोष नहीं काल सर्प योग एवं उसके प्रकार

साढ़े साती और काल सर्प योग का नाम सुनते ही लोग घबरा जाते हैं. इनके प्रति लोगों के मन में जो भय बना हुआ है बात करें काल सर्प योग की तो इसके भी कई रूप और नाम हैं. काल सर्प को दोष नहीं बल्कि योग कहना चाहिये। काल सर्प का सामान्य अर्थ यह है कि जब ग्रह स्थिति आएगी तब सर्प दंश के समान कष्ट होगा. पुराने समय राहु तथा अन्य ग्रहों की स्थिति के आधार पर काल सर्प का आंकलन किया जाता था. आज ज्योतिष शास्त्र को वैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत करने के लिए नये नये शोध हो रहे हैं. इन शोधो से कालसर्प योग की परिभाषा और इसके विभिन्न रूप एवं नाम के विषय में भी जानकारी मिलती है. वर्तमान समय में कालसर्प योग की जो परिभाषा दी गई है उसके अनुसार जन्म कुण्डली में सभी ग्रह राहु केतु के बीच में हों या केतु राहु के बीच में हों तो काल सर्प योग बनता है।

कालसर्प योग के नाम ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक भाव के लिए अलग अलग कालसर्प योग के नाम दिये गये हैं. इन काल सर्प योगों के प्रभाव में भी काफी कुछ अंतर पाया जाता है जैसे प्रथम भाव में कालसर्प योग होने पर अनन्त काल सर्प योग बनता है।

अनन्त कालसर्प योग जब प्रथम भाव में राहु और सप्तम भाव में केतु होता है तब यह योग बनता है. इस योग से प्रभावित होने पर व्यक्ति को शारीरिक और, मानसिक परेशानी उठानी पड़ती है साथ ही सरकारी व अदालती मामलों में उलझना पड़ता है. इस योग में अच्छी बात यह है कि इससे प्रभावित व्यक्ति साहसी, निडर, स्वतंत्र विचारों वाला एवं स्वाभिमानी होता है।

कुलिक काल सर्प योग द्वितीय भाव में जब राहु होता है और आठवें घर में केतु तब कुलिक नामक कालसर्प योग बनता है. इस कालसर्प योग से पीड़ित व्यक्ति को आर्थिक काष्ट भोगना होता है. इनकी पारिवारिक स्थिति भी संघर्षमय और कलह पूर्ण होती है. सामाजिक तौर पर भी इनकी स्थिति बहुत अच्छी नहीं रहती।

वासुकि कालसर्प योग जन्म कुण्डली में जब तृतीय भाव में राहु होता है और नवम भाव में केतु तब वासुकि कालसर्प योग बनता है. इस कालसर्प योग से पीड़ित होने पर व्यक्ति का जीवन संघर्षमय रहता है और नौकरी व्यवसाय में परेशानी बनी रहती है. इन्हें भाग्य का साथ नहीं मिल पाता है व परिजनों एवं मित्रों से धोखा मिलने की संभावना रहती है।

शंखपाल कालसर्प योग राहु जब कुण्डली में चतुर्थ स्थान पर हो और केतु दशम भाव में तब यह योग बनता है. इस कालसर्प से पीड़ित होने पर व्यक्ति को आंर्थिक तंगी का सामना करना होता है. इन्हें मानसिक तनाव का सामना करना होता है. इन्हें अपनी मां, ज़मीन, परिजनों के मामले में कष्ट भोगना होता है।

पद्म कालसर्प योग पंचम भाव में राहु और एकादश भाव में केतु होने पर यह कालसर्प योग बनता है. इस योग में व्यक्ति को अपयश मिलने की संभावना रहती है. व्यक्ति को यौन रोग के कारण संतान सुख मिलना कठिन होता है. उच्च शिक्षा में बाधा, धन लाभ में रूकावट व वृद्धावस्था में सन्यास की प्रवृत होने भी इस योग का प्रभाव होता है।

महापद्म कालसर्प योग जिस व्यक्ति की कुण्डली में छठे भाव में राहु और बारहवें भाव में केतु होता है वह महापद्म कालसर्प योग से प्रभावित होता है. इस योग से प्रभावित व्यक्ति मामा की ओर से कष्ट पाता है एवं निराशा के कारण व्यस्नों का शिकार हो जाता है. इन्हें काफी समय तक शारीरिक कष्ट भोगना पड़ता है. प्रेम के ममलें में ये दुर्भाग्यशाली होते हैं।

तक्षक कालसर्प योग तक्षक कालसर्प योग की स्थिति अनन्त कालसर्प योग के ठीक विपरीत होती है. इस योग में केतु लग्न में होता है और राहु सप्तम में. इस योग में वैवाहिक जीवन में अशांति रहती है. कारोबार में साझेदारी लाभप्रद नहीं होती और मानसिक परेशानी देती है।

शंखचूड़ कालसर्प योग तृतीय भाव में केतु और नवम भाव में राहु होने पर यह योग बनता है. इस योग से प्रभावित व्यक्ति जीवन में सुखों को भोग नहीं पाता है. इन्हें पिता का सुख नहीं मिलता है. इन्हें अपने कारोबार में अक्सर नुकसान उठाना पड़ता है।

घातक कालसर्प योग कुण्डली के चतुर्थ भाव में केतु और दशम भाव में राहु के होने से घातक कालसर्प योग बनता है. इस योग से गृहस्थी में कलह और अशांति बनी रहती है. नौकरी एवं रोजगार के क्षेत्र में कठिनाईयों का सामना करना होता है।

विषधर कालसर्प योग केतु जब पंचम भाव में होता है और राहु एकादश में तब यह योग बनता है. इस योग से प्रभावित व्यक्ति को अपनी संतान से कष्ट होता है. इन्हें नेत्र एवं हृदय में परेशानियों का सामना करना होता है. इनकी स्मरण शक्ति अच्छी नहीं होती. उच्चशिक्षा में रूकावट एवं सामाजिक मान प्रतिष्ठा में कमी भी इस योग के लक्षण हैं।

शेषनाग कालसर्प योग व्यक्ति की कुण्डली में जब छठे भाव में केतु आता है तथा बारहवें स्थान पर राहु तब यह योग बनता है. इस योग में व्यक्ति के कई गुप्त शत्रु होते हैं जो इनके विरूद्ध षड्यंत्र करते हैं. इन्हें अदालती मामलो में उलझना पड़ता है. मानसिक अशांति और बदनामी भी इस योग में सहनी पड़ती है. इस योग में एक अच्छी बात यह है कि मृत्यु के बाद इनकी ख्याति फैलती है. अगर आपकी कुण्डली में है तो इसके लिए अधिक परेशान होने की आवश्यक्ता नहीं है. काल सर्प योग के साथ कुण्डली में उपस्थित अन्य ग्रहों के योग का भी काफी महत्व होता है. आपकी कुण्डली में मौजूद अन्य ग्रह योग उत्तम हैं तो संभव है कि आपको इसका दुखद प्रभाव अधिक नहीं भोगना पड़े और आपके साथ सब कुछ अच्छा हो।

स्वच्छ और धवल मुखड़ा

हल्दी पाउडर को दो बूंद सरसों के तेल और कुछ बूंद निम्बू के रस में मिलाये। इसका मिश्रण तैयार करें और इसे सभी जगहों पह लगाये और 15 मिनट तक रगड़ते रहे

फिर ठन्डे पानी से स्वच्छ कर ले। ये आपके लिये स्कर्ब की तरह काम करेगा। हल्दी पाउडर और बटर के मिश्रण से आप स्क्रब भी बना सकते है, इस मिश्रण को प्रतिदिन नहाने से पहले लगायें। ऐसा करने से आपके चेहरे के डेड सेल्स मारे जायेंगे और आपकी त्वचा चमक उठेगी।

हल्दी पाउडर, निम्बू का रस और काकडी के जूस का मिश्रण तैयार करे। इसे अपने चेहरे और गर्दन पर लगाये। ये आपको आपके चेहरे के डार्क स्पॉट (काले धब्बे) हटाने में फायदेमंद होगा। झुर्रियो की समस्या के लिये हल्दी पाउडर सबसे अच्छी दवा है। हल्दी पाउडर और ताक के मिश्रण को अपने चेहरे और गर्दन पर लगाये। और सुख जाने पर इसे ठन्डे पानी से धो ले।

कब जवान कब बूढ़े

किसी को कोई अंतर नहीं पड़ता कि हम किस परिस्थिति में जी रहे हैं, हमें स्वयं ही अपनी परिस्थिति बदलनी होगी। अनैतिक होकर स्वयं को सही सिद्ध करना जितना सरल है सही होकर भी स्वयं को नैतिक सिद्ध करना उतना ही कठिन है।

मनुष्य के शरीर का सबसे सुन्दर भाग हृदय होता है अगर वही शुद्ध नहीं है तो चमकता मुख भी किसी काम का नही। हृदय की और मस्तिष्क की दरिद्रता उस दिन समाप्त हो जाएगी जब संसार धन से अधिक हृदय से धनी हो जायेगा। जैसा हम सोचते हैं वैसी ही हमारी गति, मत, स्वभाव और क्रिया कलाप होते हैं।

सबसे बड़ी वापसी है स्वयं को फिर से प्रसन्न करना। लोग कहते हैं कि त्योहार फीके हो गए सच तो ये है कि व्यवहार फीके हो गए। जब हमारे अपने जीवन से लगाव कम हो जाता है, तब हम सपने देखना बन्द कर देते है।

जब नये सच को जानने के लिए हमारी भूख और नये संसार को जीतने की इच्छा हमारे अंदर समाप्त हो जाती है, तब हम बूढ़े हो जाते है। जब हमारा मस्तिष्क नये विचारों, नये शौक, नयी उमंग और जीवन के नये सत्य की प्रेरणा को अंदर आने देते है, तब हम जवान और जीवंत रहते हैं।

खुश हैं वे लोग जो खुद का मूल्यांकन करते हैं, दुखी हैं वे लोग जो दूसरों का मूल्यांकन करते हैं

हम बदलें तो दुनिया बदले

भरवां सब्जियों को बनाते समय जरूर फॉलो करें ये टिप्स, बाहर नहीं आएगी स्टफिंग

जब भी हम भरवां सब्जियां बनाते हैं तो उनकी स्टफिंग पकाते समय बाहर आ जाती है। जिससे सब्जी भी खराब हो जाती है और इसका मसाला भी खराब हो जाता है। आज हम आपको कुछ ऐसे ट्रिक्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको फॉलो करके आप भरवां सब्जियों में से मसाले को बाहर निकलने से बचा सकती हैं।

भारतीय थाली में कई तरह की सब्जियां मिलती हैं। इन सब्जियों को बनाने का तरीका भी अलग-अलग होता है। वहीं कुछ सब्जियां ऐसी होती हैं, जिनको कई स्टाइल से बनाया जाता है। वहीं इन सब्जियों को यूनिक तरीके से बनाने पर इनका स्वाद भी बढ़ जाता है। हालांकि इस तरीके से सब्जियों को बनाने में समय भी चला जाता है ऐसे में अब आप सोच रहे होंगे कि हम किस तरह की सब्जियों की बात कर रहे हैं। दरअसल, आज हम भरवां सब्जियों के बारे में बात कर रहे हैं, जोकि अधिकतर घरों में बनाई जाती हैं। इन सब्जियों को बनाने में मेहनत और समय दोनों ही लगते हैं। लेकिन स्टफिंग वाली सब्जियों का स्वाद ही अलग होता है।

लेकिन भरवां सब्जियों को बनाने में कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जब भी हम भरवां सब्जियां बनाते हैं तो उनकी स्टफिंग पकाते समय बाहर आ जाती है। जिससे सब्जी भी खराब हो जाती है और इसका मसाला भी खराब हो जाता है, क्योंकि वह जलने लगता है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको कुछ ऐसे ट्रिक्स के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनको फॉलो करके आप भरवां सब्जियों में से मसाले को बाहर निकलने से बचा सकती हैं।

टूथपिक से करें बंद

जब भी भरवां सब्जियां बनाएं तो उसमें मसाला आदि भरने के बाद उसको टूथपिक की सहायता से बंद करें। फिर इसको तेल में डालकर पका लें। ऐसा करने से मसाला सब्जियों से बाहर नहीं आएगा।

भूनकर भरें मसाला

भरवां भिंडी, बैंगन, करेला और शिमला मिर्च में जो मसाला या आलू की स्टफिंग भर रही हैं। तो इसको पहले अच्छे से भून लेने के बाद ही सब्जी में भर लें। ऐसा करने से न सिर्फ स्वाद बढ़ेगा बल्कि मसाला अच्छे से भुन जाने के बाद उसमें नमी नहीं रहेगी। इससे सब्जियों में की गई स्टफिंग कुक करते समय बाहर नहीं आएगी।

बेसन को स्टफिंग में करें मिक्स

भरवां सब्जियों की स्टफिंग में बेसन भी भर सकती हैं। ऐसा करने से आपका मसाला अच्छे से बाइंड हो जाएगा और वह बाहर निकलकर सब्जी को खराब नहीं करेगा।

पकाने का तरीका

भरवां सब्जियों को हमेशा एकदम धीमी आंच पर पकाना चाहिए और ध्यान रखें कि वह इतने ज्यादा न पक जाएं कि यह गल जाएं। वहीं भरवां सब्जियों को पकाते समय इसे बार-बार पलटना नहीं चाहिए। ऐसा करने से भी स्टफिंग बाहर आने लगती है।

सनातन संस्कृति के अनुसार मौसम (ऋतुऐ)

षड ऋतु यानि छः मौसम होते हैं:

6 मौसम इस प्रकार हैं:

1. वसंत ऋतु

वसंत ऋतु को अंग्रेजी में स्प्रिंग सीजन भी कहा जाता है। वसंत ऋतु को मौसमों का राजा या ऋतुराज भी कहा जाता है। ये मौसम न तो ज्यादा गर्म न ही ज्यादा ठंडा होता है। दो हिन्दू मास – बैसाख और चैत्र इसी मौसम में आते हैं।

इस दौरान कई महत्वपूर्ण पर्व जैसे- वसंत पंचमी, उगाडी, गुडी पडवा, होली, राम नवमी, बीहू और हनुमान जयंती आते हैं। वसंत ऋतु का मुख्य पर्व वसंत पंचमी है। वसंत पंचमी के दिन माता सरस्वती की पूजा अर्चना की जाती है। माता सरस्वती विद्या की देवी होती है। खासकर विद्यार्थी इस दिन माता सरस्वती को पूजते हैं। वसंत ऋतु में पेड़ों पर नए पत्ते और फूल आते हैं जो एक तरह से खुशियों के आगमन का प्रतीक माना जाता है।

2. ग्रीष्म ऋतु

ग्रीष्म ऋतु को समर सीजन भी कहा जाता है। जब धीरे-धीरे मौसम में गर्माहट आने लगती है तब ग्रीष्म ऋतु आरम्भ होती है। ग्रीष्म ऋतु अप्रैल में शुरू होती है और लगभग जून के माह में ख़त्म हो जाती है। दो हिन्दू मास जयेष्ठ और आषाढ़ इसी मौसम में आते है। ग्रीष्म ऋतु वसंत ऋतु के बाद आती है। ग्रीष्म ऋतु के दौरान दिन लम्बे और रातें छोटी होती हैं। ग्रीष्म ऋतु का समापन दक्षिणायन पर होता है।

3. वर्षा ऋतु

वर्षा ऋतु को मानसून सीजन भी कहा जाता है। वर्षा ऋतु के दौरान भारत में बहुत ज्यादा वर्षा होती है। वर्षा ऋतु का आगमन जून के आखरी सप्ताह में हो ही जाता है। दो हिन्दू मास श्रवण और भाद्रपद इसी मौसम में आते हैं। इस दौरान कुछ महत्वपूर्ण पर्व जैसे- रक्षा बंधन, कृष्णा जन्माष्टमी, गणेश

चतुर्थी, ओणम आदि भी आते हैं।

4. शरद ऋतु

शरद ऋतु को ऑटम सीजन भी कहा जाता है। इस दौरान धीरे –धीरे गर्मी कम होने लगती है। दो हिन्दू मास आश्विन और कार्तिक इस मौसम में आते हैं। इस मौसम के दौरान काफी महत्वपूर्ण पर्व आते हैं जैसे- नवरात्री, विजयादशमी, शरद पूर्णिमा आदि।

5. हेमंत ऋतु

हेमंत ऋतु शिशिर ऋतु या फिर ठण्ड के मौसम से पहले आती है। दो हिन्दू मास- पौष और अगहन इस मौसम में आते हैं। इस दौरान कई महत्वपूर्ण पर्व जैसे- दिवाली, भाईदूज, आदि आते हैं।

6. शिशिर ऋतु

शिशिर ऋतु को शीत ऋतु भी कहा जाता है। ये मौसम साल का सबसे ठंडा मौसम होता है। इस दौरान दो हिन्दू मास- माघ और फाल्गुन आते हैं। इस दौरान कई महत्वपूर्ण पर्व जैसे – लोहरी, पोंगल आदि आते हैं।

षड ऋतु नामानि ☞ हेमन्त, शिशिर, बसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद।

ऋषियों ने ऋतु पर विलक्षण विचार प्रकट किए हैं। प्रमुखरूप से छः ऋतु को माना जो सर्वमान्य हुआ। आयुर्वेद पांच ऋतु को मानता है। एक ऋषि ने कहा वर्ष का प्रतिदिन एक ऋतु है जो बदलता रहता है। एक ने कहा एक ही दिन में सभी ऋतुओं का आवर्तन होता रहता है। सूक्ष्म दृष्टि से ये विचार सर्वथा सही हैं पर स्थूल रूप से ऋतुएं छः ही होती हैं।

एक वर्ष में सूर्य बारह राशियों का भोग करता है। दो राशि के सूर्य भोग कालको एक ऋतु विशेष संज्ञा होती है। 14 जनवरी को सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है। पुनः एक माह बाद 14 फरवरी को कुम्भ राशि में होता है और एक माह तक उसी में रहता है।

मकर और कुम्भ राशि में स्थित सूर्यकाल को शिशिर ऋतु कहते हैं। इसी तरह मीन और मेष राशि में सूर्य के रहने पर वसन्त ऋतु है।

वृष और मिथुन राशि में सूर्य के होने पर ग्रीष्म ऋतु होती है। कर्क और सिंह राशि में सूर्य के रहने पर वर्षा ऋतु होती है। कन्या और तुला राशि में सूर्य के होने पर शरद ऋतु होती है। वृश्चिक और धनु राशि में सूर्य के होने पर हेमंत ऋतु होती है।

इस प्रकार से दो दो माह की एक ऋतु होती है और एक वर्ष में छः ऋतुएं होती हैं। ये हैं--

शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त।

भारतवर्ष का सौभाग्य हैं षड ऋतुयें

भारतवर्ष में छः ऋतुयें आती रहती हैं ये हम सभी का सौभाग्य है। विश्व के अनेक देश केवल हेमन्त (शीत) और ग्रीष्म झेलते झेलते परेशान रहते हैं।उनके पास संसाधन हैं आज जिससे उनका जीवन आसान है वरना दो माह तो बन्द कमरे में जीना पड़ता था।

हिमालय का महत्व

भारतवर्ष में छः ऋतुयें आती जाती हैं इसमें हिमालय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है।उत्तरी ध्रुव के प्रभाव को वह अपने वक्ष पर रोक कर भारतवासियों को राहत देता है।इसीलिए महाकवि कालिदास ने नगाधिराज हिमालय को--₹देवतात्मा₹ कहा। इस देवता हिमालय ने भारत को गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों को दिया। षड ऋतुओं को आधार दिया। यदि विश्व बैंक की कृपा से विकास के नाम पर हिमालय को ढहा दिया जाए तो भारतवासी अति ठंढक और अति गर्मी सहने के लिए अभिशप्त होंगे।हिमालय के कारण जीवनदायिनी नदियां बची हैं।संस्कृति और सुरक्षा बची हुई है। चीन की चाल से भारत की सीमाएं बची हुई हैं।

ऋतुओं का लाभ

षड ऋतुओं के कारण इस देश में हजारों प्रकार की वनस्पतियां बची हुई हैं। हजारों प्रकार के जीव जंतु बचे हैं। बाहर से शैलानी पक्षी उड़ते हुए भारत की गोद में आते हैं और समय की विकरालता को काट कर पुनः अपने देश लौट जाते हैं।

(हिमालय को अपनाना होगा, षड् ऋतुओं को बचना होगा)

षड ऋतु वर्णन

बसन्ती ऋतु में कोकिल-वृन्द,
बोलते 'कुहू, कुहू' के बोल।
पाहनों के भी अन्तर्मध्य
प्रीति का मधुरस देते घोल।1

चतुर्दिक बहती मस्त बयार,
सुमन-कलिकाएँ जातीं झूम।
और भी हो जाते उन्मत्त,
भ्रमर, अधरावलियों को चूम।2

विलसने लगते सरवर-बीच
लाल, नीले सफेद जलजात।
वहाँ भी अलि-दल जाते पहुँच
मचाने को बरबस उत्पात।3

अनन्तर करती ग्रीष्म प्रवेश
दबा निज गरम-गरम पद-चाप।
प्राणि-वर्ग के अंग, प्रत्यंग,
स्वेद-धाराएँ देती छाप।4

हाँफते फिरते सिंह-सपूत,
काँपते फिरते हरियल पत्र।
पसरता मार्तण्ड का तेज
धरा पर यत्र-तत्र-सर्वत्र।5

बना देती है यदपि निदाघ,
भोर सन्ध्या को अतिशय सुखद।
शेष, हर घड़ी और हर निमिष,
दृश्य दिखलाती रहती दुखद।6

घुमड़ते पावस ऋतु में जलद,
लगाते हिरनों-जैसी दौड़।
फुहारों से होकर सन्तृप्त,
दूब हर दिशि में जाती पौड़।7

हवा करती है अठखेलियाँ,
लता, वृक्षों कुंजों के बीच।
दिया करती वह व्याकुल चित्त,
सौम्यतर संस्पर्शों से सींच।8

नारियल के, कदली के विटप
ठोकते झुककर उसे प्रणाम।
अफसरो के सम्मुख, जिस भाँति,
ठोकते हैं मानसिक गुलाम।9

मगर वह अधिकारी की तरह
नहीं टिकती थी निश्चित ठौर।
लफंगीयों-सी दिखती भगी
कभी इस छोर, कभी उस छोर।10

काष्ठाः कला मुहूर्ताश्च दिवा रात्रिस्तथा लवा
मासाः पक्षाः षड ऋतवः कल्पः संवतसरास्तथा
पृथिवी देश इत्युक्तः कालः स च न दृश्यते
अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं ध्यायते यच्च तत्तथा

महाभारत.. शान्तपर्व.१ *७.२१,२२

काष्ठा, कला, मुहुर्त, दिन, रात , लव, मास पक्ष ,छह ऋतु सम्वत्सर और कल्प. इन्हें काल कहते हैं तथा पृथ्वीको देश कहा जाता है. इनमें देश का तो दर्शन होता है , परन्तु काल दृष्टिगोचर नहीं होता अभीष्ट मनोरथ की सिद्धि के लिए जिस देश और काल को उपयोगी मानकर उसका विचार किया जाता है, उसको ठीक-ठीक ग्रहण करना चाहिये।

भगवा त्रिशूल यात्रा का हुआ महाआयोजन

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में अन्तरराष्ट्रीय मंदिर प्रबंधक परिषद द्वारा भारतीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक इतिहास में पहली बार 12 ज्योतिर्लिंग, चारधाम और 12 शक्तिपीठों की महासंगम यात्रा के उपरांत, भगवा त्रिशूल यात्रा की भव्य शोभायात्रा का महाआयोजन सम्पन्न हुआ।

इस मौके पर दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता, दिल्ली के सांसद व भोजपुरी सुपरस्टार मनोज तिवारी, दिल्ली की सांसद बांसुरी स्वराज के अलावा बहुताय की संख्या में लोग मौजूद रहे।

इस अवसर पर पटौदी से महामंडलेश्वर पूज्य धर्मदेव जी महाराज, महामण्डलेश्वर पूज्य नवल किशोर जी महाराज, अयोध्या हनुमान गढ़ी के महंत राजूदास जी महाराज ने पहुंचकर यात्रा की सराहना व आशीर्वाद प्रेषित किया।भजन संध्या प्रसिद्ध गायक कैलाश खेर द्वारा की गई।

इस दौरान अन्तरराष्ट्रीय मंदिर प्रबंधक परिषद के राष्टNीय अध्यक्ष राजेश यादव, राष्ट्रीय महामंत्री व यात्रा के संयोजक दीप सिहाग सिसाय और दामिनी वशिष्ट के अलावा संस्था के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष पंकज यादव,

भगवा ऐप की सीईओ जागृति और दिल्ली के अनेक प्रशासनिक अधिकारी व कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। उक्त जानकारी संस्था के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष पंकज यादव ने दी।

इस मौके पर राष्टNीय अध्यक्ष राजेश यादव व पंकज यादव ने जानकारी देते हुए बताया कि इस पवित्र यात्रा का उद्देश्य भगवान शिव के प्रति आस्था को जागृत करना, सनातन संस्कृति को बढ़ावा देना और जनमानस को आध्यात्मिक ऊर्जा से प्रेरित करना है। इस यात्रा का आयोजन अंतरराष्ट्रीय मंदिर प्रबंधक परिषद द्वारा किया जा रहा है। इस मौके पर कई गणमान्य लोगों ने भी विचार रखें।

उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना द्वारा 'यातायात प्रहरियों' को किया गया सम्मानित

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: दिल्ली यातायात पुलिस ने यातायात प्रहरियों को सम्मानित करने के लिए 21 अप्रैल, 2025 को दिल्ली पुलिस मुख्यालय के आदर्श सभागार में सम्मान समारोह आयोजित किया। दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया और प्रहरी मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से सितंबर 2024 और फरवरी 2025 के बीच सबसे अधिक रिवॉर्ड पॉइंट अर्जित करने वाले यातायात प्रहरी स्वयंसेवकों को ₹6 लाख के पदक और नकद पुरस्कार प्रदान किए। उन्होंने दिल्ली यातायात पुलिस के पांच अधिकारियों को उनके समर्पण और अनुकरणीय सेवा के लिए ट्रॉफी देकर सम्मानित भी किया।

इस कार्यक्रम में पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा, आईपीएस; विशेष पुलिस आयुक्त (विशेष प्रकोष्ठ) विवेक गोगिया; विशेष पुलिस आयुक्त (जोन II) अजय चौधरी और विशेष पुलिस आयुक्त (जोन I) के. जगदीशन भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर उपस्थित यातायात प्रहरियों और दर्शकों को संबोधित करते हुए उपराज्यपाल ने कहा, "मुझे दिल्ली के इन चैंपियनों को सम्मानित करते हुए गर्व हो रहा है, जिन्होंने अपनी दैनिक जिम्मेदारियों से ऊपर उठकर दिल्ली को सुरक्षित बनाने में सक्रिय भूमिका निभाई। उनके निस्वार्थ योगदान ने अनुशासन स्थापित करने और हमारी सड़कों पर सुरक्षा में सुधार करने में मदद की है।" उन्होंने प्रहरी स्वयंसेवकों को आगे भी उदाहरण पेश करते रहने की सलाह दी और दिल्ली यातायात पुलिस को ऐप की रिपोर्टिंग क्षमताओं का विस्तार करने के लिए प्रोत्साहित किया, ताकि अधिक से अधिक यातायात उल्लंघनों को कवर किया जा सके, जो खतरनाक प्रकृति के हैं।

यातायात प्रहरी योजना, जिसका उद्देश्य यातायात प्रवर्तन में नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देना है, मूल रूप से 2015 में यातायात प्रहरी योजना के रूप में शुरू की गई थी और 1 सितंबर, 2024 को इसका नवीनीकरण किया गया। नागरिक Google Play Store और Apple Store दोनों पर उपलब्ध प्रहरी मोबाइल एप्लिकेशन डाउनलोड कर सकते हैं और ट्रैफ़िक उल्लंघन की रिपोर्ट करके ट्रैफ़िक पुलिस की मदद कर सकते हैं। योजना को आकर्षक बनाने के लिए, माननीय एलजी ने एक मासिक पुरस्कार प्रणाली को मंजूरी दी और घोषणा की, जिसके तहत शीर्ष चार योगदानकर्ताओं को क्रमशः ₹50,000, ₹25,000, ₹15,000 और ₹10,000 मिलते हैं।

श्री संजय अरोड़ा, सीपी दिल्ली ने स्वयंसेवकों के सक्रिय प्रयासों की सराहना की और अधिक नागरिकों को राजधानी में सड़क सुरक्षा और अनुशासन सुनिश्चित करने में भागीदारी की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया। वास्तविक परिवर्तन तब होता है जब नागरिक शहर में सक्रिय भूमिका और जिम्मेदारी लेते हैं। यह यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों को भी संदेश देता है। अपने स्वागत भाषण में, विशेष पुलिस आयुक्त/यातायात श्री अजय चौधरी ने कहा कि यातायात प्रहरी ऐप को 2 लाख से अधिक उपयोगकर्ताओं द्वारा डाउनलोड किया गया है और इसने 6 लाख से अधिक यातायात उल्लंघनों की रिपोर्टिंग की सुविधा प्रदान की है। उन्होंने कहा कि ये आंकड़े न केवल सफलता को दर्शाते हैं बल्कि इस तथ्य की ओर भी इशारा करते हैं कि नागरिक जागरूक हैं और शहर की सड़कों को सुरक्षित बनाने में दिल्ली पुलिस के साथ सक्रिय रूप से भागीदारी कर रहे हैं, जिससे सड़कों पर अनगिनत लोगों की जान बचाने में मदद मिली है। इस कार्यक्रम में राहुल खन्ना समूह द्वारा एक नुक्कड़ नाटक भी दिखाया गया जिसमें आम उल्लंघनों और डिजिटल चालान प्रक्रिया पर प्रकाश डाला गया। हेलमेट के उपयोग और नशे में गाड़ी चलाने के खतरों पर जागरूकता फिल्में दिखाई गईं।

वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल ने वृक्षारोपण अभियान के साथ विश्व पृथ्वी दिवस मनाया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। - सफदरजंग अस्पताल ने विश्व पृथ्वी दिवस को एक प्रभावशाली वृक्षारोपण अभियान के साथ मनाया, जो विश्वव्यापी 2025 पृथ्वी दिवस थीम ₹हमारी शक्ति, हमारा ग्रह₹ में शामिल हुआ। इस कार्यक्रम में बड़े गमलों में विभिन्न झाड़ियों का दान किया गया और पूरे अस्पताल परिसर में वृक्षारोपण किया गया, जिसका नेतृत्व देवया - ए सोसाइटी फॉर वेलफेयर ऑफ वीमेन एंड चिल्ड्रन की संस्थापक डॉ. मनीषा जोशी ने किया। कार्यक्रम में डॉ. आर पी अरोड़ा अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक, डॉ. रेखा एडिशनल एमएस और श्री अशोक पाल डीडीए मौजूद थे।

इस पहल ने अस्पताल के कर्मचारियों, रोगियों और समुदाय के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी के साथ पर्यावरणीय स्थिरता और सामुदायिक कल्याण के लिए अस्पताल की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया।

सफदरजंग अस्पताल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. संदीप बंसल ने इस पहल की सराहना करते हुए कहाः ₹पर्यावरण स्वास्थ्य और मानव स्वास्थ्य आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं। यह पौधारोपण अभियान न केवल हमारे रोगियों, बल्कि हमारे ग्रह को भी स्वस्थ बनाने के लिए हमारे संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। आज लगाए गए पेड़ आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारे अस्पताल परिसर को छाया, स्वच्छ हवा और सुंदरता प्रदान करेंगे।₹

अतिरिक्त चिकित्सा अधीक्षक डॉ. आर.पी. अरोड़ा ने स्वास्थ्य सेवा सेटिंग्स में इस तरह की पहल के महत्व पर प्रकाश डालाः ₹स्वास्थ्य सेवा सुविधाओं की जिम्मेदारी है कि वे पर्यावरण संरक्षण में उदाहरण पेश करें। ये पौधे हमारे अस्पताल के आसपास की हवा की गुणवत्ता में सुधार करेंगे, जिससे हमारे रोगियों और कर्मचारियों के लिए अधिक स्वास्थ्यप्रद वातावरण बनेगा। हम अपने अस्पताल समुदाय में इस बहुमूल्य योगदान के लिए डॉ. जोशी और देवया के आभारी हैं।"

देवया की संस्थापक डॉ. मनीषा जोशी ने वैश्विक पृथ्वी दिवस थीम में भाग लेते हुए पर्यावरण कार्रवाई के महत्व पर जोर दियाः ₹देवया में, हम मानते हैं कि हमारे पर्यावरण की देखभाल हमारे समुदायों में महिलाओं और बच्चों की देखभाल से आंतरिक रूप से जुड़ी हुई है। इस वृक्षारोपण अभियान के माध्यम से, हमने सिर्फ पेड़ नहीं लगाए; हमने भावी पीढ़ियों के लिए आशा और स्वास्थ्य का पौधा लगाया। इस वर्ष की वैश्विक पृथ्वी दिवस थीम 'हमारी शक्ति, हमारा ग्रह' हमें याद दिलाती है कि हम सभी में अपने ग्रह के लिए सकारात्मक बदलाव करने की शक्ति है।"

लगाए गए झाड़ियाँ और पेड़ स्वदेशी प्रजातियाँ थीं जो अपने वायु-शोधक गुणों और स्थानीय जलवायु में पनपने की क्षमता के लिए जानी जाती हैं।

सफदरजंग अस्पताल और देवया ने इन पौधों को बनाए रखने और पूरे वर्ष हरित पहलों का विस्तार करने के लिए प्रतिबद्धता जताई, जिससे वैश्विक ₹हमारी शक्ति, हमारा ग्रह₹ पृथ्वी दिवस आंदोलन की भावना को मान्यता के एक दिन से आगे बढ़ाया जा सके।

पृथ्वी का हमारे जीवन में महत्व विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

मुख्य संवाददाता

दिल्ली: योगेन्द्र कुमार सह अधीक्षक" तिहाड़ जेल" तथा मानद पशु कल्याण प्रतिनिधिर भारतीय पशु कल्याण बोर्ड" ने विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर गवर्मेंट बालिका सीनियर सेकेंडरी विद्यालय रघुबीर नगर नई दिल्ली में विद्यार्थियों को पृथ्वी को सुरक्षित कैसे करे इस विषय पर जागरूक किया , कार्यक्रम में बच्चों सेर₹ पृथ्वी का हमारे जीवन में महत्व" विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें बच्चों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया तथा बच्चों को प्रोसहित करने के लिए उनको पुरुस्कृत भी किया गया तथा बच्चों ने संस्कृति कार्यक्रम में भी भाग लिया बच्चों को संबोधित करते हुए योगेंद्र कुमार ने कहा की आज पृथ्वी को सुरक्षित करना हमारी जिम्मेदारी है इसके तहत अधिक से अधिक पौध पोषण करना तथा प्रदूषण मुक्त एवं जल को भी सुरक्षित करना पड़ेगा , प्रधानाचार्य मालती ने भी बच्चों से अपील किया कि प्रदूषण के तहत वायु , जल , ध्वनि प्रदूषण से पृथ्वी को सुरक्षित करना होगा

इस अवसर में बी के पांडे , इंदर जीत सोनी मानद पशु कल्याण प्रतिनिधि तथा अनिल चौधरी , जय नाथ, देविंद्र माखीजा ,सोनू , राम निवास यादव , एनिमल केअर टेकर तथा जोगेंद्र शर्मा ने भी बच्चो से पृथ्वी को सुरक्षित करने की अपील की ।

पॉली क्लीनिक में सभी टेस्ट , दवाइयां और डॉक्टरों से परामर्श मरीजों को मुफ्त दिया जाएगा- महेश कुमार

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली नगर निगम के मेयर महेश कुमार खिंची ने मंगलवार को मेहरौली विधानसभा के वार्ड 155 में डॉ. बी. आर. अंबेडकर नाम से पॉली क्लीनिक का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि पॉली क्लीनिक में सभी टेस्ट, दवाइयां और डॉक्टरों से परामर्श मरीजों को मुफ्त दिया जाएगा। इस पॉली क्लीनिक में खांसी, जुकाम, बुखार, शुगर समेत अन्य बीमारियों का इलाज मिलने से स्थानीय लोगों को बड़ी राहत मिलेगी। इस अवसर पर दक्षिणी जोन वार्ड कमेटी के अध्यक्ष कृष्ण जाखड़, स्थानीय निगम पार्षद रेखा महेंद्र चौधरी समेत अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

मेयर महेश कुमार ने कहा कि आज बहुत ही खुशी का दिन है कि यहां पॉलीक्लीनिक का उद्घाटन किया गया है। पॉली क्लीनिक का नाम बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर के नाम पर रखा गया है। यह बहुत खुशी की बात है। पार्षद रेखा महेंद्र चौधरी बाबा साहब डॉ. अंबेडकर की विचारधारा को आगे बढ़ाने का लगातार प्रयास कर रही हैं।

मेयर महेश कुमार ने बताया कि इस पॉलीक्लीनिक में विभिन्न प्रकार के टेस्ट मुफ्त किए जाएंगे। छोटी बीमारियों का यहां इलाज किया जाएगा। मरीजों को सारी दवाइयां मुफ्त दी जाएंगी। एक तरह से यहां सारा इलाज मुफ्त किया जाएगा। इस पॉलीक्लनिक को खुलने से क्षेत्र के लोग बहुत ही खुश हैं।

मेयर महेश कुमार ने कहा कि पहले इस क्लीनिक का कोई नाम नहीं था। पहले एमसीडी हेल्थ सेंटर के नाम क्लीनिक चल रहा था। लेकिन अब यह बाबा साहब डॉ. भीम राव अंबेडकर के नाम से जाना जाएगा। आज के समय में किसी भी प्राइवेट डॉक्टर के पास जाते हैं तो कम से कम 500 से 700 रुपए खर्च करने पड़ते हैं। जबकि इस पॉलीक्लीनिक में खांसी, जुकाम, बुखार, शुगर समेत छोटी बीमारियों का

इलाज मुफ्त होने से लोगों को बड़ी राहत मिलेगी।

भाजपा को जब जनता नकार देती है तो वह खरीद-फरोख्त करके अपनी सरकार बनाती है- महेश कुमार

एमसीडी मेयर चुनाव को लेकर महेश कुमार ने कहा कि पूरे देश में भाजपा खरीद-फरोख्त से ही अपनी सरकार बनाती आई है। जब जनता भाजपा को नकार देती है तो भाजपा विपक्षी दलों के विधायकों, पार्षदों की खरीद-फरोख्त करते हैं, झूठे आरोप लगाते हैं, पैसे का लालच और डराते-धमकाते हैं। भाजपा इस तरह से गंदी राजनीति करके अपनी सरकार बनाने का प्रयास करती है। भाजपा ने आम आदमी पार्टी के करीब 20 पार्षदों को डरा-धमका कर ही तोड़ा है और अब एमसीडी में अपनी सरकार बनाने में कामयाब हो रही है।

महेश कुमार ने कहा कि आम आदमी पार्टी हमेशा सच्चाई के रास्ते पर चली है और आगे भी सच्चाई के रास्ते पर ही चलेगी। आम आदमी पार्टी खरीद-फरोख्त की राजनीति में विश्वास नहीं करती है। अगर हम लोग भी खरीद-फरोख्त करने लगेंगे तो भाजपा और आम आदमी पार्टी में क्या अंतर रह जाएगा। कांग्रेस चुनाव लड़ रही है, यह उसकी मर्जी है।

भाजपा सरकार से अनुरोध, निराश्रित महिलाओं की पेंशन जल्द जारी करे और जरूरतमंद महिलाओं की पेंशन न काटे- सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली, दिल्ली में भाजपा की सरकार बनने के बाद से विधवा व तलाकशुदा समेत अन्य निराश्रित महिलाओं की पेंशन रोक दी गई है। दो महीने से निराश्रित महिलाएं अपनी पेंशन मिलने का इंतजार कर रही हैं और इसके लिए वह लगातार दफ्तरों के चक्कर काटने को मजबूर हैं। आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज ने यह जानकारी देते हुए कहा कि पेंशन रूकने से निराश्रित महिलाओं को घर चलाना मुश्किल हो रहा है। हमें यह भी जनाकरी मिली है कि सरकार काफी निराश्रित महिलाओं की पेंशन काटने जा रही है। हमारी मांग है कि सरकार निराश्रित महिलाओं की पेंशन जल्द जारी करे और जरूरतमंद महिलाओं की पेंशन न काटे।

आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज ने मंगलवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेसवार्ता कर कहा कि दिल्ली के अंदर दो महीने से भाजपा की सरकार है। निराश्रित महिलाएं समाज का सबसे असुरक्षित वर्ग होती हैं। जिसमें विधवा, तलाकशुदा या बेसहारा महिलाएं होती हैं। उनको सरकार द्वारा पेंशन दी जाती है। दिल्ली में निराश्रित महिलाओं को दो महीने से पेंशन नहीं मिली है। निराश्रित महिलाएं दफ्तरों के चक्कर लगा रही हैं, उनकी पेंशन नहीं आ रही है।

उन्होंने कहा कि दिल्ली की भाजपा सरकार कई हजार विधवा महिलाओं की पेंशन काटने वाली है। हमें जानकारी मिली है कि बहुत सारी निराश्रित महिलाओं को कई वर्षों से पेंशन मिल रही थी, उसको भाजपा की सरकार काट रही है। आम आदमी पार्टी का दिल्ली सरकार से निवेदन है कि यह बहुत ही संवेदनशील मामला होता है। किसी विधवा की पेंशन काट दी जाएगी तो उसके लिए घर चलाना, अपना जीवन यापन करना बहुत मुश्किल हो जाएगा। इसलिए निराश्रित महिलाओं की पेंशन काटने का फैसला लेने से पहले सरकार यह जरूर सोचे कि किसी जरूरत मंद महिला की सरकार पेंशन न काटे। दिल्ली सरकार जल्द से जल्द निराश्रित महिलाओं की पेंशन को जारी करे। क्योंकि पेंशन रूकने से महिलाओं और उनके परिवार को काफी दिक्कतें हो रही हैं।

दिल्ली भाजपा द्वारा तीन स्थानों पर डॉ भीमराव अम्बेडकर सम्मान अभियान संगोष्ठीयों का आयोजन हुआ

मुख्य संवाददाता /सुषमा रानी

नई दिल्ली: दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा के नेतृत्व में दिल्ली में भारत रत्न बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के सम्मान में लगातार कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर के सम्मान में 22, 23, 24 और 25 अप्रैल को लगातार कार्यक्रम का आयोजन किया जायेगा जिसमें आज प्रदेश के तीन स्थानों पर संविधान निर्माता डॉ भीमराव अम्बेडकर सम्मान अभियान संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिनको दिल्ली भाजपा के नेताओं ने सम्बोधित किया।

कार्यक्रम के संयोजक एवं दिल्ली भाजपा महामंत्री सांसद योगेन्द्र चंदोलिया ने बताया कि आज विभिन्न तीन स्थानों पर हुए कार्यक्रम में केन्द्रीय राज्य मंत्री हर्ष मल्होत्रा ने गौरी शंकर मंदिर सीमापुरी में, राष्ट्रीय सह कोषाध्यक्ष सांसद नरेश बंसल एवं सांसद प्रवीण खंडेलवाल ने आदर्श नगर विधानसभा आजादपुर में और पूर्व सांसद रंजीता कोहली एवं विधायक गजेन्द्र यादव एवं रविकांत ने भाग लिया।

योगेन्द्र चंदोलिया ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने बाबा भीमराव अम्बेडकर के सम्मान में कई काम किये हैं खासकर ओबीसी, अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लिए कई सारे काम किए हैं।

उन्होंने बताया कि सिर्फ दिल्ली में ही केन्द्र सरकार द्वारा कई काम किए गए हैं जिसमें अलीपुर रोड स्थित अम्बेडकर राष्ट्रीय स्मारक का और जनपथ पर डा. अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर का निर्माण प्रमुख है। भाजपा ने डॉ भीमराव अम्बेडकर को सही मायनों में सम्मान देने का काम किया है।

संत शिरोमणि भक्त धन्ना जाट की 610वी जयंती के उपलक्ष्य में हुआ सांग, पूरी और मीठी खीर का भंडारा व किया गया त्रिवेणी पीपल, बरगद, नीम का रोपण

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर : जिलामुख्यालय के अंतिम छोर पर बसे वीरों की देवभूमि कहे जाने वाले गांव धारौली की सामाजिक संस्था मां-मातृभूमि सेवा समिति द्वारा संत शिरोमणि भक्त धन्ना जाट जी की 610वी जयंती के अवसर पर वृक्षों की त्रिवेणी (पीपल, बरगद, नीम) का रोपण किया गया ।

महंत शिवपुरी जी महाराज, 19वे मठाधीश, बाबा मुक्तेश्वरपुरी मठ, कोसली ने अपने हाथों से वीरों की देवभूमि धारौली के बाबा जोहड़ी वाले के परिसर में वृक्षों की त्रिवेणी (पीपल, बरगद, नीम) लगाई। महंत शिवपुरी जी महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि बरगद व पीपल दोनों पेड़ों में एक विशेष गुण है जो उन्हें दिन के सभी 24 घंटों में ऑक्सीजन छोड़ने की क्षमता देता है। नीम को उसके औषधीय गुणों के लिए भी जाना जाता है।

बाद में धन्ना जाट जी की जयंती के उपलक्ष्य में शहीद फ्लाइट लेफ्टिनेंट आकाश यादव राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल कोसली के सामने, नजदीक लेवी डिस्पोजल, कोसली में बाबा शिवपुरी जी महाराज, 19वे मठाधीश, बाबा मुक्तेश्वरपुरी मठ, कोसली ने अपने हाथों से अन्न जल अर्पण समर्पण कार्यक्रम - सांग, पूरी और मीठी खीर का भंडारा का शुभारंभ किया । बाबा शिवपुरी जी महाराज ने अपने संबोधन में कहा कि कहते है कि भक्त श्री धन्ना जाट जिनकी सच्ची और निश्चल भक्ति से भगवान श्री कृष्ण जी खुद उनके सामने प्रकट हो गये थे।

21बार रक्तदान कर चुके युद्धवीर सिंह लांबा, अध्यक्ष, मां-मातृभूमि सेवा समिति, वीरों की देवभूमि धारौली बताया कि निम्न 1. संजय कुमार, प्रो, बालाजी टेंट हाउस एंड लाइट डेकोरेशन, तुम्बाहेडी 2. धारौली के एक युवा द्वारा गुप्त 3. हरियाणा सरकार में जूनियर इंजीनियर अजय मलिक, खानपुर कलां, सोनीपत 4. राकेश लांबा धारौली निवासी, सीनियर एडवोकेट, सिविल कोर्ट, कोसली 5. मास्टर हरबीर मल्हान गिरधरपुर निवासी 6. फौजी इंजीनियर जगदीश ग्रेवाल सासरौली निवासी 7. बैंक में कार्यरत इंजीनियर अजय जाँगडा भिवानी 8. इंजीनियर संजीव घनधश भिवानी इनकम टैक्स डिपार्टमेंट में कार्यरत 9. कुलवेन्द्र सिंह यादव, गांव मुमताजपुर, रेवाड़ी 10. जहाजगढ़, जिला झज्जर के प्रमोद जांगडा 11. लेवी डिस्पोजल, कोसली प्रो, मास्टर रोहित यादव कोसली 12. समाजसेवी सागर यादव, रेलवे स्टेशन कोसली 13. सैनी आनंदपुरा, रोहतक के राकेश सैनी 14. नितेश भोरिया प्रो, अर्बन युवा क्लब कपड़ो की दुकान, कोसली 15. कोसली स्टेशन में नाहड रोड पर 'सोनू मोटर वाइंडिंग सेंटर' प्रो. सोनू धारौली 16. इंजीनियर अमित दाँगी, मदीना गाँव, रोहतक 17.इंजीनियर परमवीर यादव, हरियाणा में राजकीय आईटीआई में कार्यरत फैकल्टी 18. कोसली में मेडिकल और इंजीनियरिंग के दाखिले की तेयारी कराने वाले प्रसिद्ध कोचिंग सेंटर, मेडि -जेई कॅरिअर इंस्टिटुट, डायरेक्टर धर्मेंद्र यादव 19. झाडोदा जिला रेवाड़ी के दीपक सोलंकी प्रो. सोलंकी सेल्स एंड परचेज 20. सोमबीर लांबा धारौली हौंडा कम्पनी में कार्यरत 21. सतपाल पुनिया, गिरावड गांव, झज्जर 22. तुम्बाहेड़ी गांव, झज्जर के जोगिंदर सिंह 23. इंजीनियर नवदीप जांगडा मदीना रोहतक निवासी आदि दानियों ने अपनी ईमानदारी व कड़ी मेहनत से कमाया नेक धन से इस कार्य के आयोजन मे सहयोग दे कर पुण्य कमाया ।

कानपुर में ट्रेन से कट मरा बेटियों द्वारा बेज्जती से आहत पिता, घर में कोहराम

सुनील बाजपेई

कानपुर। जिन बेटियों को पालपोस कर बड़ा किया। जीवन भर की जमा पूंजी खर्च करके उनके लिए जीवन साथी का बंदोबस्त किया। उन्हीं बेटियों द्वारा दिए गए जवाब ने एक व्यक्ति को आत्महत्या करने के लिए मजबूर कर दिया। यह घटना काका देव थाना क्षेत्र में हुई। जानकारी के मुताबिक पांडुनगर नहर पटरी किनारे बस्ती निवासी राजकुमार सोनकर (50) प्राइवेट नौकरी करते थे। घर में पत्नी ममता, दो बेटियां डॉली और मुस्कान हैं। पत्नी ममता ने मौके पर पहुंची पुलिस को बताया कि रात को पति की बेटियों से कहासुनी हो गई थी। जिस पर डाली और मुस्कान ने उनका काफी भला बुरा कहा था, जबकि पिता राजकुमार को यकीन था कि उसकी दोनों बेटियां उसे कोई जवाब नहीं देंगी। बेटियों द्वारा इस तरह से बेइज्जत किए जाने से आहत होकर ही राजकुमार आत्महत्या करने की धमकी देकर घर से निकल गए थे, लेकिन जब देर रात नहीं नहीं लौटे। उनका सभी जगह तलाश के बाद भी उनका कुछ पता नहीं चला। सुबह गुमशुदगी दर्ज कराने काकादेव थाने पहुंचे, जहां थाने में फोटो, पर्स और दस्तावेजों से पहचान की। घटना के बाद परिवार में कोहराम भी मचा हुआ है। पुलिस के अनुसार घटना की वजह पारिवारिक कलह ही है ,जिसकी जांच की जा रही है।

डेढ़ लाख लोगों को सीवर समस्या से मिलेगी राहत, जीडीए ने कराया ये काम

गाजियाबाद के इंद्रप्रस्थ योजना में सीवर समस्या के समाधान के लिए तीसरे चरण का काम जल्द शुरू होगा। गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) द्वारा पहले चरण में पंपिंग स्टेशन का निर्माण किया गया है। योजना के अंतर्गत सीवर लाइन बिछाने से भारत सिटी ग्रुप हाउसिंग सहित लगभग डेढ़ लाख निवासियों को सीवर की समस्या से निजात मिलेगी। जीडीए उपाध्यक्ष अतुल वत्स इस योजना की निगरानी कर रहे हैं।

गाजियाबाद। इंद्रप्रस्थ योजना में सीवर समस्या से निजात दिलाने के लिए शेष दो चरणों का काम जल्द पूरा हो जाएगा। पहले चरण में गाजियाबाद विकास प्राधिकरण ने डीपीएस स्कूल के पास सीवेज पंपिंग स्टेशन (एसपीएस) का निर्माण पूरा कर लिया है।

दूसरे चरण में पाइपलाइन बिछाने का काम भी चल रहा है। योजना के तहत सीवर लाइन बिछने से भारत सिटी ग्रुप हाउसिंग समेत डेढ़ लाख लोगों को सीवर समस्या से निजात मिलेगी।

सीवर निस्तारण का कार्य में तेजी

मुख्य अभियंता मानवेंद्र सिंह ने बताया कि गाजियाबाद विकास प्राधिकरण की इंद्रप्रस्थ योजना में सीवर निस्तारण का कार्य तेजी से किया जा रहा है। जीडीए उपाध्यक्ष अतुल वत्स पूरी योजना की लगातार मॉनिटरिंग कर रहे हैं। योजना में सीवर समस्या के स्थाई समाधान के लिए जीडीए तीन चरणों में सीवर निस्तारण का कार्य करा रहा है। पहले चरण में पंपिंग स्टेशन बनने के बाद अब दूसरे चरण में मवी चौक से जल निगम द्वारा विकसित सीवर मैनहोल नंबर 78 तक करीब 1800 मीटर लंबी सीवर लाइन बिछाई जाएगी।

एक किलोमीटर लाइन बिछाई

साढ़े तीन करोड़ रुपये की लागत से हो रहे इस कार्य में अब तक एक किलोमीटर लाइन बिछाई जा चुकी है। उन्होंने बताया कि तीसरे और महत्वपूर्ण चरण की टेंडर प्रक्रिया जल्द पूरी कर काम शुरू करा दिया जाएगा। इसमें इंद्रप्रस्थ योजना के साथ ही भारत सिटी ग्रुप हाउसिंग के सभी बचे हुए पॉकेट (बी, डी, ई, एच, एफ) को भी सीवर लाइन से जोड़ा जाएगा।

संवेदनशीलता से प्रकृति के पुनर्जीवन की राह

विजय गर्ग

पिछले पांच दशकों में वैश्विक आर्थिक प्रगति पांच गुना बढ़ी है, किंतु यहां तक पहुंचने के लिए 70 प्रतिशत से अधिक पृथ्वी के प्राकृतिक संसाधनों का उनकी क्षमता से अधिक दोहन किया गया । इसका परिणाम यह कि पृथ्वी का अस्तित्व ही संकट में आ गया है।

बार-बार चेताने की आवश्यकता होती है कि इस ब्रह्मांड में अनेक गैलेक्सियां हैं, और हमारी गैलेक्सी में भी अरबों ग्रह हैं, किंतु उनमें केवल पृथ्वी ही ऐसी है, जहां जीवन संभव है। सौरमंडल में पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है, जहां सतह पर जल उपलब्ध है और जो जीवन के अस्तित्व में सहायक है। निकट भविष्य में पृथ्वी के अलावा हमारी कोई और शरणस्थली नहीं बनने वाली।

संभवतः इसी कारण साल 2022 के विश्व पर्यावरण दिवस के लिए, 5 जून 1974 के पहले पर्यावरण दिवस की थीम 'ओनली वन अर्थ -केवल एक ही पृथ्वी' को दोहराना जरूरी लगा। जहां 1974 में शायद ही यह कहा गया हो कि प्रकृति आपात स्थिति में है, वहीं 2022 तक ये चेतावनियां सर्वत्र सुनाई देने लगीं। मानवीय जरूरतों और लालच ने पृथ्वी को तीन मुख्य संकटों में जकड़ लिया है- जलवायु संकट, प्रकृति और जैव विविधता की हानि तथा प्रदूषण और अपशिष्ट का बढ़ता ढेर।

पिछले सौ वर्षों में आधे वेटलैंड और समुद्रों में आधे से अधिक मूंगे की चट्टानें नष्ट हो चुकी हैं। सागरों में इतना प्लास्टिक पहुंच रहा है कि 2050 तक वहां मछलियों से अधिक प्लास्टिक हो सकता है। पृथ्वी के प्रति संवेदना जगाने और इस बिगड़ते संतुलन को सुधारने के लिए ही 2021 के अर्थ डे की थीम थी- 'अपनी पृथ्वी को फिर से ठीक करें'। अप्रैल 2022 की थीम 'अपने ग्रह में निवेश करें', अर्थ डे 2020 की 'जलवायु पर सक्रियता' और

2019 की थीम थी 'अपनी प्रजातियों की रक्षा करें'।

साल 2021-2030 की अवधि को संयुक्त राष्ट्र ने 'डिकेड ऑफ इकोसिस्टम रिस्टोरेशन' यानी पारिस्थितिकी तंत्र पुनर्स्थापन दशक घोषित किया है। इसमें ताजे पानी, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र और भूमि आधारित इकोसिस्टम को फिर से पहले जैसी स्थिति में लाने के प्रयास जारी हैं। इसमें भूमि उपयोग परिवर्तन की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन सभी प्रयासों का निष्कर्ष था कि 5 जून, 2022 को एक बार फिर 'केवल एक पृथ्वी' के थीम पर लौटा जाए।

पृथ्वी और मानवता के लिए संकट का मुख्य कारण है- सतत उपभोग और सतत उत्पादन प्रणाली न होना। जनसंख्या वृद्धि के साथ यह समस्या बढ़ रही है। दूसरी ओर, जैव विविधता तेजी से घट रही है। अब तक 65 फीसदी वन्य जीव समाप्त हो चुके हैं। इसी कारण 2022 के विश्व पर्यावरण दिवस पर यह भी आह्वान किया गया था कि हम सतत और पर्यावरण-अनुकूल जीवनशैली अपनाएं और पृथ्वी के साथ समरसता में जिएं। इस समरसता का भाव जगाने के लिए आवश्यक है कि हम स्वयं को पृथ्वी के स्थान पर रखें और सोचें कि जो कुछ पृथ्वी और प्रकृति के साथ हो रहा है, यदि वही हमारे साथ हो रहा होता, तो हमें कैसा लगता?

संवेदनशील न्यायालय और न्यायिक संस्थाएं अब प्रकृति या उसके किसी हिस्से को वैधानिक रूप से जीवित मानव घोषित कर रही हैं और उनके अधिकारों की रक्षा के आदेश भी दे रही हैं। हालांकि सरकारें ऐसे आदेशों को समय के साथ निरस्त कराने में सफल हो जाती हैं। कई बार, पर्यावरण और पृथ्वी के हित में उठी आवाज़ों को विकास विरोधी कहकर कमजोर करने का प्रयास करती हैं। यह भी निर्विवाद है कि पृथ्वी की हानि कम करने के प्रयास भी हो रहे हैं। मसलन, यूरोप में बांध हटाए जा रहे हैं। साल 2021 में यूरोप के 17 देशों में 239 बांध हटाए गए।

22 मई, 2021 को अंतर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने कहा था-'हमने प्रकृति के विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है, जबकि हमें तो उसका रक्षक होना चाहिए था।' प्रकृति हमें जीवन, अवसर, सेवाएं और समाधान देती है, किंतु हमने उसकी जैव विविधता को नष्ट किया और जलवायु संतुलन में बाधाएं डालीं। स्वस्थ पृथ्वी, संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अत्यावश्यक है। अन्यथा, स्थिति यह है कि 90 प्रतिशत जनसंख्या प्रदूषित हवा में सांस लेने को मजबूर है।

मानव के पृथ्वी पर पड़ते प्रभावों को लेकर चिंता पिछले पचास वर्षों से व्यक्त की जा रही है। वर्ष 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित संयुक्त राष्ट्र का पहला पर्यावरण सम्मेलन 'प्राकृतिक पर्यावरण' पर नहीं, बल्कि 'मानव पर्यावरण' पर केंद्रित था। इसी सम्मेलन में तय किया गया कि हर वर्ष 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाएगा। दो वर्षों बाद 'केवल एक पृथ्वी है' के नारे के साथ पहला पर्यावरण दिवस मनाया गया था।

आज जरूरत है कि सरकारें, समाज और प्रत्येक व्यक्ति आत्ममंथन करें कि पृथ्वी के हित और अहित में उन्होंने क्या किया है। यदि हम प्रकृति को खुद ही पुनर्जीवित होने में मदद करें, तो वह भी पृथ्वी की सेवा ही होगी। कोरोना काल के प्रारंभिक दिनों में मानवीय गतिविधियां ठप होने के कारण नदियां, आकाश और वन्यजीवन स्वतः ही स्वच्छ-सजीव हो उठे थे। विशेष परियोजनाएं नहीं चलाई गई थीं, बस मानवीय हस्तक्षेप कम हो गया था। पशु-पक्षी, मछलियां और अन्य जीव-जंतु उन मार्गों पर लौट आए थे जो हमने उनसे छीन लिए थे।

पृथ्वी तो हमारा साझा घर है। मानव को स्वयं से पूछना चाहिए कि उस पृथ्वी का क्या होगा जिसमें जैव विविधता ही नहीं बचेगी?

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अमेरिकी उपराष्ट्रपति का 21-24 अप्रैल 2025 दौरा- भारत अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों व्यापार, रक्षा, प्रौद्योगिकी व क्षेत्रीय वैश्विक मुद्दों पर सफ़ल चर्चा

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर चल रहे टैरिफ वार के बीच अमेरिका- चीन अमेरिका-ईरान अमेरिका-यूरोपीय स्टेटस इत्यादि में अनेक गुथियां उलझी हुई है, इस बीच अमेरिका के उपराष्ट्रपति और उनकी भारतीय मूल की पत्नी उषा भारत के चार दिवसीय दौरे पर हैं। उपराष्ट्रपति का भारत दौरा बेहद अहम माना जा रहा है। यह दौरा इसलिए भी खास हो जाता है क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति की टैरिफ पॉलिसी ने पूरी दुनियाँ में हड़कंप मचा रखा है। टैरिफ पॉलिसी का असर भारत पर भी पड़ रहा है। ऐसे में यहां अमेरिकी उपराष्ट्रपति के दौरे का समय बेहद अहम हो जाता है।इस बीच यहां यह भी बता दें कि, साल 2024 के अंत में भारत और अमेरिका के बीच रिश्तों में चुनौतियां देखने को मिली थीं लेकिन संबंध स्थिर बने रहे थे। जून 2023 और सितंबर 2024 के बीच मोदी और बाइडेन दोनों ने अपने देशों में एक-दूसरे की मेजबानी की। जून 2023 में, बाइडेन ने वाशिंगटन में मोदी की राजकीय यात्रा की मेजबानी की और फिर सितंबर में अमेरिकी राष्ट्रपति जी20 शिखर सम्मेलन के लिए नई दिल्ली की यात्रा पर पहुंचे। इसके बाद जून 2024 में दोनों नेताओं की मुलाकात इटली में जी7 शिखर सम्मेलन के दौरान हुई थी। चूँकि भारत अमेरिका द्विपक्षीय वार्ता रणनीतिक सहयोग का मजबूत करने पर सकारात्मक चर्चा हुई है,व 13 वर्षों के बाद किसी अमेरिकी उपराष्ट्रपति का भारत में आगमन हुआ है व पारस्परिक एक रूप से लाभकारी सहयोग के लिए दोनों देश प्रतिबद्ध है, इसलिए आज मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोगसे इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,अमेरिकी उपराष्ट्रपति का21-24 अप्रैल 2025 को सफ़ल रणनीतिक बातचीत,भारत अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों व्यापार सुरक्षा प्रौद्योगिकी व क्षेत्रीय वैश्विक मुद्दों पर सफल चर्चा।

साथियों बात अगर हम भारत-अमेरिका बैठक में मुद्दों पर चर्चा की करें तो,अमेरिकी उपराष्ट्रपति भारत में पीएम के साथ व्यापार, शुल्क, क्षेत्रीय सुरक्षा और द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने के तरीकों सहित कई प्रमुख मुद्दों पर सफ़ल चर्चा की। पीएम और अमेरिकी उपराष्ट्रपति की बैठक में प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार संधि के अलावा दोनों देशों के बीच संबंधों को बढ़ावा देने के तरीके पर भी चर्चा हुई। भारत और अमेरिका दोनों ही विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश हैं। दोनों देशों के बीच रक्षा, व्यापार, तकनीक और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर सहयोग निरंतर बढ़ रहा है। अमेरिकी उपराष्ट्रपति के इस दौरे से इन मुद्दों पर दोनों देश तेज गति से आगे बढ़ेंगे और राजनयिक संबंध भी मजबूत होंगे। जिसकी संभावना इस प्रकार है (1) एशिया-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक साझेदारी--चीन की बढ़ती सक्रियता और आक्रामक नीति को देखते हुए अमेरिका 'इंडो-पैसिफिक' क्षेत्र में भारत के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करना चाहता है। जे डी वेंस का यह दौरा इस लिहाज से भी बेहद अहम होने वाला है। वेंस के इस दौरे से 'इंडो-पैसिफिक' क्षेत्र में भारत-अमेरिका की संयुक्त भूमिका को बढ़ावा मिलेगा। (2) व्यापार और निवेश को बढ़ावा--भारत तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। अमेरिका की कई कंपनियां भारत में निवेश को लेकर रुचि दिखा रही हैं। जे डी वेंस का यह दौरा दोनों देशोंके बीच व्यापारिक समझौतों और निवेश के अवसरों को बढ़ावा देने में मदद करेगा। इस बीच देखने वाली बात यह भी होगी कि टैरिफ को लेकर अमेरिका का अब भारत के प्रति क्या रुख रहेगा। (3) प्रवासी भारतीय समुदाय से जुड़ाव-- अमेरिका के उपराष्ट्रपति की पत्नी उषा भारतीय मूल की हैं। वेंस और उषा का यह दौरा भारतीय-अमेरिकी समुदाय के लिए गर्व का विषय है। यह दौरा सांस्कृतिक जुड़ाव को भी दर्शाता है। इससे अमेरिका में बसे भारतीयों को लेकर संदेश साफ जाता है साथ ही संबंधों को और गहराई मिलती है। (4) वैश्विक मुद्दों पर बढ़ेगा सहयोग--जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, स्वास्थ्य सुरक्षा जैसे वैश्विक मुद्दों पर भारत और अमेरिका पहले से ही साथ मिलकर काम कर रहे हैं। अमेरिका के उपराष्ट्रपति के इस दौरे से इन क्षेत्रों में भी दोनों देशों के बीच सहमति और मजबूत हो सकती है। बता दें अमेरिका के उपराष्ट्रपति व उनकी पत्नी का भारत पहुंचने पर शानदार स्वागत किया गया है। वेंस और उनका परिवार भारत की अपनी चार दिवसीय यात्रा के दौरान दिल्ली के अलावा जयपुर पहुंचे हैं और आगरा भी जाएंगे । देखा जाए तोvअमेरिकी उपराष्ट्रपति का का भारत दौरा सिर्फ औपचारिक राजनयिक यात्रा नहीं है, बल्कि यह दो बड़ी शक्तियों के बीच साझेदारी को और गहरा करने की दिशा में एक मजबूत कदम है। यह दौरा दोनों देशों के बीच भविष्य के संबंधों की नींव बनेगा।

साथियों बात अगर हम दोनों नेताओं के बैठक के बाद एक साथ विचार जाहिर करने की करें तो, भारतीय पीएम और उपराष्ट्रपति ने द्विपक्षीय सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति की समीक्षाकी और उसे सकारात्मक बताया। प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, उन्होंने दोनों देशों के लोगों के कल्याण पर केंद्रित पारस्परिक रूप से लाभकारी भारत- अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते के लिए चल रही वार्ताओं में महत्वपूर्ण

प्रगति का स्वागत किया। इसी तरह, उन्होंने ऊर्जा, रक्षा, रणनीतिक प्रौद्योगिकियों और अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए जारी प्रयासों पर ध्यान दिया। दोनों नेताओं ने आपसी हित के विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी विचार-विमर्श किया, और आगे बढ़ने के तरीके के रूप में बातचीत और कूटनीति का आह्वान किया। पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग के लिए प्रतिबद्ध, पीएम ने वेंस के साथ मुलाकात पर कहा। नयी दिल्ली में अमेरिका के उपराष्ट्रपति और उनके परिवार का स्वागत करते हुए खुशी हो रही है।मैंने अमेरिका की अपनी यात्रा और राष्ट्रपति ट्रम्प के साथ मुलाकात के बाद तेजी से हो रही प्रगति की समीक्षा की।हम व्यापार, प्रौद्योगिकी, रक्षा, ऊर्जा और लोगों के बीच आदान-प्रदान सहित पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत-अमेरिका व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी 21वीं सदी की एक परिभाषित साझेदारी होगी, जो हमारे लोगों और दुनिया के बेहतर भविष्य के लिए होगी पीएम मोदी और वेंस ने भारत-अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों,व्यापार,रक्षा, प्रौद्योगिकी और अन्य क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की। पीएम और उपराष्ट्रपति ने द्विपक्षीय सहयोग के विभिन्न क्षेत्रों में हुई प्रगति की समीक्षा की और उसे सकारात्मक बताया। प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार,उन्होंने दोनों देशों के लोगों के कल्याण पर केंद्रित पारस्परिक रूप से लाभकारी भारत-अमेरिका द्विपक्षीय व्यापार समझौते के लिए चल रही वार्ताओं में महत्वपूर्ण प्रगति का स्वागत किया। इसी तरह, उन्होंने ऊर्जा, रक्षा, रणनीतिक प्रौद्योगिकियों और अन्य क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए जारी प्रयासों पर ध्यान दिया। दोनों नेताओं ने आपसी हित के विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर भी विचार-विमर्श किया, और आगे बढ़ने के तरीके के रूप में बातचीत और कूटनीति का आह्वान किया।

अतः अगर हम अपने पूरे विवरण का अध्ययन करें इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि अमेरिकी उपराष्ट्रपति का 21-24 अप्रैल 2025 दौरा- भारत अमेरिका द्विपक्षीय संबंधों व्यापार, रक्षा,प्रौद्योगिकी व क्षेत्रीय वैश्विक मुद्दों पर सफ़ल चर्चा।भारत अमेरिका द्विपक्षीय वार्ता रणनीतिक सहयोग को मज़बूत करने पर सकारात्मक चर्चा हुई। 13 वर्षों के बाद किसी अमेरिकी उपराष्ट्रपति व भारतीय पीएम की सफ़ल वार्ता- लाभकारी सहयोग के लिए दोनों देशों की सफ़ल प्रतिबद्धता जताई।

जल्द लॉन्च होगी नई रॉयल एनफील्ड हंटर 350; मिल सकता है नया सस्पेंशन, कलर स्कीम और इंजन

परिवहन विशेष न्यूज

भारत में Royal Enfield Hunter 350 का अपडेट वर्जन हंटरहुड फेस्टिवल (HunterHood festival) में लॉन्च होने वाली है। यह फेस्टिवल 26 अप्रैल 2025 को आयोजित होने वाला है। नई Royal Enfield Hunter 350 में कई बदलाव देखने के लिए मिल सकते हैं। इसमें नया इंजन से लेकर नया कलर स्कीम भी दिया जा सकता है। वहीं इसके संस्पेंसन को भी बदला जा सकता है।

नई दिल्ली। भारतीय मोटरसाइकिल निर्माता कंपनी रॉयल एनफील्ड जल्द ही अपनी Royal Enfield Hunter 350 के अपडेटेड वर्जन को भारत में लॉन्च करने वाली है। इसे कंपनी हंटरहुड फेस्टिवल (HunterHood festival) में लॉन्च करने जा रही है, जो 26 अप्रैल 2025 को होने जा रहा है। Hunter 350 कंपनी की तरफ से बेची जाने वाली सबसे हल्की बाइक है। आइए जानते हैं कि नई Royal Enfield Hunter 350 में क्या कुछ नया देखने के लिए मिल सकता है?

क्या मिलेगा नया?

हंटरहुड फेस्टिवल में लॉन्च होने जा रही 2025 Royal Enfield Hunter 350 में मिलने वाली कमीयों को दूर किया जा सकता है। इसमें सख्त सस्पेंशन सेटअप दिया जा सकता है। इसमें जो ट्विन रियर शॉक्स दिया जाता है, उसको लेकर बहुत से लोगों ने शिकायत कर चुके है। नई हंटर 350 में इस कमी को दूर किया जा सकता है। वहीं, साल 2024 में Royal Enfield Hunter 350 के नए रियर सस्पेंशन यूनिट और एलईडी हेडलाइट के साथ टेस्टिंग मॉडल को स्पॉट किया जा चुका है।

टेस्टिंग मॉडल से भी पता चलता है कि रॉयल एनफील्ड अपने सबसे ज़्यादा बिकने वाले मॉडल में से एक में इस अपडेट के साथ क्या बदलाव कर सकती है। अगर यह बदलाव होते हैं तो वह न केलल भारतीय बाजार के लिए होगा, बल्कि ग्लोबल लेवल पर भी देखने के लिए मिल सकता है। कंपनी इस अपडेट के साथ इसे नया कलर ऑप्शन भी दे सकती है। अब देखना यह रहेगा कि कंपनी इसकी कीमत में बढ़ोतरी करती है या फिर नहीं। इसकी पुष्टि तो 26 अप्रैल को इसके लॉन्च होने के बाद ही होगी।

अब तक कितनी बिकी Hunter 350

जल्द ही Royal Enfield Hunter 350 को अपडेट मिलने वाला है। इसके जरिए कंपनी ने उन ग्राहकों को टार्गेट किया है, जो रॉयल एनफील्ड के पारंपरिक प्रशंसक नहीं थे। इसे साल 2022 में लॉन्च किया गया था, तब से लेकर अभी तक इसकी कुल 5 लाख यूनिट की बिक्री दुनिया भर में हो चुकी है। इसकी अविश्वसनीय लोकप्रियता को आंशिक रूप से मजबूत करने में जो मदद मिली है, वह यह है कि रॉयल एनफील्ड ने हंटर की कीमतों में बढ़ोतरी नहीं की है। Royal Enfield Hunter 350 के लॉन्च होने के बाद से ही इसकी एक्स-शोरूम कीमत 1.50 लाख रुपये से लेकर 1.75 लाख रुपये के बीच है।

कावासाकी बाइक पर मिल रहा बंपर डिस्काउंट, निंजा जेडएक्स-10 आर पर 30 हजार तक की छूट

परिवहन विशेष न्यूज

कावासाकी बाइक डिस्काउंट ऑफर सुपरस्पोर्ट्स बाइक बनाने वाली कंपनी Kawasaki समर कार्निवल ऑफर लेकर आई है। इस ऑफर के तहत कंपनी अपनी कई मोटरसाइकिल पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। इसमें हाल ही में लॉन्च हुई Kawasaki Eliminator शामिल है। यह पहले से 14 हजार रुपये मंहगी हो गई है। इसपर कंपनी 20000 रुपये का EMI कैशबैक या 20000 रुपये का बीमा दे रही है।

नई दिल्ली। स्पोर्ट्स बाइक बनाने वाली जापानी ऑटोमेकर कावासाकी अप्रैल 2025 में अपनी मोटरसाइकिलों पर बंपर डिस्काउंट दे रही है। कंपनी इस महीने समर कार्निवल ऑफर लेकर आई है। इसके तहत कंपनी ढेरों छूट और कैशबैक ऑफर दिया जा रहा है। यह ऑफर 31 मई, 2025 तक या स्टॉक खत्म तक रहने वाला है। आइए जानते हैं कि Kawasaki की किन मोटरसाइकिल पर यह डिस्काउंट ऑफर दिया जा रहा है।

Kawasaki Ninja ZX-10R

कावासाकी समर कार्निवल ऑफर में Kawasaki Ninja ZX-10R के एक्स-शोरूम कीमत पर 30,000 रुपये EMI कैशबैक ऑफर दिया जा रहा है। इसकी सुपरस्पोर्ट बाइक की एक्स-शोरूम कीमत 17,93,000 रुपये है। यह पहले से ही भारत में सबसे सस्ती लीटर-क्लास सुपरबाइक है, इसमें 998 सीसी लिक्विड कूल्ड इनलाइन 4 सिलेंडर इंजन दिया गया है। यह इंजन 203PS की पावर और 114,9Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

Kawasaki Versys 650

समर कार्निवल ऑफर में Kawasaki Versys 650 के एक्स-शोरूम कीमत पर 20,000 रुपये का डिस्काउंट दिया जा रहा है। वर्सेस 650 की एक्स-शोरूम कीमत 7,77,000 रुपये है। इसे एक ही वैरिएंट और एक ही कलर स्कीम के साथ पेश किया जाता है। इसमें 649cc, लिक्विड-कूल्ड, पैरेलल ट्विन मोटर इंजन दिया गया है, जो 67PS की पावर और 61Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

Kawasaki Ninja 1100SX

इस स्पोर्ट्स-टूरर मोटरसाइकिल के एक्स-शोरूम कीमत पर 10,000 रुपये का EMI कैशबैक दिया जा रहा है। Kawasaki Ninja 1100SX की एक्स-शोरूम कीमत 13,49,000 रुपये है। इसमें 1,099cc, लिक्विड-कूल्ड, इनलाइन-4 इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 136PS की पावर और 113Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

Kawasaki Eliminator

कावासाकी समर कार्निवल ऑफर में Kawasaki Eliminator खरीदने पर 20,000 रुपये का EMI कैशबैक या 20,000 रुपये का बीमा दिया जा रहा है। इसमें 451cc, पैरेलल-ट्विन, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 45PS की पावर और 42.6 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। हाल ही में इसके अपडेटेड वर्जन को भारत में लॉन्च किया गया है, जो पहले से 14,000 रुपये महंगी हो गई है। प्रीमियम के बावजूद, 2024 मॉडल की तुलना में बाइक में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

दमदार इंजन के साथ हुई लॉन्च, एबीएस-ट्रैक्शन कंट्रोल जैसे कई फीचर्स

परिवहन विशेष न्यूज

इस बाइक में Ducati का पॉपुलर 803cc एयर-कूल्ड L-ट्विन इंजन दिया गया है जो 71.87 bhp की पावर और 65 .2 Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

नई दिल्ली। अगर आप स्टाइलिश, परफॉर्मेंस-फोकस्ड और एडवेंचर से भरपूर बाइक की तलाश में हैं, तो Ducati ने आपके लिए जबरदस्त ऑप्शन पेश किया है। कंपनी ने भारत में अपनी नई 2025 Ducati Scrambler Full Throttle को लॉन्च कर दिया है। यह बाइक दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, चेन्नई समेत देश के प्रमुख Ducati डीलरशिप्स पर उपलब्ध है।

दमदार लुक के साथ पेश हुई Full Throttle

2025 Scrambler Full Throttle को पहली नजर में देखकर ही आपको इसका रेसिंग डीएनए महसूस हो जाएगा। इसका मैट ब्लैक और ब्रॉन्ज पेंट स्कीम, ब्रॉन्ज अलॉय व्हील्स और साइड नंबर प्लेट्स इसे फ्लैट ट्रैक बाइक जैसा रेसिंग लुक देते हैं।

कम ऊंचाई वाले वेरिएबल क्रॉस-सेक्शन हैंडलबार और नया स्कल्प्टेड रियर सेक्शन राइडिंग पोजिशन को न सिर्फ स्टाइलिश बनाता है, बल्कि लॉन्ग राइड्स पर भी आरामदायक अनुभव देता है।

803cc इंजन से है लैस

इस बाइक में Ducati का पॉपुलर 803cc एयर-कूल्ड L-ट्विन इंजन दिया गया है जो 71.87 bhp की पावर और 65.2 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके साथ 6-स्पीड गियरबॉक्स जुड़ा है और अब इसमें क्विक शिफ्ट Up/Down सिस्टम भी स्टैंडर्ड दिया गया है, जिससे गियर बिना क्लच के बदला जा सकता है।

Ducati ने बाइक के चेसिस को लाइटवेट रखा है ताकि शहर में इसे चलाना आसान हो और हाईवे पर स्टेबिलिटी बनी रहे। इसकी सीट की ऊंचाई 795mm है, जो ज्यादातर राइडर्स के लिए परफेक्ट मानी जाती है।

महाराष्ट्र में ओला इलेक्ट्रिक के 75 शोरूम पर लगा ताला, 192 स्कूटर भी हुए जब्त

परिवहन विशेष न्यूज

महाराष्ट्र में ओला इलेक्ट्रिक के 75 शोरूम पर को बंद कर दिया गया है। इसके साथ ही महाराष्ट्र सरकार ने 192 स्कूटर भी जब्त किए है। हाल ही में सरकार ने 146 ओला इलेक्ट्रिक स्टोर का जांच किया जिसमें से 121 शोरुम के पास वैध ट्रेड सर्टिफिकेट नहीं मिला। जिसके बाद सरकार ने 75 शोरूम पर ताला लगा दिया। बाकी पर कार्रवाई चल रही है।

नई दिल्ली। हाल के समय में ओला इलेक्ट्रिक कई चीजों की वजह से चर्चा में है, लेकिन इसके चर्चा के पीछे की वजह अच्छी नहीं है। कंपनी ग्राहकों के शिकायत के बीच फंस गई है। इसके साथ ही महाराष्ट्र में ओला डीलरशिप पर कार्रवाई और भी तेज हो गई है। लाइव मिंट की एक रिपोर्ट के मुताबिक, महाराष्ट्र सरकार ने आरटीओ विभाग को उन सभी ओला इलेक्ट्रिक डीलरशिप को बंद करने का निर्देश दिया है जो वैध ट्रेड सर्टिफिकेट के बिना काम कर रही हैं। इस रिपोर्ट के मुताबिक करीब 75 ओला इलेक्ट्रिक शोरूम को बंद कर दिया गया है और 192 स्कूटर को जब्त किया गया है। आइए इसके पीछे के कारण के बारे में जानते हैं।

83% स्टोर में ट्रेड सर्टिफिकेट नहीं

ओला इलेक्ट्रिक, महाराष्ट्र सरकार के साथ विवाद में फंस गई है। राज्य के संयुक्त परिवहन आयुक्त ने 16 अप्रैल 2025 को एक ईमेल में महाराष्ट्र आरटीओ को कारण बताओ नोटिस जारी किया है, जिसमें ओला इलेक्ट्रिक पर कार्रवाई के बारे में बताया गया है।

रिपोर्ट के अनुसार, RTO ने महाराष्ट्र में लगभग 146 ओला इलेक्ट्रिक स्टोर का जांच किया गया। इसमें 121 डीलरशिप के पास केंद्र ट्रेड सर्टिफिकेट नहीं पाया गया, जो निरीक्षण किए गए डीलरशिप का 82.87% है। इनमें से 75 स्टोर को बंद कर दिया गया है। साथ ही 192 इलेक्ट्रिक स्कूटर को जब्त भी किया गया है।

इस जांच के बाद महाराष्ट्र राज्य में RTO के तहत संचालित किसी भी ओला डीलरशिप के पार वैध ट्रेड सर्टिफिकेट नहीं मिलने पर उन्हें बंद करने का निर्देश दिए गए थे। शोरूम के पास आवश्यक अधिकारियों से ट्रेड सर्टिफिकेट होना चाहिए ताकि उनके डीलरशिप के जरिए से बेचे जाने वाले वाहनों को राज्य में रजिस्ट्रेशन किया जा सके।

75 ओला इलेक्ट्रिक शोरूम बंद

ओला इलेक्ट्रिक ने फरवरी 2025 में 25 हजार यूनिट्स की बिक्री का दावा किया था, जिनके रजिस्ट्रेशन में काफी ज्यादा अंतर देखने के लिए मिला था। इन 25 हजार में से केवल 8,647 वाहन का ही रजिस्ट्रेशन मिला था। इसके बाद मार्च 2025 के महीने में पुणे और मुंबई जैसे महाराष्ट्र के प्रमुख शहरों में RTO विभाग द्वारा कई जांच किए गए। महाराष्ट्र परिवहन विभाग ने ओला इलेक्ट्रिक को नोटिस भेजा और कंपनी ने जवाब दिया कि वह महाराष्ट्र के सभी स्टोर्स में ट्रेड सर्टिफिकेट के लिए आवेदन करने की प्रक्रिया में है।

गर्मियां आते ही गाड़ी की सर्विसिंग क्यों जरूरी? सेफ्टी के लिए इन 5 बातों का रखें ध्यान

परिवहन विशेष न्यूज

गर्मी का मौसम आते ही कार चाहे सड़क पर चल रही हो या फिर पार्किंग में खड़ी हो इनका ओवरहीट होना स्वाभाविक है। कार के ओवरहीट होने की वजह से इनमें आग लगने जैसी घटनाएं होने लग जाती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको गर्मी के मौसम में अपनी कार का ख्याल रखने के 5 तरीकों के बारे में बता रहे हैं।

नई दिल्ली। देश के कई हिस्सों में तेज गर्मी और चिलचिलाती धूप पड़ने लगी है। तेज गर्मी की वजह से कार चाहे सड़क पर चल रही हो या फिर पार्किंग में खड़ी हो, इनका ओवरहीट होना स्वाभाविक है। इस तेज गर्मी की वजह से कई बार गाड़ियों में आग भी लग जाती है। जिसे देखते हम यहां पर आपको अपनी सेफ्टी और कार की देखभाल करने के 5 तरीकों के बारे में बता रहे हैं, जिससे न केवल आपका सफर बेहतर रहेगा, बल्कि कार भी पूरी तरह से सेफ रहेगी।

1. गर्मियों में न कराएं टैंक फुल

गर्मी के मौसम में आपको कार के फ्यूल टैंक को फुल करवाने से बचना चाहिए। गर्मियों में आपको हमेशा करीब 10% फ्यूल कम भरवाना चाहिए। दरअसल, गर्मी के मौसम में मेटल टैंक के गर्म होने के चलते इसमें गैस प्रोड्यूस होती है। इसके लिए आपको फुल टैंक की जगह पर करीब 10% फ्यूल कम भरवाना चाहिए।

2. हीट रिफ्लेक्टिव सन गार्ड लगवाएं

गर्मी का मौसम आते ही आपको अपनी कार में सन फिल्म्स और हीट रिफ्लेक्टिव सन गार्ड को लगवा लेना चाहिए। इसे लगवाने से विजिबिलिटी में भी कोई दिक्कत नहीं होती है, लेकिन यह कार के अंदर ओवरहीटिंग रोकने का काम करते हैं। इसे लगवाने के बाद आपको कार के भीतर टेंपरेचर में काफी अंतर देखने के लिए मिलेगा।

3. कार में न रखें लाइटर और परफ्यूम

आपको अपनी कार में गर्मी के मौसम में लाइटर और परफ्यूम जैसी चीजों को रखने से बचना चाहिए। यह फ्लेमेबल चीजें होती है। बहुत से लोग अपनी कार में लाइटर से लेकर परफ्यूम तक रखते हैं। यह आपके और आपकी कार दोनों के लिए खतरनाक साबिक हो सकते हैं। इन्हीं की तरह हैंड सैनिटाइजर और अन्य कोई भी अल्कोहल-बेस्ड लिक्विड फ्लेमेबल प्रोडक्ट को आपको रखने से बचना चाहिए।

4. टायरों में कम रखें हवा

गर्मी के मौसम में तेज धूप की वजह से सड़क काफी गर्म हो जाती है। ऐसे में जब कोई कार या बाइक उस पर चलती है, तो फ्रिक्शन और हीट के चलते टायरों में हवा का प्रेशर बढ़ जाता है। इसकी वजह से कार के टायर के फटने का खतरा भी बढ़ जाता है।

5. कार की सर्विसिंग कराएं

जब गर्मी का मौसम शुरू हो, तो तभी आपको अपनी कार की सर्विस करवा लेने चाहिए। दरअसल, गर्मी के मौसम में कार बहुत गर्म हो जाती है, ऐसे में बेहतर परफॉर्मेंस के लिए इससे पहले ऑयल चेंज करना जरूरी है। वहीं, सर्विसिंग में कार के चक्कों की ग्रिजिंग से लेकर और भी कई चीजों को सही किया जाता है। इनकी वजह से टरनल हीटिंग भी कम होती है।

रेनॉल्ट कर रही दो सालों में पांच नई कारें लाने की तैयारी, भारत में किया नए डिजाइन सेंटर का उद्घाटन

परिवहन विशेष न्यूज

फ्रांस की वाहन निर्माता Renault की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से घोषणा की गई है कि वह अगले दो सालों में पांच नई कारों को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। इसके साथ ही किस तरह की खासियत के साथ नए डिजाइन सेंटर का उद्घाटन किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। फ्रांस की वाहन निर्माता रेनो की ओर से भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से हाल में ही नए डिजाइन सेंटर की शुरुआत की गई है। भारत में कहां पर इस सेंटर को शुरू किया गया है। निर्माता की ओर से कब तक नई कारों को भारत में लाने की तैयारी की जा रही है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Renault लाएगी पांच नई कारें

रेनो इंडिया की ओर से घोषणा की गई है कि अगले दो सालों में निर्माता की ओर से भारतीय बाजार में पांच नई कारों को लॉन्च किया जाएगा। इन कारों की लॉन्चिंग को अगले कुछ महीनों शुरू कर दिया जाएगा। जिनमें इलेक्ट्रिक सेगमेंट की कार भी शामिल होगी।

किन कारों को मिलेगा अपडेट

निर्माता की ओर से मौजूदा समय में क्विड, ट्राइबर और काइगर की बिक्री भारतीय बाजार में की जाती है। इनमें से ट्राइबर और काइगर के फेसलिफ्ट को भी निर्माता की ओर से जल्द लॉन्च किया जा सकता है।

फ्रांस से बाहर शुरू किया डिजाइन सेंटर

रेनो की ओर से अभी तक सभी कारों को फ्रांस में ही डिजाइन किया जाता था, लेकिन अब निर्माता की ओर से पहली बार फ्रांस से बाहर नए डिजाइन सेंटर को शुरू किया है। इस डिजाइन सेंटर में डिजाइन की गई कारों को भारत में लॉन्च किया जाएगा। इसके साथ ही इन कारों को कई देशों में बिक्री के लिए भी उपलब्ध करवाया जाएगा।

किनसे है मुकाबला

रेनो की ओर से क्विड को हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Maruti Alto K10, S Presso, Hyundai i10 जैसी कारों के साथ होता है। एमपीवी सेगमेंट में निर्माता की ओर से Renault Triber की बिक्री की जाती है। जिसका मुकाबला Maruti Ertiga के साथ होता है। वहीं सब फोर मीटर एसयूवी सेगमेंट में Renault Kiger का मुकाबला Nissan Magnite, Maruti Brezza, Kia Sonet, Kia Syros, Hyundai Venue, Mahindra XUV 3XO जैसी एसयूवी के साथ होता है।

यूपीएससी की तैयारी में प्रौद्योगिकी का प्रभावी ढंग से उपयोग कैसे करें

विजय गर्ग

यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा भारत में सबसे चुनौतीपूर्ण परीक्षाओं में से एक है, जिसमें व्यापक तैयारी और समर्पण की आवश्यकता होती है। आज के डिजिटल युग में, प्रौद्योगिकी इस प्रतिष्ठित परीक्षा को क्रैक करने के उद्देश्य से उम्मीदवारों के लिए एक अनिवार्य उपकरण बन गया है। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों से लेकर मोबाइल ऐप्स तक, प्रौद्योगिकी संसाधनों की अधिकता प्रदान करती है जो आपकी तैयारी को बढ़ा सकते हैं।

यूपीएससी की तैयारी में प्रौद्योगिकी की भूमिका प्रौद्योगिकी ने हमारे द्वारा सूचना तक पहुंचने और नई अवधारणाओं को सीखने के तरीके में क्रांति ला दी है। यूपीएससी के उम्मीदवारों के लिए, यह स्मार्ट और कुशलता से अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है। यहां कुछ तरीके दिए गए हैं जिनसे प्रौद्योगिकी आपकी यूपीएससी की तैयारी में सहायता कर सकती हैः

1.। ऑनलाइन पाठ्यक्रम और कोचिंग प्रतिष्ठित ऑनलाइन पाठ्यक्रमों में दाखिला लें ऑनलाइन पाठ्यक्रम लचीलापन और सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे आप अपने घर के आराम से अध्ययन कर सकते हैं। संस्थान आईएएस अकादमी यूपीएससी पाठ्यक्रम के सभी पहलुओं को कवर करते हुए व्यापक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करती है। इन पाठ्यक्रमों में वीडियो व्याख्यान, अध्ययन सामग्री और नियमित मूल्यांकन शामिल हैं, जो एक समग्र तैयारी दृष्टिकोण सुनिश्चित करते हैं।

एक्सेस एक्सपर्ट गाइडेंस ऑनलाइन कोचिंग प्लेटफॉर्म आपको अनुभवी संकाय और विषय विशेषज्ञों से जोड़ते हैं। उदाहरण के लिए, आईएएस अकादमी अपने गहन कवरेज और विशेषज्ञ अंतर्दृष्टि के लिए प्रसिद्ध है, जिससे यह नृविज्ञान के लिए अपने वैकल्पिक विषय के रूप में चयन करने वाले उम्मीदवारों के लिए एक मूल्यवान संसाधन है।

2.। यूपीएससी की तैयारी के लिए मोबाइल ऐप करंट अफेयर्स ऐप्स यूपीएससी की तैयारी के लिए करंट अफेयर्स से अपडेट रहना महत्वपूर्ण है। इनशॉर्ट्स, जीकेटुडे और क्लियरआईएएस जैसे मोबाइल ऐप दैनिक समाचार अपडेट, करंट अफेयर्स क्विज़ और विश्लेषण प्रदान करते हैं। ये ऐप सुनिश्चित करते हैं कि आपको हमेशा नवीनतम घटनाओं के बारे में सूचित किया जाए।

प्लानर ऐप्स का अध्ययन करें प्रभावी समय प्रबंधन यूपीएससी की सफलता की कुंजी है। ट्रेलो और एवरनोट जैसे अध्ययन योजनाकार ऐप आपको अपने अध्ययन कार्यक्रम को व्यवस्थित करने, अनुस्मारक सेट करने और अपनी प्रगति को ट्रैक करने में मदद करते हैं। ये ऐप आपको पाठ्यक्रम को प्रबंधनीय कार्यों में तोड़ने और नियमित संशोधन सुनिश्चित करने की अनुमति देते हैं।

3। डिजिटल लाइब्रेरी और ई-पुस्तकें विशाल संसाधनों तक पहुंच डिजिटल लाइब्रेरी और ई-पुस्तकें अध्ययन सामग्री की एक विशाल सरणी तक पहुंच प्रदान करती हैं। प्रोजेक्ट गुटेन बर्ग और गूगल बुक्स जैसी वेबसाइटें आवश्यक यूपीएससी संदर्भ सामग्री सहित कई पुस्तकों तक मुफ्त पहुंच प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त,

आसान पहुँच ई-पुस्तकें विभिन्न उपकरणों पर आसानी से सुलभ हैं, जिससे आप चलते-फिरते अध्ययन कर सकते हैं। चाहे आप यात्रा कर रहे हों या अपॉइंटमेंट का इंतजार कर रहे हों, आप ई-बुक्स और डिजिटल नोट्स पढ़कर अपने समय का प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकते हैं।

4। ऑनलाइन टेस्ट सीरीज और मॉक टेस्ट परीक्षा पर्यावरण का अनुकरण करें आपकी तैयारी के मूल्यांकन के लिए ऑनलाइन टेस्ट सीरीज़ और मॉक टेस्ट महत्वपूर्ण हैं। संस्थान आईएएस अकादमी ऑनलाइन टेस्ट श्रृंखला प्रदान करती है जो वास्तविक यूपीएससी परीक्षा वातावरण का अनुकरण करती है। ये परीक्षण आपको समय प्रबंधन का अभ्यास करने, अपनी उत्तर देने की तकनीकों में सुधार करने और अपनी ताकत की पहचान करने में मदद करते हैं

विस्तृत प्रतिक्रिया और विश्लेषण ऑनलाइन मॉक टेस्ट आपके प्रदर्शन की त्वरित प्रतिक्रिया और विस्तृत विश्लेषण प्रदान करते हैं। इससे आपको अपनी गलतियों को समझने, उन्हें सुधारने और अपने स्कोर में सुधार करने में मदद मिलती है। ऑनलाइन परीक्षणों के साथ नियमित अभ्यास यह सुनिश्चित करता है कि आप परीक्षा के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं।

5.। वीडियो व्याख्यान और वेबिनार विजुअल लर्निंग वीडियो व्याख्यान और वेबिनार जटिल अवधारणाओं को सीखने के लिए एक गतिशील और आकर्षक तरीका प्रदान करते हैं। दृश्य सीखने बेहतर प्रतिधारण और विषयों की समझ में सहायता करता है। यूट्यूब और विभिन्न शैक्षिक वेबसाइटों जैसे प्लेटफ़ॉर्म यूपीएससी पाठ्यक्रम के सभी विषयों को कवर करते हुए अनुभवी शिक्षकों द्वारा वीडियो व्याख्यान की मेजबानी करते हैं।

इंटरएक्टिव सत्र कोचिंग संस्थानों और विशेषज्ञों द्वारा आयोजित वेबिनार इंटरैक्टिव सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं। ये सत्र आपको प्रश्न पूछने, संदेह स्पष्ट करने और अनुभवी शिक्षकों से अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की अनुमति देते हैं। संस्थान आईएएस अकादमी नियमित रूप से वर्तमान मामलों और वैकल्पिक विषयों सहित विभिन्न विषयों पर वेबिनार आयोजित करती है।

6। ऑनलाइन मंच और अध्ययन समूह पीयर लर्निंग ऑनलाइन फ़ोरम और अध्ययन समूह उम्मीदवारों को ज्ञान की बातचीत, चर्चा और साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। रेडिट, क्वोरा और विभिन्न फेसबुक समूहों जैसी वेबसाइटों में सक्रिय यूपीएससी समुदाय हैं जहाँ आप विचारों, संसाधनों और रणनीतियों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। पीयर लर्निंग विभिन्न दृष्टिकोणों को प्राप्त करने और विभिन्न विषयों की आपकी समझ को बढ़ाने में मदद करता है।

विशेषज्ञ मार्गदर्शन कई ऑनलाइन मंचों में विशेषज्ञों और टॉपर्स के नेतृत्व में चर्चा होती है जो अपने अनुभवों और तैयारी रणनीतियों को साझा करते हैं। इन चर्चाओं में संलग्न होने से आपकी तैयारी को बेहतर बनाने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि और सुझाव मिल सकते हैं।

7.। पॉडकास्ट और ऑडियोबुक गो पर सीखना पॉडकास्ट और ऑडियोबुक चलते-फिरते सीखने के लिए उत्कृष्ट संसाधन हैं। चाहे आप आवागमन कर रहे हों या व्यायाम कर रहे हों, आप अपनी पढ़ाई को जारी रखने के लिए शैक्षिक पॉडकास्ट और ऑडियोबुक सुन सकते हैं। श्रव्य और Spotify जैसे प्लेटफ़ॉर्म यूपीएससी विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करने वाले कई पॉडकास्ट और ऑडियो पुस्तकों की मेजबानी करते हैं।

विविध परिप्रेक्ष्य विशेषज्ञों, शिक्षकों और सिविल सेवकों द्वारा पॉडकास्ट सुनना विभिन्न मुद्दों पर विविध दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह आपकी समझ को व्यापक बनाने और परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर देने के लिए एक अच्छी तरह से गोल दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है।

व्यापक ऑनलाइन पाठ्यक्रम आईएएस अकादमी पूरे यूपीएससी पाठ्यक्रम को कवर करने के लिए डिज़ाइन किए गए व्यापक ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करती है। इन पाठ्यक्रमों में पूरी तरह से तैयारी सुनिश्चित करने के लिए वीडियो व्याख्यान, अध्ययन सामग्री और नियमित मूल्यांकन शामिल हैं। अकादमी का संरचित दृष्टिकोण और विशेषज्ञ संकाय इसे उम्मीदवारों के लिए एक मूल्यवान संसाधन बनाता है।

किशोर सर से विशेष मार्गदर्शन एंथ्रोपोलॉजी को उनके वैकल्पिक विषय के रूप में चुनने वाले उम्मीदवारों के लिए, आईएएस अकादमी की अत्यधिक अनुशंसा की जाती है। उनके विशेषज्ञ मार्गदर्शन और प्रभावी शिक्षण विधियां छात्रों को विषय में महारत हासिल करने और वैकल्पिक पेपर में उच्च स्कोर करने में मदद करती हैं।

नियमित मॉक टेस्ट और प्रतिक्रिया आईएएस अकादमी नियमित ऑनलाइन मॉक टेस्ट आयोजित करती है जो वास्तविक परीक्षा वातावरण का अनुकरण करती है। ये परीक्षण विस्तृत प्रतिक्रिया और विश्लेषण प्रदान करते हैं, जिससे छात्रों को अपनी ताकत और कमजोरियों की पहचान करने और अपने प्रदर्शन में सुधार करने में मदद मिलती है।

करंट अफेयर्स पर ध्यान दें यूपीएससी की तैयारी के लिए करंट अफेयर्स से अपडेट रहना महत्वपूर्ण है। आईएएस अकादमी दैनिक करंट अफेयर्स अपडेट, मासिक संकलन और महत्वपूर्ण समाचारों और घटनाओं का विश्लेषण प्रदान करती है। यह सुनिश्चित करता है कि छात्रों को अच्छी तरह से सूचित किया जाए और परीक्षा में करंट अफेयर्स प्रश्नों के लिए तैयार किया जाए।

निष्कर्ष प्रौद्योगिकी ने यूपीएससी की तैयारी के परिदृश्य को बदल दिया है, संसाधनों की अधिकता की पेशकश की है जो आपके अध्ययन के प्रयासों को बढ़ा सकते हैं। ऑनलाइन पाठ्यक्रम और मोबाइल ऐप से लेकर डिजिटल लाइब्रेरी और वीडियो लेक्चर तक, प्रौद्योगिकी आपको स्मार्ट और कुशलता से तैयार करने में मदद करने के लिए कई उपकरण प्रदान करती है।

व्हाइट हाउस का घेराव

अमरीका में राष्ट्रपति आवास 'व्हाइट हाउस' का घेराव किया गया है। यह वाकई चौंका देने वाली, दुर्लभ घटना है। यह अमरीका में नागरिक आंदोलन की पराकाष्ठा है और राष्ट्रपति ट्रंप के सत्तावादी रवैये का घोर विरोध है। वैसे अमरीका में ही प्रदर्शनकारियों ने 'कैपिटल भवन' (संसद) पर हमला बोल दिया था। उसके भीतर घुस कर जबरदस्त तोड़-फोड़ की थी। उस प्रकरण में ट्रंप को 'खलनायक' करार दिया गया था, क्योंकि वह विपक्ष में थे और जो बाइडेन देश के राष्ट्रपति थे। अब अमरीका के सभी 50 राज्यों में 50 विरोध-प्रदर्शन किए जा रहे हैं, लेकिन आंदोलन एक ही है, लिहाजा उसे '50501' नाम दिया गया है। ट्रंप जनवरी, 2025 में ही अमरीका के राष्ट्रपति चुने गए। सिर्फ तीन माह में ही जनता का सामूहिक विरोध और मोहभंग के भाव स्पष्ट होने लगे हैं। बेशक यह आश्चर्यजनक है। इसके कई कारण हो सकते हैं। समझ नहीं आ रहा है कि राष्ट्रपति ट्रंप इस कार्यकाल के दौरान क्या करना और क्या हासिल करना चाहते हैं? उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व व्यापार संगठन आदि अंतरराष्ट्रीय महत्व के संस्थानों की 'आर्थिक मदद' पर पाबंदी लगा दी। यही नहीं, हार्वर्ड विश्वविद्यालय की 2.3 अरब डॉलर की फंडिंग पर विराम लगा दिया। दलील दी गई कि यह विश्वविद्यालय वामपंथी और विघटनकारी छात्रों की नस्लें तैयार कर रहा है। अमरीका ही नहीं, दुनिया भर में बौद्धिक संपदा के निर्माण में इस शैक्षिक संस्थान का अमूल्य तथा अप्रतिम योगदान रहा है। शायद राष्ट्रपति ट्रंप को यह तथ्य ब्रीफ नहीं किया गया कि अमरीका के 16 राष्ट्रपति (ट्रंप नहीं) हार्वर्ड के ही छात्र थे और सबसे अधिक 161 नोबेल पुरस्कार विजेता भी इसी विश्वविद्यालय ने दिए हैं। सवाल अमरीकी राष्ट्रपति से किए जाते रहे हैं कि जिन्हें अमरीकी प्रशासन परंपरागत रूप से वित्तपोषित करता रहा है, उनकी आर्थिक मदद छीन कर क्या होगा? क्या राष्ट्रपति ट्रंप अपने निर्णय पर प्रायश्चित करने की मुद्रा में हैं? कमोबेश कोई भी संगठन, संस्थान या यूनिवर्सिटी इस तरह बंद नहीं होते।

अचरज जताया जा रहा है कि ट्रंप ने जो 'टैरिफ नीति' घोषित की थी और साझा कारोबार करने वाले प्रमुख देशों पर कर का बोझ लाद दिया था, क्या उससे अमरीका में नई फैक्टरियां खुलेंगी अथवा अमरीका अधिक समृद्ध देश बनेगा और महंगाई, बेरोजगारी की समस्याएं कम होंगी? इसके अलावा, राष्ट्रपति के खास सलाहकार, दुनिया के सर्वोच्च उद्योगपति एलन मस्क ने जिस योजना के तहत सरकारी नौकरियां छीनने की कवायद की है, क्या उससे अमरीका में सामाजिक सुरक्षा मजबूत और व्यापक होगी? अमरीका नागरिक स्वतंत्रता, वैचारिक स्वतंत्रता, मानवाधिकार, लोकतंत्र, सामाजिक सुरक्षा सरीखे मूल्यों की बुनियाद पर टिका है। इन मूल्यों के लिए वहां कई सार्वजनिक संघर्ष किए गए हैं। अब प्रदर्शन के दौरान बैनर-पोस्टरों पर लिखा है-ट्रंप को अल सल्वाडोर की जेल में डिपोर्ट कर दिया जाए। राष्ट्रपति पर नागरिक स्वतंत्रता और कानून के शासन को कमजोर करने के आरोप लगाए जा रहे हैं। 'व्हाइट हाउस' के अलावा मस्क की 'टेस्ला कार' के शोरूम का भी घेराव किया जा रहा है। उनमें आगजनी की घटनाएं हुई हैं। आंदोलनकारी दलील दे रहे हैं कि हमारा मकसद ट्रंप प्रशासन के तहत बढ़ते सत्तावादी और तानाशाहीपूर्ण रवैये से लोकतंत्र को बचाना है। आंदोलन अहिंसक ही रहेगा। इन विरोध-प्रदर्शनों में कई राजनीतिक दल भी शामिल हैं, लिहाजा ट्रंप के लिए नागरिक और राजनीतिक चुनौतियां दोनों ही हैं। अमरीका और भारत के लोकतंत्र दुनिया के लिए उदाहरण माने जाते रहे हैं। भारत में ऐसी नौबत कभी नहीं आई कि राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री आवासों का ऐसा घेराव किया गया हो। हालांकि विरोधी पक्ष प्रधानमंत्री आवास और संसद भवन के घेराव के नारे जरूर लगाते हैं, लेकिन विरोध-प्रदर्शन 'जंतर-मंतर' तक ही सीमित कर दिए जाते हैं। इस बार राष्ट्रपति ट्रंप के फैसलों में एकाधिकारवाद ज्यादा झलक रहा है।

अंबेडकर का संविधान आज भारत में असफल क्यों?

आज जब भारत बीआर अंबेडकर की 135वीं जयंती मना रहा है, तो यह विचार करने का सही समय है कि उनका सबसे बड़ा योगदान – हमारा संविधान – किस कुशलता से देश की सेवा कर रहा है। इस बात की अकसर आलोचना होती है कि भारत का संविधान इसकी प्रस्तावना में दिए गए वचन पूरे नहीं कर पाया जिसमें न्याय, समानता, और स्वतंत्रता के लिए प्रतिबद्ध एक समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष गणराज्य की कल्पना की गई है। इन सभी क्षेत्रों में विफलताओं के बहुत उदाहरण पेश किए जा सकते हैं। परंतु ताजा राजनीतिक घटनाक्रम इन कमियों के अंतर्निहित कारणों को सामने ले आए हैं।

आइए हमारे संविधान द्वारा स्थापित सरकार की हर शाखा और संघीय ढांचे में इन मुद्दों पर नजदीक से दृष्टिपात करें।

कार्यपालिका : उत्तरदायित्व के बिना शक्ति

सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व वाली उत्तर प्रदेश सरकार की इस बात के लिए आलोचना की कि उचित न्यायिक प्रक्रिया अपनाए बिना प्रयागराज में घर ध्वस्त करने के आदेश दिए गए। अपनी किताबों को पकड़े बुलडोजरों से बचकर भागती आठ वर्ष की बच्ची के वीडियो ने राष्ट्र को गहराई तक झकझोर दिया। न्यायालय ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा, ''जिस प्रकार नोटिस दिए जाने के 24 घंटे के भीतर यह किया गया, उससे अदालत की अंतरात्मा को आघात पहुंचा है।'' नवंबर माह में कोर्ट ने उनके धड़ाधड़ प्रयोग को 'गैर कानूनी, निर्मम स्थिति' बताते हुए बुलडोजरों से निर्माण गिराने पर प्रतिबंध लगा दिया था। हालांकि ऐसी घटनाएं देश भर में जारी हैं।

अंबेडकर का संविधान एक स्वेच्छाचारी कार्यकारी (मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री) को तब तक रोकने, दंडित करने या पद से हटाने की कोई व्यवस्था उपलब्ध नहीं करवाता, जब तक उन्हें विधायिका (विधानसभा या संसद) में बहुमत प्राप्त है। संविधान का प्रारूप बनाते समय अंबेडकर का प्रसिद्ध कथन था कि जिस संसदीय प्रणाली को अंगीकृत किया जा रहा है, वह एक 'उत्तरदायी' सरकार सुनिश्चित करेगी। उन्होंने तर्क दिया कि विधायिका के सदस्य कार्यपालिका की 'प्रतिदिन' निगरानी करेंगे और अगर यह अपनी शक्ति का दुरुपयोग करती है तो वे सरकार गिराने की धमकी देकर उसे उत्तरदायी ठहराएंगे। हालांकि अपने अधिकारों के दुरुपयोग या अतिक्रमण पर भारत में आज तक कोई सरकार नहीं हटाई गई। ऐसा इसलिए क्योंकि कोई भी विधायक या सांसद अपनी पार्टी को नाराज करने या सदन भंग करने की शुरुआत करने का जोखिम नहीं उठाना चाहता। वर्ष 1985 में दलबदल विरोधी संशोधन पारित कर, जिसने सांसदों और विधायकों का अपनी पार्टी के विरुद्ध वोट देना अवैध बना दिया, भारत ने कार्यपालिका पर अंबेडकर के संविधान का नियंत्रण और भी कमजोर कर दिया।

विधायिका : बहुमत का शासन, अल्पमत मौन

संसद ने हाल ही में एक विवादित धार्मिक कानून, वक्फ संशोधन विधेयक, पारित किया है जिसका उद्देश्य मुस्लिम धर्मार्थ निधि प्रबंधन में सुधार लाना है। विधेयक के अनुसार वक्फ बोर्डों में गैर-मुस्लिमों को शामिल करना, वक्फ को उन्हीं लोगों तक सीमित करना जो इस्लाम को कम से कम पांच वर्षों से मानना साबित कर पाएं, और वक्फ संपत्तियों को मान्य बनाने में सरकारी अधिकारियों को शामिल करना आवश्यक है। इसका जोरदार विरोध हो रहा है, विशेष तौर पर इसलिए क्योंकि हिंदू धार्मिक निकायों के लिए समान शर्तों वाला कोई कानून नहीं है। वक्फ विधेयक में विपक्षी राजनीतिक दलों द्वारा प्रस्तावित कोई भी सुधार स्वीकार नहीं किया गया। विधेयक लोकसभा में 288-232 और राज्यसभा में 128-95 के अंतर से पारित हो गया। सत्ताधारी गठबंधन के किसी सदस्य ने इसके विरुद्ध मत नहीं दिया। अंबेडकर का संविधान बहुमत के शासन के सिद्धांत पर आधारित है, परंतु इसमें ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो शासन में अल्पमत की आवाज उठाना सुनिश्चित करे। इस दोष के कारण ही आखिरकार अंबेडकर अपने ही सृजन के विरुद्ध आ खड़े हुए थे। वर्ष 1953 में उन्होंने अपने मोहभंग को राज्यसभा में कुछ यूं व्यक्त किया, ''महोदय, मेरे मित्र मुझसे कहते हैं कि मैंने संविधान बनाया। परंतु मैं यह कहने के लिए पूरी तरह तैयार हूं कि इसे जला डालने वाला मैं पहला शख्स हूंगा 'यह किसी के लिए भी सही नहीं है।''

संविधान प्रारूपण में उनके सम्मिलित होने से पूर्व अंबेडकर ने तर्क दिया था कि भारत में ''बहुमत का शासन सैद्धांतिक रूप से अस्थिर और व्यवहार में अनुचित है।'' परंतु संविधान निर्माण के समय नेहरू और अन्यों ने अंबेडकर को मना लिया कि वह देश की शासकीय संस्थाओं में अल्पसंख्यकों को बड़ी भूमिका देने के अपने प्रस्ताव छोड़ दें। भारत जैसे विविध और धार्मिक तौर पर आवेशित राष्ट्र में कठोर बहुमत शासन की प्रणाली अप्रभावी सिद्ध हुई है। कश्मीर से मणिपुर, पश्चिम बंगाल और केरल तक राज्यों में जारी संघर्षों से यह स्पष्ट होता है। अगर बहुमत मुस्लिमों (जनसंख्या का लगभग 14 प्रतिशत) की चिंताओं का अनादर कर सकता है, तो इसे ईसाइयों (2.3 प्रतिशत), सिक्खों (2 प्रतिशत से भी कम) और दलितों (17 प्रतिशत) के साथ ऐसा ही करने से क्या रोक सकता है?

भारत में वैज्ञानिक कैसे बनें?

विजय गर्ग

भारत में वैज्ञानिक बनना सबसे चुनौतीपूर्ण कैरियर रास्तों में से एक है। यह उन लोगों के लिए एक यात्रा है जो वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करना पसंद करते हैं और इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए नए तरीकों की खोज के बारे में भावुक हैं। भारत में वैज्ञानिक बनने के तरीके के विस्तृत चरणों के बारे में जानने के लिए इस शिखा लेख को पढ़ें। भारत में एक वैज्ञानिक बनना उन छात्रों के लिए रोमांचकारी है जिनकी ड्राइविंग बल खोजों का अनावरण करना है और वास्तविक दुनिया की समस्याओं का समाधान ढूंढना है और जो जिज्ञासा और खोज के लिए एक प्यार से प्रेरित हैं। विज्ञान प्रयोगशाला कोट और सूक्ष्मदर्शी तक सीमित नहीं है, यह सवाल पूछने, अस्पष्टीकृत का अध्ययन करने और समाज में महत्वपूर्ण योगदान देने के बारे में है। वैज्ञानिक भविष्य को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, चाहे वह टिकाऊ प्रौद्योगिकियों का आविष्कार कर रहा हो, चिकित्सा सफलता का पता लगा रहा हो, या ब्रह्मांड के रहस्यों का अनावरण कर रहा हो। भारत में वैज्ञानिक बनने का तरीका कक्षा 10 या 12 से शुरू होता है, जब छात्र भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित जैसे विज्ञान विषयों का चयन करते हैं। उसके बाद, विज्ञान (बीएससी), इंजीनियरिंग (बीटेक), या मेडिसिन में स्नातक की डिग्री के साथ एक मजबूत अकादमिक फाउंडेशन उन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है जो भारत में वैज्ञानिक बनना चाहते हैं। वे छात्र जो अधिक शोध-केंद्रित करियर, स्नातकोत्तर डिग्री (एम एस सी या एम टेक) और अंततः एक पीएचडी को आगे बढ़ाना चाहते हैं। सलाह दी जाती है, क्योंकि ये डिग्री छात्रों को अपने विशिष्ट क्षेत्र में गहरी समझ, विशेषज्ञता और हाथों के अनुभव को प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं। यह जानने के लिए कि 12 वीं के बाद भारत में वैज्ञानिक बनने का तरीका जानने के लिए इस निश लेख को पढ़ें, भारत में वैज्ञानिक बनने के लिए वैज्ञानिक और शीर्ष संस्थान बनने के लिए पात्रता मानदंड। वैज्ञानिक कौन है? एक वैज्ञानिक एक ऐसा व्यक्ति है जो अस्पष्टीकृत, जिज्ञासा द्वारा निर्देशित, को निर्देशित करता है और सिद्धांतों का परीक्षण करने के लिए अवलोकन, प्रयोग और विश्लेषण का उपयोग करता है, पैटर्न की खोज करता है, और प्रकृति, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य और परे समस्याओं को हल करता है। वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में, क्षेत्र में, या यहां तक कि कंप्यूटर के पीछे, सूक्ष्म कोशिकाओं से दूर आकाशगंगाओं तक सब कुछ का अध्ययन कर सकते हैं। एक वैज्ञानिक केवल एक लैब कोट द्वारा परिभाषित नहीं है; वे अपने जीवन को बेहतर बनाने और ब्रह्मांड को समझने के लिए अपने ज्ञान के बारे में पूछताछ, सीखने और योगदान देने की अपनी मानसिकता के लिए जाने जाते हैं। 12 वीं के बाद भारत में वैज्ञानिक कैसे बनें? वैज्ञानिक बनने का तरीका सही मानसिकता, शिक्षा और समर्पण के साथ कठिन लेकिन प्राप्त करने योग्य है और एक चरण-दर-चरण गाइड की मदद से कि उस सपने को कैसे एक वास्तविकता को सही बनाने के बाद अपनी 12 वीं कक्षा को पूरा करने के बाद, जैसा कि नीचे उल्लेख किया गया है। 1) 12 वीं में सही धारा चुनेंः मूल नींव मजबूत होनी चाहिए, और इसलिए, यात्रा हाई स्कूल में शुरू होती है, जहां छात्रों को भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान (जीवन विज्ञान के लिए) या गणित (भौतिक विज्ञान के लिए) जैसे मुख्य विषयों के साथ विज्ञान की धारा का चयन करना होगा। यह छात्रों को उनकी महत्वपूर्ण सोच और विश्लेषणात्मक कौशल पर काम करने में मदद करेगा। इसके अलावा, उम्मीदवारों को भारत में वैज्ञानिकों के शीर्ष संस्थानों के कटऑफ को हराने में सक्षम होने के लिए उच्च प्रतिशत का स्कोर करना होगा। 2) रुचि के क्षेत्र का निर्णयः छात्रों को अपनी रुचि के क्षेत्र को तय करना होगा, जैसे कि दवा, क्वांटम भौतिकी, अंतरिक्ष और जलवायु और अन्य। जीवन विज्ञान (जूलॉजी, वनस्पति विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, माइक्रोबायोलॉजी), भौतिक विज्ञान (भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित), इंजीनियरिंग विज्ञान (रोबोटिक्स, कंप्यूटर विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स), पृथ्वी, जैसे जीवन विज्ञान (जूलॉजी, वनस्पति विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, माइक्रोबायोलॉजी) जैसे चुनने के लिए विभिन्न प्रमुख शाखाएं हैं।विज्ञान (भूविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, मौसम विज्ञान), और अंतरिक्ष और खगोल भौतिकी। 3। एक स्नातक पाठ्यक्रम का पीछा करनाः अपनी कक्षा को पूरा करने के बाद, बीएससी जैसे यूजी कोर्स को आगे बढ़ाना महत्वपूर्ण है, जो कि विज्ञान के उम्मीदवारों और उन छात्रों के लिए बीटेक की डिग्री के लिए एक आदर्श पाठ्यक्रम है, जो लागू विज्ञान और प्रौद्योगिकी की ओर झुकाव हैं (जैसे कि इसरो या डीआरडीओ में वैज्ञानिक बनना), इंजीनियरिंग एक बेहतर डिग्री हो सकती है। भारत में बीएससी और बीटेक के लिए कुछ शीर्ष संस्थान आईआईएससी बंगलोर, I आईआईटीएस (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान), , (भारतीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान), डीयू, जेएनयू, बीएचयू और अन्य केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं। 4।प्रवेश परीक्षा के लिए तैयार करेंः छात्रों को कुछ प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं को साफ करने के लिए तैयार करना होगा, जैसे कि जेईई मेन और जेईई एडवांस्ड, आईआईटी और एनआईटी को उन लोगों के लिए आगे बढ़ाने के लिए जो इंजीनियरिंग और अनुसंधान भूमिकाओं में रुचि रखते हैं। एनईईटी परीक्षा उन छात्रों के लिए है जो दवा या बायोटेक अनुसंधान में जाना चाहते हैं। आईआईएसईआर एप्टीट्यूड टेस्ट (आईएटी), नेस्ट (एनआईएएसईआर और युएम-डीऐई सीईबीएस के लिए), और सीयुईटी (केंद्रीय विश्वविद्यालयों के लिए)। 5। उच्च अध्ययन के लिएः जो छात्र उन्नत स्तर के अध्ययन के लिए जाना चाहते हैं, उन्हें एम एस सी, एम टेक, पीएचडी डिग्री के लिए तैयार करना होगा। भारत में वैज्ञानिक बनने के लिए, स्नातक की डिग्री होना पर्याप्त नहीं है; छात्रों को गहन ज्ञान और विशेषज्ञता हासिल करने के लिए मास्टर डिग्री के साथ -साथ मास्टर डिग्री का चयन करना होगा। जिन छात्रों ने बीटेक किया था, उन्हें कुछ अंतःविषय पाठ्यक्रमों में एम टेक या एम एस सी लिए जाना चाहिए। अपनी मास्टर डिग्री पूरी करने के बाद, छात्र पेशेवर शोधकर्ताओं के रूप में अपनी यात्रा शुरू करेंगे। 6। अनुसंधान संस्थानों और प्रयोगशालाओं में जाओः जिन छात्रों ने अपनी यूजी और पीजी डिग्री पूरी कर ली है, वे एक जूनियर रिसर्च फेलो (जेआरएफ) या अनुसंधान सहायक के रूप में काम करना शुरू कर सकते हैं। भारत के कुछ शीर्ष अनुसंधान संस्थानों का उल्लेख नीचे किया गया है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन सीएसआईआर ,वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद ,भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद ,भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र , रिसर्च एसोसिएट्स या पोस्टडॉक फेलो के रूप में जो छात्र इन शोध संस्थानों में प्रवेश प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि इन संस्थानों में अक्सर अपनी भर्ती परीक्षा होती है या गेट/नेट स्कोर पर विचार होता है। 7। अनुसंधान परियोजनाओं पर काम करें और पत्रों को प्रकाशित करेंः स्नातक और मास्टर डिग्री होना पर्याप्त नहीं है; छात्रों को अनुसंधान करने, निष्कर्षों को प्रकाशित करने, सम्मेलनों में भाग लेने और गहन ज्ञान प्राप्त करने के लिए अन्य वैज्ञानिकों के साथ सहयोग करने की आवश्यकता है। छात्रों को पीएचडी के दौरान सामाजिक, औद्योगिक या तकनीकी प्रभाव वाली परियोजनाओं में भी शामिल होना चाहिए। छात्रों को अपनी प्रतिष्ठा बनाने के लिए प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में अपने काम को प्रकाशित करने और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेने पर भी काम करना चाहिए।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार स्ट्रीट कुर चांद मलोट पंजाब

छात्रों को अद्वितीय नौकरियों पर

विजय गर्ग

तेजी से विकसित होती दुनिया में, स्नातकों को अनुकूलनशीलता और निरंतर सीखने को गले लगाना चाहिए। सफलता अपने आप को फिर से तैयार करने और उत्सुक रहने पर निर्भर करती है। पिछले ज्ञान को जाने देने से नए दरवाजे खुलते हैं और कई जुनून को जोड़कर और एक बहु-विषयक मार्ग का पीछा करके, छात्र अपने लिए अद्वितीय अवसर पैदा कर सकते हैं। यहां तक कि माता-पिता भी गैर-पारंपरिक कैरियर पथ की पूर्ति और मूल्य के महत्व को समझते हैं। अज्ञात के लिए तैयार करने के लिए, स्नातकों को अपने जुनून पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, उनकी समझ को गहरा करना चाहिए, और उन कनेक्शनों को ढूंढना चाहिए जो उन्हें बाहर खड़ा करते हैं।

अपने आप को सच होने और विशिष्टता को गले लगाने से एक पूर्ण और समृद्ध भविष्य होता है। सफलता अनुकूलनशीलता, निरंतर सीखने, अनलर्निंग, किसी की सच्ची कॉलिंग खोजने और वित्तीय ज्ञान को एकीकृत करने में निहित है। हाई स्कूल स्नातक सफलता के लिए अपने स्वयं के अनूठे मार्ग का पालन करके आत्मविश्वास से विकसित दुनिया को नेविगेट कर सकते हैं। मौजूदा क्षेत्रों में विघटनकारी नवाचारों से परे, कई नए कैरियर के रास्ते सामने आए हैं, जो विविध हितों और जुनून वाले छात्रों के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करते हैं। निम्नलिखित छात्रों के लिए इन रोमांचक नए युग के करियर में से कुछ हैं:

ध्वनि इंजीनियरिंग और संगीत साउंड इंजीनियरिंग का क्षेत्र संगीत और ऑडियो उत्पादन के लिए प्यार वाले व्यक्तियों के लिए एक शानदार अनुभव प्रदान करता है। साउंड इंजीनियर संगीत पटरियों को रिकॉर्ड करने, मिश्रण करने और माहिर करने के साथ-साथ लाइव प्रदर्शन और फिल्म निर्माण के लिए ऑडियो समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह क्षेत्र रचनात्मक स्वभाव के साथ तकनीकी विशेषज्ञता को जोड़ती है।

कृत्रिम होशियारी एआई के उदय ने विभिन्न उद्योगों में संभावनाओं की दुनिया को खोल दिया है। एआई विशेषज्ञ एल्गोरिदम, मशीन लर्निंग मॉडल और बुद्धिमान प्रणालियों के विकास पर काम करते हैं। स्वायत्त वाहनों से लेकर व्यक्तिगत सिफारिश प्रणालियों तक, एआई पेशेवर डेटा और स्वचालन की शक्ति का उपयोग करके भविष्य को आकार देते हैं।

डिजिटल मार्केटिंग और विज्ञापन डिजिटल युग में, व्यवसाय अपने लक्षित दर्शकों तक पहुंचने के लिए डिजिटल मार्केटिंग और विज्ञापन पर बहुत अधिक भरोसा करते हैं। इस क्षेत्र में करियर में आकर्षक सामग्री बनाना, उपभोक्ता व्यवहार का विश्लेषण करना और उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न ऑनलाइन प्लेटफार्मों का उपयोग करना शामिल है। डिजिटल विपणक ब्रांड की सफलता को चलाने के लिए रचनात्मकता, विश्लेषणात्मक कौशल और रणनीतिक सोच को जोड़ते हैं।

ड्रोन और रोबोटिक्स रोबोटिक्स का क्षेत्र आश्चर्यजनक गति से आगे बढ़ रहा है जो रोबोट और ड्रोन को डिजाइन करने और प्रोग्रामिंग करने में रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए अवसर प्रस्तुत करता है। रोबोटिक्स इंजीनियर विनिर्माण और स्वास्थ्य सेवा से लेकर रसद और मनोरंजन तक के उद्योगों के लिए रोबोट विकसित करते हैं। इस क्षेत्र में इंजीनियरिंग कौशल और नवाचार के लिए एक जुनून के मिश्रण की आवश्यकता होती है। जैसा कि नौकरी का बाजार विकसित होता है, स्नातकों के लिए उनके लिए उपलब्ध नए युग के कैरियर विकल्पों का पता लगाना आवश्यक है। ये क्षेत्र न केवल रोमांचक अवसर प्रदान करते हैं, बल्कि दुनिया में एक सार्थक प्रभाव बनाने का मौका भी प्रदान करते हैं। प्रौद्योगिकी, नवाचार और रचनात्मकता की शक्ति को गले लगाकर, छात्र एक सफल और पूर्ण कैरियर का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

"अजमेर से इंस्टाग्राम तक: बेटियों की सुरक्षा पर सवाल"

शिक्षा या शिकारी जाल? पढ़ी-लिखी लड़कियों को क्यों नहीं सिखा पाए हम सुरक्षित होना?

अजमेर की छात्राएं पढ़ी-लिखी थीं, लेकिन वे सामाजिक चुप्पियों और डिजिटल खतरों से अनजान थीं। हमें यह स्वीकार करना होगा कि शिक्षा सिर्फ डिग्री नहीं, सुरक्षा भी सिखाए। और परवरिश सिर्फ आज्ञाकारी बनाने के लिए नहीं, संघर्षशील और सचेत नागरिक बनाने के लिए होनी चाहिए। हमारी बेटियां फंसती नहीं हैं, फंसाई जाती हैं—और जब तक शिक्षा सिर्फ अंकों तक सीमित रहेगी, ये शिकारी जाल बार-बार बुने जाते रहेंगे।

-प्रियंका सौरभ

पढ़ी-लिखी लड़कियों को यौन शोषण और ब्लैकमेलिंग के मामलों में इतनी आसानी से कैसे फंसने दिया जाता है? यह सवाल अक्सर तब पूछा जाता है, जब मीडिया में किसी लड़की के साथ यौन शोषण या ब्लैकमेलिंग का मामला सामने आता है। लेकिन यह सवाल गलत है। सही सवाल यह होना चाहिए कि वह फंसी नहीं, फंसाई गई—एक साजिश, एक शोषण तंत्र और एक चुप्पी के गठजोड़ द्वारा। इस मामले में केवल लड़की दोषी नहीं, बल्कि वह समाज और सिस्टम भी दोषी है, जिसने उसे सुरक्षित और संवेदनशील बनाने के बजाय सिर्फ ₹संभल कर रहने₹ की शिक्षा दी।

अजमेर कांड: एक काला अध्याय

अजमेर का नाम जब भी यौन शोषण और ब्लैकमेलिंग के मामलों में लिया जाता है, तो 1992 में हुए गैंगरेप कांड का जिक्र जरूरी हो जाता है। उस समय के अजमेर गैंगरेप कांड ने पूरे देश को झकझोर दिया था, जब राजनीतिक और धार्मिक रसूख वाले लोग, और खासकर ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह से जुड़े लोग, हज़ारों स्कूल और कॉलेज छात्राओं को फंसा रहे थे। पहले तो उन्हें प्यार के जाल में फंसा कर, फिर उनकी अश्लील तस्वीरें खींच कर, उन्हें ब्लैकमेल किया गया। इस कांड के कारण कई लड़कियों ने आत्महत्या तक कर दी थी।

लेकिन अब, 30 साल बाद, एक बार फिर अजमेर में वैसा ही मंजर सामने आया है। इस बार सोशल मीडिया, इंस्टाग्राम चैट, फर्जी प्रोफाइल और वीडियो के ज़रिए सैंकड़ों छात्राओं को ब्लैकमेल किया गया है। पुलिस ने कई लड़कों को गिरफ्तार किया है, जिनमें नाबालिग भी शामिल हैं।

क्या बदला इन तीन दशकों में?

30 साल पहले की तुलना में आजकल लड़कियों की शिक्षा और जागरूकता के स्तर में जरूर बदलाव आया है, लेकिन क्या आज भी हमें यह लगता है कि अजमेर जैसी घटनाओं को टाला जा सकता था? क्या हम लड़कियों को पूरी तरह से सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त कदम उठा पा रहे हैं? क्या आज भी स्कूल और कॉलेजों में सुरक्षा के बारे में गहरे सवाल नहीं खड़े होते?

परवरिश की खामोश पटरियां

अक्सर जब कोई लड़की यौन शोषण का शिकार होती है, तो यह सवाल उठता है कि उसने यह क्यों होने दिया? क्या उसका कोई दोष था? लेकिन असलियत यह है कि जब लड़कियों को बचपन से ही यह शिक्षा दी जाती है कि ₹लड़कों से दूर रहो₹ या ₹तुमसे गलती हो सकती है₹, तो वे इस डर में बड़ी होती हैं कि अगर कुछ हुआ तो कौन उनका साथ देगा? यही डर और चुप्पी उन्हें अपराधियों का शिकार बना देती है। अगर उन्हें यह सिखाया जाए कि ₹यह तुम्हारी गलती नहीं है, तुम सुरक्षा की हकदार हो, और तुम्हें मदद मांगने का अधिकार है,₹ तो शायद वे इन स्थितियों से उबर पातीं।

शिक्षा संस्थान: किताबें हैं, करुणा नहीं

हमारे स्कूल और कॉलेज अब केवल शैक्षिक संस्थान बनकर रह गए हैं, जहां शिक्षा का केवल एक ही उद्देश्य होता है—अंकों के आधार पर परिणाम प्राप्त करना। इन्हीं संस्थानों में न तो कोई यौन शिक्षा होती है, न लैंगिक संवेदनशीलता के बारे में कक्षाएं होती हैं, और न ही कोई मानसिक स्वास्थ्य काउंसलिंग की सुविधा। लड़कियों को न केवल आत्मरक्षा की शिक्षा की जरूरत है, बल्कि उन्हें यह समझने की भी जरूरत है कि प्यार और रिश्तों में शोषण के क्या संकेत हो सकते हैं। जब लड़कियों की शिकायतों पर यह प्रतिक्रिया मिलती है, ₹तुमने ही कुछ किया होगा, तब उसने वीडियो बनाया,₹ तो यह समस्या की गंभीरता को नजरअंदाज करने जैसा है।

सोशल मीडिया: आधुनिक शिकारी की बंदूक

सोशल मीडिया और चैटिंग ऐप्स ने अपराधियों के लिए नए रास्ते खोल दिए हैं। अजमेर के नए मामले में जो हुआ, वह आधुनिक डिजिटल शिकारी के रूप में सामने आया। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स जैसे इंस्टाग्राम, स्नैपचैट और व्हाट्सएप का उपयोग करके पहले झूठे प्रेम संबंध बनाए जाते हैं, फिर इंटिमेट चैट्स और वीडियो बनाए जाते हैं, और अंत में ब्लैकमेलिंग और शोषण की प्रक्रिया शुरू होती है। इसमें सबसे बड़ी समस्या यह है कि लड़कियां इन प्लेटफॉर्म्स पर भावनात्मक रूप से असुरक्षित होती हैं। वे इन्हें एक सुरक्षित, गुप्त रिश्ते के रूप में देखती हैं, और फिर अपराधी उनका विश्वास तोड़ते हैं।

समाज का दोगलापन

जब लड़कियां पढ़ाई में अव्वल होती हैं, तो उन्हें सराहा जाता है। लेकिन जैसे ही वे किसी लड़के से दोस्ती करती हैं, या सोशल मीडिया पर सक्रिय होती हैं, उन्हें ₹आवारा₹ और ₹बिगड़ी हुई₹ करार दे दिया जाता है। अजमेर जैसी घटनाओं के बाद समाज यही सवाल करता है—"तुमने ही क्यों भरोसा किया?₹ जब कि यह सवाल उल्टा होना चाहिए—"तुम्हारे स्कूल और कॉलेज में सुरक्षा तंत्र कहां था?"

हमारे समाज में लड़कियों को केवल एक दिशा में ही शिक्षित किया जाता है, वह है, ₹संभल कर रहो₹। लेकिन क्या लड़कियों को यह भी सिखाया गया है कि वे अपने अधिकारों की रक्षा कैसे कर सकती हैं? क्या हमें यह समझने की जरूरत नहीं कि लड़कियों को ₹अपने बचाव₹ के लिए तैयार करना केवल उनका व्यक्तिगत जिम्मा नहीं, बल्कि पूरे समाज का जिम्मा है?

पुलिस और प्रशासन की चुप्पी

कभी 1992 में अजमेर गैंगरेप कांड के समय पुलिस और प्रशासन ने राजनीतिक दबाव के कारण मामले को दबा दिया था। अब भी वही हो रहा है—कई आरोपियों के नाम सामने नहीं आ रहे हैं, और नाबालिगों को किशोर न्याय कानून का सहारा मिल रहा है। क्या यही वह सिस्टम है, जिस पर हमें भरोसा करना चाहिए? जब पुलिस और प्रशासन चुप रहते हैं, तो शोषण और बलात्कार की घटनाओं को दबा दिया जाता है। यही हाल आजकल के कॉलेजों और स्कूलों में भी हो रहा है, जहां सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं है।

अजमेर और कोटा जैसे मामलों में यह भी सामने आया कि लड़कियों को सोशल मीडिया, चैटिंग ऐप्स, फर्जी प्रोफाइल के ज़रिए जाल में फँसाया गया। जब ऑनलाइन संवाद शुरू होता है, तो वह एक 'गोपनीय रिश्ता' जैसा लगने लगता है। इसी भरोसे का शोषण होता है।

किसी लड़की का विश्वास करना, प्रेम में पड़ना या किसी से बात करना अपराध नहीं है। अपराध तब होता है जब कोई इस भरोसे का बलात्कार करता है, ब्लैकमेल करता है, और उसे अपमान में जीने पर मजबूर करता है। ऐसे मामलों में हमें पीड़िता को दोष नहीं देना चाहिए, बल्कि यह पूछना चाहिए कि उस कॉलेज में सुरक्षा तंत्र कैसा था? स्कूल प्रशासन को क्यों नहीं पता चला? पुलिस और प्रशासन ने पहले की घटनाओं से क्या सीखा?

समाधान क्या हो?

समाधान केवल एक दिशा में नहीं आ सकता। इसके लिए हमें शिक्षा प्रणाली, समाज, पुलिस और प्रशासन, और मीडिया को हर स्तर पर जागरूक करना होगा। सबसे पहले, हमें यौन शिक्षा को स्कूल पाठ्यक्रम में अनिवार्य रूप से शामिल करना होगा। कॉलेजों में काउंसलिंग और डिजिटल सुरक्षा प्रशिक्षण दिया जाए। हर जिले में महिलाओं के लिए साइबर हेल्पलाइन और त्वरित कार्रवाई इकाई की स्थापना होनी चाहिए। इसके साथ ही, मीडिया को पीड़िता को दोषी ठहराने से रोकना होगा और पुराने मामलों की निष्पक्ष जांच होनी चाहिए।

अजमेर की छात्राएं पढ़ी-लिखी थीं, लेकिन वे सामाजिक चुप्पियों और डिजिटल खतरों से अनजान थीं। हमें यह स्वीकार करना होगा कि शिक्षा सिर्फ डिग्री नहीं, सुरक्षा भी सिखाए। और परवरिश सिर्फ आज्ञाकारी बनाने के लिए नहीं, संघर्षशील और सचेत नागरिक बनाने के लिए होनी चाहिए।

हमारी बेटियां फंसती नहीं हैं, फंसाई जाती हैं—और जब तक शिक्षा सिर्फ अंकों तक सीमित रहेगी, ये शिकारी जाल बार-बार बुने जाते रहेंगे।

शब्दों से पहले चुप्पियाँ थीं

— प्रियंका सौरभ

शब्दों से पहले चुप्पियाँ थीं,
सिलवटों में सिसकती बेटियाँ थीं।
किताबों में दर्ज़ थीं उम्मीदें,
मगर दीवारों में बंद इज़्ज़त की तिज़ोरियाँ थीं।

अजमेर की गलियों में कोई ताज नहीं गिरा था,
गिरे थे भरोसे, रिश्ते, और आत्माएँ।
एक शहर था जहाँ इबादत भी ख़ामोश थी,
और इश्क़, एक जाल की भूमिका में था।

वे लड़कियाँ पढ़ती थीं, सपने बुनती थीं,
लेकिन हमने उन्हें सिखाया था—
₹चुप रहो, सँभल कर चलो,
अपने ही डर को पवित्र मानो।₹

फिर आया इंस्टाग्राम—
एक नई मस्जिद, एक नया मंदिर
जहाँ दोस्ती फॉलो से शुरू होती थी,
और ब्लैकमेल में तब्दील हो जाती थी।

स्क्रीन की रौशनी में उजाले कम थे,
अंधेरे अब डिजिटल हो चुके थे।
झूठे प्रोफाइलों के पीछे छिपे थे
हज़ारों अशरीरी राक्षस—
बिना सींग, बिना पूँछ,
बस एक चैट और एक क्लिक से वार करते।

लड़कियाँ फँसी नहीं थीं—
वे फँसाई गई थीं—
सिस्टम की चुप्पी, समाज की नैतिकता,
और हमारी लाचार शिक्षा नीति से।

स्कूलों ने पाठ पढ़ाए, पर
ना डर से लड़ने का पाठ पढ़ाया,
ना इज़्ज़त के नाम पर
घुटने को ना कहने का साहस।

कोई पूछे उस माँ से
जिसने बेटी को हवनकुंडों की तरह पाला,
और फिर देखा—
कैसे संस्कार चुप हो गए
जब बेटी की इज़्ज़त ब्लूटूथ पर घूमने लगी।

कोई पूछे उस प्रशासन से
जो 1992 में भी सोया था,
और अब 2025 में भी
न्याय की गाड़ी वही पुरानी घिसी पटरियों पर
खिसक रही है।

क्योंकि बेटियाँ ग़लती नहीं करतीं—
वे भरोसा करती हैं,
और यही भरोसा उनकी सज़ा बन जाता है।

23 अप्रैल : विश्व पुस्तक दिवस पर विशेष

यादगार बने पुस्तक...!

पठन-पाठन से यादगार बने पुस्तक,
जब भी मन करें देती है यह दस्तक।
ज्ञान, सृजन और मानवीय संवेदनाएँ,
कभी-कभी हर भी लेती है वेदनाएँ।
ये हमारा भी साथ देती है जीवनभर,
हर समय छाई रहीं मानस पटल पर।

पठन-पाठन से यादगार बने पुस्तक,
जब भी मन करें देती है यह दस्तक।
ये कागज़ और स्याही का मेल नहीं,
मृतप्राय हो जाए यह कोई सेल नहीं।
यह महज़ शब्दों का कोई ताल नहीं,
अथाह गहराई हैं इसमें ये जाल नहीं।

पठन-पाठन से यादगार बने पुस्तक,
जब भी मन करें देती है यह दस्तक।
अनुभव, विचार व भावनाएँ खजाना,
पन्नों से दिखाती नव दुनिया ज़माना।
हमारे अकेलेपन की वफादार साथी,
जैसे तेजोमय हो जाते हैं दीया-बाती।

पठन-पाठन से यादगार बने पुस्तक,
जब भी मन करें देती है यह दस्तक।
हमें हरदम हँसाती तो कभी रुलाती,
सोचने पर मजबूर कर खूब रिझाती।
कई बार हमारा वह 'हौसला' बढ़ाती,
जीवन की हक़ीक़त रूबरू करवाती।
बचपन-वृद्धावस्था तक भाल मस्तक!

संजय एम तराणेकर

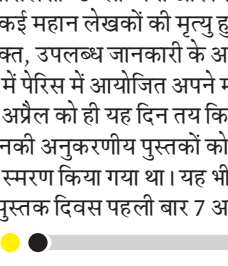

फसलों में लगती आग: किसान की मेहनत का जलता सपना

हर साल हजारों एकड़ फसल आग में जलकर राख हो जाती है, जिससे किसानों की मेहनत, उम्मीदें और जीवन प्रभावित होते हैं। आग के मुख्य कारणों में बिजली की लचर व्यवस्था, मानवीय लापरवाही, आपसी दुश्मनी और जलवायु कारण शामिल हैं। सरकारी मुआवज़ा योजनाएं और फसल बीमा प्रक्रियाएं इतनी जटिल और असंवेदनशील हैं कि पीड़ित किसान को राहत नहीं, बल्कि और मानसिक पीड़ा मिलती है। लेख में तकनीक आधारित समाधान जैसे थर्मल सेंसर, फायर ब्रिगेड यूनिट, बिजली व्यवस्था का आधुनिकीकरण और किसानों की जागरूकता पर ज़ोर दिया गया है। फसल की आग केवल खेत नहीं जलाती, यह देश की खाद्य सुरक्षा और सामाजिक संरचना को भी राख कर देती है। समय रहते नीतिगत और तकनीकी हस्तक्षेप बेहद आवश्यक हैं।

-डॉ.सत्यवान सौरभ

हर साल जब रबी की फसल खेतों में सुनहरे रंग बिखेरती है और किसान की आंखों में सालभर की मेहनत की चमक उतरती है, तभी कहीं किसी गांव से धुएं का काला गुबार उठता है—फसल में लगी आग का। यह आग सिर्फ खेत को नहीं जलाती, यह किसान की आत्मा को भस्म कर देती है। भारत के ग्रामीण परिदृश्य में यह कोई नई घटना नहीं, बल्कि एक भीषण और बढ़ती हुई समस्या है जो नीतियों की लाचारी, तकनीकी उपेक्षा और प्रशासनिक सुस्ती की जिंदा मिसाल बन चुकी है।

आँकड़ों की सच्चाई और ज़मीनी हकीकत

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) के अनुसार, भारत में हर साल हज़ारों एकड़ की फसल आग की भेंट चढ़ जाती है। अकेले उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और मध्य प्रदेश में अप्रैल से जून के बीच सैकड़ों घटनाएं सामने आती हैं। 2024 में पंजाब के बरनाला ज़िले में एक ही दिन में 50 से अधिक फसल अग्निकांड दर्ज किए गए थे। पर इन आँकड़ों के पीछे जो दर्द है, वह किसी सरकारी प्रेस रिलीज़ में दर्ज नहीं होता। किसान महीनों तक खेत में सुबह-शाम खटता है, उधारी में बीज, खाद, पानी और मजदूरी का इंतज़ाम करता है, और जब फसल तैयार होती है, तो एक चिंगारी सब खत्म कर देती है।

आग के कारण: चिंगारी कहाँ से आती है?

फसलों में आग लगने के कई कारण हैं। ग्रामीण इलाकों में बिजली वितरण प्रणाली इतनी जर्जर है कि खुले खेतों में तारों का गिरना आम बात है। गर्मियों में बढ़ा हुआ लोड और पुराने ट्रांसफार्मर शॉर्ट सर्किट को बढ़ावा देते हैं। खेतों के पास कूड़ा जलाना, बीड़ी-सिगरेट फेंकना, या आग से सूखी झाड़ियों की सफाई करना एक चिंगारी को आग में बदल देता है। कई बार आपसी दुश्मनी या जमीन के झगड़ों में जानबूझकर फसलों को आग लगा दी जाती है। अत्यधिक तापमान, तेज़ हवाएं और सूखी फसलें आग को तेजी से फैलाने में सहायक बनती हैं।

किसान के दिल की आग

बात सिर्फ मुआवज़े की नहीं है। जब कोई किसान देखता है कि उसका खेत, उसकी मेहनत, उसकी उम्मीदें जल रही हैं, तो वह भीतर से टूट जाता है। कई किसानों की आत्महत्याएं इसी आग के बाद दर्ज हुई हैं। हरियाणा के कैथल ज़िले में 2023 में एक किसान ने अपने खेत में आग लगने के बाद आत्महत्या कर ली थी। मुआवज़ा 10 हज़ार रुपए आया, पर घर में खाने को रोटी नहीं थी।

सरकार की नीतियाँ: राहत या औपचारिकता?

सरकारी मुआवज़ा योजनाएं खेत की जली भूमि के अनुसार तय होती हैं। लेकिन जमीन का निरीक्षण पटवारी और तहसीलदार करते हैं, जो अक्सर हफ्तों बाद आते हैं। छोटे किसानों को 4-5 हज़ार रुपये प्रति एकड़ मिलते हैं, वह भी महीनों बाद। फसल बीमा योजनाएं भी अधिकतर कागज़ी हैं। कई किसान न तो पॉलिसी की शर्तें समझते हैं और न ही दावे की प्रक्रिया। बीमा कंपनियां मौसम का डेटा दिखाकर दावा खारिज कर देती हैं—₹आग तो मौसम का हिस्सा नहीं थी।₹

समाधान क्या है?

अब वक्त है कि हम 'राहत' की बजाय 'रोकथाम' की बात करें।

आधुनिक तकनीक जैसे थर्मल सेंसर, ड्रोन निगरानी और अलार्म सिस्टम फसलों में आग का पता समय रहते लगा सकते हैं। प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर मोबाइल दमकल गाड़ियां और गांव स्तर पर स्वयंसेवी अग्निशमन दल गठित किए जाने चाहिए।

खेतों में जाने वाली बिजली लाइनों को भूमिगत करना या उनके नियमित रखरखाव की जवाबदेही तय करनी चाहिए।

खेतों के पास आग से संबंधित कार्य न करने, कूड़ा जलाने की रोकथाम, और फायर सेफ्टी प्रशिक्षण बेहद ज़रूरी है। जिन मामलों में साजिश या शरारत शामिल हो, वहां पुलिस तुरंत संज्ञान ले और मुकदमा दर्ज हो। फसल बीमा को आधार और मोबाइल से जोड़कर दावा प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी बनाया जाए।

मीडिया की भूमिका: धुएं से परे देखना

मीडिया जब किसी फसल में आग की खबर दिखाता है, तो अक्सर दृश्यात्मक सनसनी होती है—जलते खेत, रोता किसान। लेकिन इसके बाद क्या? क्या कभी किसी चैनल ने यह दिखाया कि मुआवज़ा मिला या नहीं? पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया या नहीं? दोषी पकड़ा गया या मामला ठंडे बस्ते में चला गया? फसलों में लगती आग कोई प्राकृतिक आपदा नहीं, यह एक व्यवस्थागत विफलता है। और इस विफलता की जिम्मेदारी सिर्फ किसान पर नहीं, पूरे समाज पर है।

जो खेत जल रहे हैं, वह देश की थाली है

जब खेत जलता है, तो केवल किसान का नुकसान नहीं होता, वह पूरे देश की खाद्य सुरक्षा पर सवाल खड़ा करता है। यह आग उस थाली में पहुँचने से पहले ही अनाज को राख कर देती है। ज़रूरत इस बात की है कि हम किसान को सिर्फ ₹अन्नदाता₹ न कहें, बल्कि उसे सुरक्षा, सम्मान और तकनीक के संसाधन भी दें। फसलों में लगती आग अब चेतावनी है—अगर अब भी हम नहीं चेते, तो कल सिर्फ खेत नहीं जलेंगे, समाज की आत्मा भी राख हो जाएगी।

फसलों में लगती आग

धरती की छाती पर हल की लकीरें,
जैसे माँ के माथे की चिंता की तहरीरें।
अन्न का बीज नहीं, उसने स्वप्न बोए थे,
हर बूँद पसीने की, मानो मंत्र संजोए थे।

पर देखो! एक दिन, धूप ने साँस ली लपटों में,
हवा ने नाच किया राख की घटाओं में।
कहीं एक चिनगारी, नादान-सी या साजिशी,
और जल उठी पूरी फ़सल — एक होली अघोषित।

ना कोई नाद, ना नगाड़ा, बस चुप्पी की चीखें,
किसान खड़ा था—उस राख में ढूँढता उम्मीदों की रेखें।
जिस खेत ने बुलाया था हर सुबह उसे नाम लेकर,
वही आज झुलसा पड़ा है, किसी लावारिस की तरह।

सरकारी काग़ज़ आए—कुछ आँकड़े, कुछ वादे,
बीमे की पंक्तियों में छुपे छल और साधे।
'मुआवज़ा मिलेगा'—यह आश्वासन का शब्द,
पर क्या कोई हिसाब रख सका आँसुओं का अर्थ?

ओ नीतिनायकों! तुम जो वातानुकूलित कमरों में,
फसलों की आग को 'डेटा' कहते हो,
कभी चलो गाँव, उस राख पर पाँव रखो,
महसूस करो वह तपिश जो आँतों तक जाती है।

क्यों नहीं हैं ट्रैक्टर की तरह अग्निरोधक यंत्र?
क्यों नहीं है खेत के लिए सुरक्षा का मंत्र?
क्यों नहीं है नीति में किसान की साँस की गूंज?
या फिर यह अन्नदाता अब केवल चुनावी एक तंज?

यह कविता नहीं, एक याचना है, एक दस्तावेज़,
उन आँखों का जो आँसुओं से भी पहले बुझ जाती हैं।
जब खेत जलते हैं, तब केवल भूसा नहीं,
पूरा देश धीरे-धीरे राख होता है।

--प्रियंका सौरभ

पीढ़ियों और संस्कृतियों के बीच सेतु होतीं हैं पुस्तकें ! (23 अप्रैल विश्व पुस्तक और कापीराइट दिवस विशेष आलेख)

23 अप्रैल को हर साल 'विश्व पुस्तक और कापीराइट दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पुस्तकें ज्ञान का अथाह भंडार होतीं हैं तथा ये किताबें ही होतीं हैं जो हमारे अतीत और भविष्य के बीच एक योजक कड़ी के रूप में काम करतीं हैं। जे.के. रोलिंग ने यह बात कही है कि-'यदि आपको पढ़ना पसंद नहीं है, तो आपको सही किताब नहीं मिली है।' कहना ग़लत नहीं होगा कि किताबें और दरवाज़े एक ही चीज़ हैं। आप उन्हें खोलते हैं, और आप दूसरी दुनिया में चले जाते हैं। वास्तव में, किताबें पीढ़ियों और संस्कृतियों के बीच एक सेतु की भूमिका निभाती हैं। पाठकों को बताता चलूं कि यह दिवस यूनेस्को द्वारा स्थापित किया गया था और इसका उद्देश्य साहित्य के विभिन्न रूपों का लुत्फ़ उठाना, पढ़ने की आदतों को बढ़ावा देना और कॉपीराइट के महत्व को उजागर करना है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार सर्वप्रथम वर्ष 1995 में, यूनेस्को ने 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस के रूप में नामित किया था, क्योंकि इस दिन महान्नाटककार विलियम शेक्सपियर, इंका गार्सिलसो-डे-ला-वेगा और मिगुएल डे सर्वेंट्स सहित कई महान लेखकों की मृत्यु हुई थी। इसके अतिरिक्त, उपलब्ध जानकारी के अनुसार यूनेस्को ने वर्ष 1995 में पेरिस में आयोजित अपने महाधिवेशन के कारण भी 23 अप्रैल को ही यह दिन तय किया था। इसमें लेखकों और उनकी अनुकरणीय पुस्तकों को श्रद्धांजलि दी गई तथा उनका स्मरण किया गया था। यह भी उल्लेखनीय है कि विश्व पुस्तक दिवस पहली बार 7 अक्टूबर, 1926 को मनाया गया था और विसेंट क्लेवेल एन्ड्रेस ने विश्व पुस्तक दिवस मनाने का विचार 1922 में प्रस्तुत किया।यहां पाठकों को यह भी जानकारी देना चाहूंगा कि स्पेन के एक क्षेत्र कैटेलोनिया में, 23 अप्रैल को ला दीदा डे सैंट जोर्डी (सेंट जॉर्ज डे) के रूप में जाना जाता है और इस दिन प्रेमी-प्रेमिकाओं के लिए पुस्तकों और गुलाबों का आदान-प्रदान करना पारंपरिक है। गौरतलब है कि विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस आधिकारिक तौर पर 1955 में मनाया गया था। हालाँकि, इस दिन की शुरुआत 1922 में विसेंट क्लेवेल एंड्रेस द्वारा एक महान स्पेनिश लेखक मिगुएल डे सर्वेंट्स के सम्मान में की गई थी। वास्तव में यह दिवस विभिन्न लेखकों, साहित्यकारों, विद्वानों, विदुषियों, पत्रकारों, प्रकाशकों, साहित्य में रूचि रखने वालों, शिक्षकों, शिक्षार्थियों तथा पुस्तकालयों की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण दिवस है। आज सोशल नेटवर्किंग साइट्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआइ) का युग है। इंटरनेट, इ-मेल, सूचना क्रांति का युग है और इस दौर में कापीराइट की आवश्यकता कहीं अधिक हो गई है, क्यों कि यह कापीराइट ही है जो कि रचनाकारों की रचनाओं की सुरक्षा करता है। पाठकों को बताता चलूं कि कापीराइट कानून में क्रमशः किसी पेंटिंग, फ़ोटोग्राफ़, चित्रण,संगीत रचनाओं, ध्वनि रिकॉर्डिंग,कंप्यूटर प्रोग्राम, नाटक, फिल्म,किताबों, वास्तुशिल्प का कार्य, कविताओं, कहानियों समेत ब्लॉग पोस्ट या किसी भी प्रकार के साहित्य को शामिल किया जा सकता है। वास्तव में कॉपीराइट, रचनाकार की सुरक्षा करता है, ताकि कोई भी व्यक्ति बिना अनुमति के उसकी नकल या इस्तेमाल न कर सके।सरल शब्दों में कहें तो कॉपीराइट, किसी रचना या आविष्कार के बारे में अनन्य रूप से प्रकाशित करने, बेचने, वितरित करने या फिर से बनाने का एक तरह से एक विशेष कानूनी अधिकार है। आज कापी पेस्ट का जमाना है और बहुत से लोग इधर-उधर से किसी साहित्यिक मैटर(सामग्री)को उठाकर हू-ब-हू अपने नाम से इस्तेमाल कर लेते हैं,जो कि कापीराइट का सीधा उल्लंघन है। आमतौर पर कापीराइट एक तरफ से 'बौद्धिक संपदा कानून' है। हम कह सकते हैं कि 'कॉपीराइट , साहित्यिक, संगीतमय, नाटकीय या कलात्मक कार्य को पुनरुत्पादित करने, वितरित करने और प्रदर्शन करने का अनन्य, कानूनी रूप से सुरक्षित अधिकार है।' यह बहुत ही दुखद है कि आज कोई भी व्यक्ति किसी के काम को(साहित्यिक, कलात्मक आदि) को बिना मूल लेखक/कलाकार की अनुमति के उसके(लेखक विशेष) काम को पुनः तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करता है, अथवा इसे प्रकाशित करता है, तथा इसे सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करता है, या इसे फिल्माता है, अथवा इसे किसी अन्य रूप में प्रसारित या इसका रूपांतरण आदि करता है, तो इसे किसी भी हाल और परिस्थितियों में जायज़ नहीं ठहराया जा सकता है,यह बहुत ही ग़लत है। आज विभिन्न साहित्यिक कृतियों जैसे कि पुस्तकों, लेखों, कविताओं, उपन्यासों और कंप्यूटर अनुप्रयोग आदि, नाट्य कृतियों जैसे कि नाटक, पटकथाओं और प्रदर्शन के लिए स्क्रिप्ट आदि,संगीतमय कृतियों जैसे कि विभिन्न रचनाओं, धुनों और संगीत आदि, विभिन्न कलात्मक कृतियों जैसे कि पेंटिंग, रेखाचित्रों, फोटोग्राफ, मूर्तियों और वास्तुशिल्पीय कृतियों आदि,सिनेमैटोग्राफ फिल्मों जैसे कि दृश्य कथाओं सहित चलचित्रों, वृत्तचित्रों और वीडियो सामग्री आदि तथा ध्वनि रिकॉर्डिंग जैसे कि किसी गाने, भाषण या किसी भी रिकॉर्ड की गई ध्वनि की ध्वनि रिकॉर्डिंग आदि को बिना मूल लेखक/कलाकार की अनुमति के किसी अन्य व्यक्ति द्वारा प्रस्तुत कर दिया जाता है, जबकि वह उसका स्वयं का लिखा/बनाया गया नहीं होता है तो यह कापीराइट का सीधा उल्लंघन है। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार भारत में, कॉपीराइट अधिनियम 1957 निर्माता को 60 वर्षों के लिए सुरक्षा प्रदान करता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि इस अधिनियम का मकसद, लेखकों, प्रकाशकों, और उपभोक्ताओं के बीच संतुलन बनाए रखना है तथा इस अधिनियम में अब तक कई संशोधन भी हो चुके हैं, जिसमें सबसे हालिया संशोधन वर्ष 2012 में हुआ था। विकीपीडिया पर उपलब्ध एक जानकारी के अनुसार '2016 के कॉपीराइट मुकदमे में, दिल्ली उच्च न्यायालय ने कहा कि कॉपीराइट 'कोई अपरिहार्य, दैवीय या प्राकृतिक अधिकार नहीं है जो लेखकों को उनकी रचनाओं का पूर्ण स्वामित्व प्रदान करता है, बल्कि इसे जनता के बौद्धिक संवर्धन के लिए कला में गतिविधि और प्रगति को प्रोत्साहित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। कॉपीराइट का उद्देश्य ज्ञान की फसल को बढ़ाना है, न कि उसे बाधित करना। इसका उद्देश्य जनता को लाभ पहुँचाने के लिए लेखकों और आविष्कारकों की रचनात्मक गतिविधि को प्रेरित करना है।'

बहरहाल,कॉपीराइट(प्रतिलिप्यधिकार) अधिनियम 1957 'विचारों के बजाय विचारों की अभिव्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करता है।' यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि कॉपीराइट (संशोधन) नियम 2021 को कॉपीराइट के अन्य प्रासंगिक कानूनों के अनुरूप लाने के लिये कार्यान्वित किया गया था। बहरहाल, पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि वर्ष 2025 में विश्व पुस्तक और कॉपीराइट दिवस की थीम 'रीड योर वे'(अपने तरीके से पढ़ें) रखी गई है। अंत में यही कहूंगा कि 'विश्व पुस्तक और कापीराइट दिवस' पर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम अपने जीवन में अधिकारी किताबें पढ़ें, पुस्तकों का दान करें। पढ़ने से ज्ञान में बढ़ोत्तरी होती है,हम सक्रिय बनते हैं। हमारी शब्दावली का विकास पढ़ने से ही होता है। पढ़ने से हमारा अवसाद और तनाव कम होता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि 'किताबें दुनिया चलातीं हैं।' सच तो यह है कि किताबों के पन्नों के बीच ज्ञान की बड़ी शक्ति छुपी होती है और ज्ञान ही असली शक्ति है। वास्तव में, 'किताबें एक अनोखा पोर्टेबल जादू हैं।'कहना गलत नहीं होगा कि लेखन और पठन हमारे अलगाव की भावना को कम करते हैं। वे हमारे जीवन की भावना को गहरा और व्यापक बनाते हैं। संक्षेप में कहें तो वे आत्मा को पोषण देते हैं।सिसेरो ने कहा है-'पुस्तकों के बिना एक कमरा आत्मा के बिना शरीर की तरह है।'

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवसः लोकतंत्र की जड़ों को सींचता एक पर्व

गाँव की मिट्टी में बसता है भारत का असली दिल — वह दिल, जो हर सुबह सूरज की पहली किरण के साथ धड़कता है, हर चौपाल पर गूँजती आवाज़ों में बोलता है, और हर पंचायत भवन में लिए गए फैसलों में साँस लेता है। यहाँ की हवा में मेहनत की खुशबू है, यहाँ की गलियों में एकता की गूँज है, और यहाँ की ग्राम सभाओं में लोकतंत्र की जीवंतता है। जब कोई किसान अपनी फसल की चिंता खुलकर बयान करता है, जब कोई महिला अपनी बात पर अडिग रहकर समाज की रूढ़ियों को चुनौती देती है, और जब कोई युवा अपने गाँव के भविष्य के लिए सपने बुनता है — तभी भारत का लोकतंत्र अपनी सबसे खूबसूरत तस्वीर पेश करता है। यही वह ताकत है, यही वह जादू है, जिसे हम हर साल २४ अप्रैल को राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस के रूप में मनाते हैं। यह दिन सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि गाँवों की सत्ता, उनकी आत्मनिर्भरता और उनके फैसलों की गाथा का उत्सव है। यह हमें याद दिलाता है कि भारत की असली शक्ति न तो दिल्ली के गलियारों में है, न ही बड़े शहरों की चकाचौंध में, बल्कि गाँव की उन साधारण सी चौपालों में है, जहाँ हर आवाज़ मायने रखती है।

१९९२ में ७३वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज को न सिर्फ कानूनी बल्कि संवैधानिक मज़बूती दी। यह कोई साधारण कानून नहीं था; यह एक क्रांति थी, जिसने सत्ता के पुराने ढाँचे को हिलाकर रख दिया। सत्ता अब केवल राजधानियों के दफ्तरों तक सीमित नहीं रही; वह गाँव की पगडंडियों, खेतों और पंचायत भवनों तक पहुँच गई। इस संशोधन ने गाँववासियों को सिर्फ योजनाओं का लाभार्थी नहीं बनाया, बल्कि उन्हें योजनाओं का निर्माता, लागू करने वाला और निगरानी करने वाला बनाया। गाँवों को अपनी ज़रूरतें खुद तय करने का हक मिला। सड़क कहाँ बनेगी, स्कूल में क्या सुधार होगा, पानी का कुआँ कहाँ खोदा जाएगा — ये फैसले अब गाँव की ग्राम सभा की बैठकों में होने लगे। यह सिर्फ प्रशासनिक बदलाव नहीं था; यह सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक क्रांति थी, जिसने गाँवों को उनकी खोई हुई गरिमा और पहचान वापस दी। पंचायती राज का सबसे प्रेरक पहलू रहा है महिलाओं का सशक्तिकरण। पंचायतों में ३३% आरक्षण ने लाखों महिलाओं को न केवल नेतृत्व का मंच दिया, बल्कि उनकी आवाज़ को समाज की मुख्यधारा में लाया। आज देशभर में महिलाएँ सरपंच, ग्राम प्रधान, और जिला परिषद सदस्य के रूप में न सिर्फ फैसले ले रही हैं, बल्कि सामाजिक बेड़ियों को तोड़ रही हैं। ये महिलाएँ सिर्फ अपने गाँव की दिशा नहीं बदल रही हैं; ये भारत के समावेशी विकास की नई कहानी लिख रही हैं। एक ऐसी महिला, जो कभी घर की चारदीवारी तक सीमित थी, आज ग्राम सभा में अपनी बात रखती है, योजनाओं को मंजूरी देती है, और अपने गाँव के भविष्य को आकार देती है। यह बदलाव केवल आँकड़ों में नहीं, बल्कि गाँवों की बदलती तस्वीर में साफ दिखता है। लेकिन क्या यह कहानी पूरी हो चुकी है? राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस हमें यह सवाल भी पूछने के लिए मजबूर करता है। कई गाँवों में पंचायतें अभी भी कागज़ी हैं, फैसले ऊपर से थोपे जाते हैं, और ग्राम सभाएँ सिर्फ औपचारिकता बनकर रह जाती हैं।

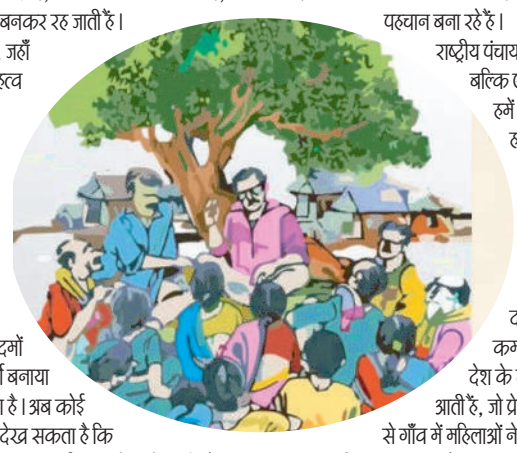

फिर भी, जहाँ पंचायतें सशक्त हैं, जहाँ पारदर्शिता और जवाबदेही को महत्व दिया जाता है, वहाँ विकास की रफ्तार और उसका प्रभाव बेमिसाल है।

आज का युग डिजिटल क्रांति का युग है, और पंचायती राज भी इस क्रांति का हिस्सा बन चुका है। ई-ग्राम स्वराज, डिजिटल पंचायत पोर्टल, और ऑनलाइन लेखा प्रणाली जैसे कदमों ने पंचायतों को न केवल पारदर्शी बनाया है, बल्कि उन्हें और सशक्त किया है। अब कोई भी ग्रामवासी अपने मोबाइल पर देख सकता है कि उसके गाँव में कितना फंड आया, कहाँ खर्च हुआ, और कौन-सी योजना चल रही है। यह तकनीक गाँववासियों को सिर्फ जानकारी नहीं दे रही, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक कर रही है। डिजिटल उपकरणों ने पंचायतों के कामकाज को तेज़, जवाबदेह और प्रभावी बनाया है। गाँव अब न सिर्फ आत्मनिर्भर हो रहे हैं, बल्कि वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बना रहे हैं।

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस सिर्फ एक उत्सव नहीं, बल्कि एक आत्ममंथन का अवसर भी है। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमने पंचायती राज की आत्मा को पूरी तरह समझा है? क्या हमारी पंचायतें सचमुच स्वतंत्र और सशक्त हैं? क्या गाँववासी अपनी बात निर्भीकता से रख पा रहे हैं? कई बार प्रशासनिक अड़चनें, भ्रष्टाचार, और सामाजिक दबाव पंचायतों की स्वायत्तता को कमज़ोर करते हैं। लेकिन इसके बावजूद, देश के कोने-कोने से ऐसी कहानियाँ सामने आती हैं, जो प्रेरणा देती हैं। मध्य प्रदेश के एक छोटे से गाँव में महिलाओं ने पंचायत के ज़रिए सौर ऊर्जा को बढ़ावा दिया, राजस्थान के एक गाँव ने जल संरक्षण की ऐसी मिसाल कायम की कि वह पूरे देश के लिए उदाहरण बन गया। ये कहानियाँ बताती हैं कि जब गाँव जागता है, तो वह सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए रास्ता दिखाता है।

हर साल २४ अप्रैल को जब हम उत्कृष्ट पंचायतों को राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित करते हैं, तब हम सिर्फ उनकी उपलब्धियों का जश्न नहीं मनाते, बल्कि पूरे देश को यह संदेश देते हैं कि लोकतंत्र की असली ताकत जमीनी स्तर पर है। ये पुरस्कार सिर्फ एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि गाँवों की मेहनत, एकता और ईमानदारी का प्रतीक हैं। ये हमें याद दिलाते हैं कि अगर गाँव मज़बूत होंगे, तो देश मज़बूत होगा। पंचायती राज सिर्फ एक शासन व्यवस्था नहीं, बल्कि हर ग्रामवासी को अधिकार, सम्मान और सुनने का मंच देने का वादा है। यह उस भारत का उत्सव है, जो गाँवों की मिट्टी से बना है, और जिसका भविष्य गाँवों की चौपालों पर लिखा जा रहा है। २४ अप्रैल का यह दिन हर उस गाँव के लिए प्रेरणा है, जो आत्मनिर्भर बनना चाहता है। यह हर उस महिला के लिए प्रेरणा है, जो अपनी आवाज़ को बुलंद करना चाहती है। यह हर उस युवा के लिए प्रेरणा है, जो अपने गाँव में बदलाव लाना चाहता है। और यह हर उस भारतीय के लिए प्रेरणा है, जो एक ऐसे भारत का सपना देखता है, जहाँ विकास की गंगा गाँवों की गलियों तक बहे। राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस सिर्फ एक दिन नहीं, बल्कि लोकतंत्र के सबसे खूबसूरत, सबसे सच्चे रूप का उत्सव है — गाँव की आवाज़ का, गाँव के फैसलों का, और गाँव के भविष्य का। यह वह दिन है, जब हम गाँवों को नमन करते हैं, उनकी ताकत को सलाम करते हैं, और उनके साथ मिलकर एक नए भारत का सपना देखते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

झारखंड में ईडी पुनः सक्रिय, वन भूमि घोटाले में 15 ठिकानों पर छापा

भू माफिया, अफसर का चरागाह बना अब सीआईडी के बाद ईडी भी कुदा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, जमीन माफिया एवं अधिकारियों के करतुत का खामियाजा भुगत रहा झारखंड में ईडी ने पुनः अपनी सक्रियता दिखाई है ।स्टेट सीआईडी द्वारा जांच कर रही 100 एकड़ वन भूमि घोटाले पर अब ईडी ने दबिश दी है । प्रर्वतन निदेशालय की टीम ने मंगलवार की अहले सुबह लालपुर के राजबीर कंस्ट्रक्शन के हरिओम टावर पर स्थित कार्यालय और कंपनी के ठिकानों, कांके और हटिया के विभिन्न इलाकों में कंपनी के दफ्तर और उससे जुड़े लोगों के आवास पर छापा मारा है. जानकारी के मुताबिक झारखंड और बिहार के कुल 15 ठिकानों पर यह रेड पड़ी है. वन भूमि घोटाला मामले को लेकर यह कार्रवाई की गयी है ।

तेतुलिया वन भूमि घोटाला मामले को लेकर ईडी की टीम ने बोकारो में भी दबिश डाली है. कई जगहों पर छापेमारी चल रही है. उमायुष मल्टीकॉम प्राइवेट लिमिटेड के प्रोजेक्ट हेड किशोर किस्कू के घर, रैयत इजहार हुसैन और अख्तर हुसैन के उकरीद स्थित घर, तेतुलिया में जमीन पर स्थित कार्यालय सहित अन्य जगहों पर रेड मारी जा रही है. तेतुलिया मौज स्थित खाता नंबर 59 प्लॉट नंबर 450- 426 के कुल रखवा एक एकड़ तीन डिसमिल जमीन फर्जीवड़े पर यह कार्रवाई की गयी है.

मामला बोकारो के तेतुलिया मौजा स्थित करीब 100 एकड़ वन भूमि का है. जहां भू-माफियाओं ने सरकारी अफसरों के साथ मिलकर इस खेल को अंजाम दिया. हालांकि झारखंड डीजीपी अनुराग गुप्ता के निर्देश पर मामले की जांच सीआईडी कर रही है. बोकारो वन प्रमंडल के प्रभारी वनपाल सह वनरक्षी रुद्र प्रताप सिंह की शिकायत पर धारा 406, 420, 467, 4680 471, 120बी/34 व 30(सी)/63 फॉरेस्ट एक्ट के तहत सेक्टर-12 थाना में 18 मार्च 2024 को प्राथमिकी दर्ज की गयी थी.

बोकारो वन भूमि घोटाले का मामला वर्ष 2022 का है. जिले के कुछ प्रशासनिक अधिकारियों ने कई गड़बड़ियां कर एक कंपनी को वन विभाग की 74.38 एकड़ जमीन दे दी थी. यह धनबाद जिला प्रशासन के उस मामले से जुड़ा है, जिसमें साल 2013 में तेतुलिया मौजा के चास थाना के सर्वे प्लॉट नंबर- 426/450 की भूमि को जंगल साल (वन विभाग की भूमि) की जगह पुरानी परती के रूप में प्रकाशित की गयी थी. इसके बाद जब महेंद्र कुमार मिश्र ने सीएनटी एक्ट की धारा-87 के तहत अपनी मात्र 10 डिसमिल जमीन के लिए बोकारो इस्पात परियोजना प्राधिकार भारत सरकार के खिलाफ वाद- 4330/2013 दायर किया, तो इसमें बोकारो जिला प्रशासन की इंट्री हुई. महेंद्र मिश्रा ने भले ही मामला दायर किया, लेकिन वर्ष 2014 के बाद उन्होंने खुद को किनारे कर लिया.

सूचना का अधिकार अभियान कार्यकर्ता सम्मेलन एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: पुरी जिला स्तरीय आरटीआई कार्यकर्ता सम्मेलन और प्रशिक्षण कार्यक्रम राज्य आरटीआई के संयोजक प्रदीप प्रधान के संरक्षण में विश्वनाथ मुंडिया के पास गढ़चंडी मंटुक में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में पुरी जिले के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और सरकार की जन मंगल योजना के समुचित कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए सूचना के अधिकार अधिनियम का व्यापक उपयोग करने की योजना बनाई। राज्य आयुक्त श्री प्रधान ने इस बात पर जोर दिया कि आरटीआई लोकतंत्र का वास्तविक लोक कल्याणकारी, जवाबदेही और भ्रष्टाचार विरोधी कानून है। 20 वर्षों से अधिक समय से इस कानून के कार्यान्वयन के संबंध में ओ.एस.ए. द्वारा जन जागरूकता और व्यापक उपयोग से राज्य की सरकारी प्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही आई है। बैठक में जिला सूचना अधिकार अभियान के संपादक दिवाकर नायक ने इस कानून को और अधिक प्रभावी बनाने पर बल दिया। कार्यक्रम का सफल आयोजन देलांग प्रखंड संयोजक विकास रॉय एवं संयुक्त संयोजक तुषार रंजन धोलायर सिंह एवं अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा किया गया। सक्रिय आरटीआई कार्यकर्ता सुशील कुमार साहू, सुदर्शन स्वैन, सुदर्शन मिश्रा, सौमेंद्र दाश, किशन पटनायक और मानवाधिकार कार्यकर्ता अखंड सहित साठ से अधिक कार्यकर्ताओं ने पुरी जिले में सभी सरकारी और निजी योजनाओं में स्वच्छता और शून्य भ्रष्टाचार बनाए रखने का विचार उठाया। जिला सूचना अधिकार अभियान के संपादक श्री नायक ने सैकड़ों आरटीआई कार्यकर्ताओं को ग्रामीण क्षेत्रों में सृष्टि निर्माण हेतु जन जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक प्रारूप तैयार किया। इस बैठक में सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में जिला एवं प्रखंड प्रशासनिक अधिकारियों की बेईमानी एवं धोखाधड़ी वाले रवैये पर सख्ती से अंकुश लगाने का निर्णय लिया गया।

ट्रक ने पीसीआर को टक्कर मारी, 2 पुलिसकर्मियों की मौत, एक गंभीर रूप से घायल

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: पारादीप रोड पर गीतागौड़पटना में एक दुखद सड़क दुर्घटना घटी है। यहां एक ट्रक द्वारा पीसीआर वैन को कुचल दिए जाने से दो पुलिस कर्मियों की असमय मृत्यु हो गई। इतना ही नहीं, एक अन्य पुलिस अधिकारी गंभीर रूप से घायल हो गया है। कथित तौर पर पुलिस ने उसे बचा लिया और एससीबी में भर्ती करा दिया ।कटक के डीसीपी ऋषिकेश खिलारी के अनुसार, तड़के सुबह ट्रक तेज गति से आया और पीसीआर वैन को सीधी टक्कर मार दी। परिणामस्वरूप, एक ओपीएफ जवान और एक होमगार्ड की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मृतक जवान का नाम लोकनाथ शबर बताया गया है और उसका निवास रायगढ़ा में है। सूचना है कि होमगार्ड का घर कटक जिले के किशोरनगर में है। दोनों के परिजनों को घटना की सूचना दे दी गई है। पुलिस ने दोषी ट्रक चालक को गिरफ्तार कर लिया है और जांच कर रही है।

तुम न आये तो मौसम ये सुहाना न रहेगा ।

सर पर किसी दीवार का साया न रहेगा,
आपस में लड़ोगे तो कोई तुम्हारा न रहेगा,
अब आ भी जाओ ज़िन्दगी ये ही तो नहीं है,
ख़्वाब मेरा भी फिर कोई परेशां न रहेगा,
फरिश्ता बनने की चाहत में इंसान लगा है,
हुआ करिश्मा कोई तो कोई इंसां न रहेगा,
मान जाएंगे हम अभी भी मानलो हमको,
चले जो गए लौट आने का इरादा न रहेगा,
बुजुर्ग माँ बाप हैं लेलो दुआएं अभी भी इनकी,
ये न रहे तो फिर दूसरा कोई भी सहारा न रहेगा,
सावन का महिना है हंसीं आ जाओ न तुम भी,
तुम न आये तो मौसम सुहाना सुहाना न रहेगा,
सियासतदां हैं ये इनकी मीठी बातों में न आना,
वोट ले लिया ₹ मुश्ताक₹ इनका काफ़ियां न रहेगा
,

डॉ. मुश्ताक़ अहमद

विश्व पुस्तक दिवस 23 अप्रैलः टेक्नालॉजी के युग में भी पुस्तकों का महत्व कम नहीं होगा

-संदीप सृजन

पुस्तकें हैं वन उपवन, जहां विचारों की छाँव,
हर पन्ना एक पंखुड़ी, बिखेरे ज्ञान का गंध।
इनमें बस्ती है सृष्टि, इनमें जीवन का स्वर,
पढ़ने वाला पाए, अनंत का आलिंगन सघन।

प्रकृति के सुकुमार कविवर सुमित्रानंदन पंत की ये पंक्तियां प्रकृति और पुस्तक के बीच एक सुंदर समन्वय स्थापित करती है। उनने कविता में पुस्तकों को ₹विचारों का उपवन₹ कहा है। जो की शाश्वत सत्य है। आज का युग तकनीकी क्रांति का युग है। स्मार्टफोन, इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और वर्चुअल रियलिटी ने मानव जीवन को एक नई दिशा दी है। सूचनाएँ अब उंगलियों के इशारे पर उपलब्ध हैं, और डिजिटल उपकरणों ने समय और स्थान की सीमाओं को लगभग मिटा दिया है। फिर भी, इस तेज़ रफ्तार डिजिटल दुनिया में पुस्तकें अपनी एक खास जगह बनाए हुए हैं। पुस्तकें न केवल ज्ञान का भंडार हैं, बल्कि मानवता की संस्कृति, इतिहास, भावनाओं, और कल्पनाशीलता का जीवंत दस्तावेज भी हैं।

पुस्तकें मानव सभ्यता की रीढ़ रही हैं। प्राचीन मिस्र के पेपिरस से लेकर भारत के ताड़पत्रों तक, और मध्ययुगीन यूरोप की हस्तलिखित पांडुलिपियों से लेकर आधुनिक मुद्रित पुस्तकों तक, इनका योगदान अतुलनीय है। वेद, उपनिषद, महाभारत, रामायण, बाइबिल, कुरान, और गुरु ग्रंथ साहिब जैसी पुस्तकों ने न केवल धार्मिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया, बल्कि नैतिकता, दर्शन, और सामाजिक मूल्यों को भी परिभाषित किया। ये ग्रंथ आज भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि ये मानव जीवन की जटिलताओं को समझने का एक गहरा दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

टेक्नालॉजी ने सूचनाओं को तीव्र और सुलभ बना दिया है, लेकिन पुस्तकों की गहराई और प्रामाणिकता का कोई विकल्प नहीं है। एक पुस्तक न केवल तथ्यों का संग्रह होती है, बल्कि यह लेखक के विचारों, अनुभवों, और भावनाओं का एक संगम भी होती है। पाठक जब पुस्तक के पन्नों को पलटता है, तो वह लेखक के साथ एक संवाद में प्रवेश करता है, जो समय और स्थान की सीमाओं को पार कर जाता है। यह अनुभव डिजिटल स्क्रीन पर उपलब्ध संक्षिप्त और अस्थायी सामग्री से कहीं अधिक गहन और स्थायी होता है।

पुस्तकें समाज को एक सूत्र में बाँधती हैं। साहित्य, इतिहास, और दर्शन की पुस्तकें विभिन्न पीढ़ियों, संस्कृतियों, और समुदायों के बीच एक सेतु का काम करती हैं। उदाहरण के लिए, प्रेमचंद की कहानियाँ और उपन्यास भारतीय ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों और सामाजिक असमानताओं को आज भी जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह, शेक्सपियर के नाटक, टॉल्सटॉय के उपन्यास, और रवींद्रनाथ टैगोर की कविताएँ मानवीय भावनाओं और अनुभवों की

सार्वभौमिकता को दर्शाती हैं। ये रचनाएँ हमें याद दिलाती हैं कि चाहे युग कितना भी बदल जाए, मानव हृदय की बुनियादी भावनाएँ और संघर्ष वही रहते हैं।

टेक्नालॉजी के इस युग में सोशल मीडिया और वीडियो कंटेंट ने मनोरंजन और सूचना के स्वरूप को बदल दिया है। लेकिन ये माध्यम अक्सर सतही और क्षणिक होते हैं। एक ट्वीट या रील कुछ पलों में हमारा ध्यान खींच सकता है, लेकिन वह गहन चिंतन या भावनात्मक जुड़ाव प्रदान नहीं करता। दूसरी ओर, एक उपन्यास या कविता-संग्रह पाठक को घंटों तक बाँधे रखता है। पाठक कहानी के पात्रों के साथ हँसता है, रोता है, और उनके अनुभवों को अपने जीवन से जोड़ता है। यह भावनात्मक और बौद्धिक जुड़ाव पुस्तकों को डिजिटल माध्यमों से अलग करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकों की भूमिका निर्विवाद है। पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों को आधारभूत और गहन ज्ञान प्रदान करती हैं। ऑनलाइन कोर्स, वीडियो लेक्चर, और डिजिटल संसाधनों ने शिक्षा को सुलभ बनाया है, लेकिन पुस्तकें अब भी गहन अध्ययन और संदर्भ सामग्री का प्रमुख स्रोत हैं। एक पुस्तक पढ़ते समय पाठक अपनी गति से सीखता है, महत्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित करता है, और विचारों को आत्मसात करता है। यह प्रक्रिया दीर्घकालिक स्मृति और समझ को बढ़ावा देती है, जो डिजिटल माध्यमों में अक्सर अनुपस्थित होती है।

पुस्तकें न केवल शैक्षिक ज्ञान प्रदान करती हैं, बल्कि वैचारिक विकास में भी योगदान देती हैं। दर्शन, विज्ञान, और साहित्य की पुस्तकें पाठक को प्रश्न उठाने, तर्क करने, और नए दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं। उदाहरण के लिए, कार्ल मार्क्स की ₹दास कैपिटल₹ या सिगमंड फ्रायड की मनोविश्लेषण संबंधी रचनाएँ आज भी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विचारधारा को प्रभावित करती हैं। ये पुस्तकें हमें अपने समाज और स्वयं को गहराई से समझने का अवसर देती हैं।

झारखंड में 2 करोड़ अवैध निकासी जांच के क्रम मे ईडी ने पकड़े 22 करोड़

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

सरायकेला, भ्रष्ट अभियंत्रण के गिरफ्त में आज झारखंड त्राहि त्राहि कर रहा है ।पेयजल आपूर्ति, सिंचाई के पैसे का बंदर बांट तो आपने सुनी ही होगी पर क्या जानते झारखंड में एक बड़ा रैकेट रांची से से चलाई जाती है जो अभियंत्रण विभाग का है । 1996 का पशुपालन घोटाला की तरह आज भी घोटाले दर घोटाले होते आ रहे हैं ।अब यहां आप पशु डॉक्टर, खजांची नहीं बल्कि इंजिनियरों के कारनामे में सचिव, मंत्री संतरी तक शामिल होकर अपना हिस्सा बटोर लेते ।कुछ ऐसी ही हकीकत बयां करती ईडी की जांच रपट ।

झारखंड की पेयजल एवं स्वच्छता विभाग में २.71 करोड़ के फर्जी निकासी मामले की जांच के दौरान ईडी ने अब तक २२ करोड़ 93 लाख 4२ हजार 947 रुपये की फर्जी निकासी का मामला पकड़ा है। ईडी ने एडजुकेटिंग अथॉरिटी को सौंपी गई अपनी जांच रिपोर्ट में विभाग के तत्कालीन कैशियर सह अपर डिविजनल क्लर्क संतोष कुमार के बयान का जिक्र किया है, जिसमें उसने बताया है कि कमीशन की राशि विभाग के तत्कालीन मंत्री, तत्कालीन सचिव व अभियंताओं में बंटी थी।

मनीष रंजन पेयजल एवं स्वच्छता विभाग में अक्टूबर २०२२ से जनवरी २०२४ तक सचिव थे। इसी अवधि में दो करोड़ 71 लाख ६२ हजार 833 रुपये की फर्जी निकासी मामले में रांची के सदर थाने में २8 दिसंबर २०२३ को प्राथमिकी दर्ज हुई थी। फर्जी निकासी का आरोप पेयजल एवं स्वच्छता विभाग स्वर्णरेखा डिविजन रांची के तत्कालीन कैशियर सह अपर डिविजनल क्लर्क संतोष कुमार पर लगा था।

इसी केस के आधार पर ईडी ने वर्ष २०२४ में इंफोर्समेंट केस इंफार्मेशन रिपोर्ट (ईसीआइआर) २०२४ दर्ज किया था। संतोष कुमार को झारखंड पुलिस ने नौ अप्रैल २०२४ को गिरफ्तार किया था।

उक्त प्राथमिकी में यह स्पष्ट हुआ था कि संतोष कुमार व अन्य ने मिलकर लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के नाम पर फर्जी भुगतान आइडी बनाकर दो करोड़ 71 लाख ६२ हजार 833 रुपये की फर्जी निकासी की थी।

संतोष कुमार ने ईडी के सामने स्वीकार किया है कि उसने 16, 18 व २३ मार्च २०२० को २.71 करोड़ रुपये स्थानांतरित किया था।

संतोष कुमार ने 16 मार्च २०२० को एसबीआइ के खाता नंबर 39187२२9438 में चार बार में क्रमशः २496700, २490२00, २4२8२91 व 804134 रुपये, 18 मार्च २०२० को एसबीआइ के खाता नंबर 30२4२418496 में दो बार में क्रमशः २9२२0२1 व २8२0010 रुपये स्थानांतरित किया। वहीं, केनरा बैंक के खाता नंबर 1969101010933 में २759554, 3२18421, २986981 रुपये स्थानांतरित किया।

ईडी ने बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा होटवार में संतोष कुमार का बयान लिया था। उसने बताया कि तत्कालीन कार्यपालक अभियंता प्रभात कुमार सिंह के आदेश पर उसने यह फर्जीवाड़ा किया था। उसने लार्सन एंड टुब्रो लिमिटेड के नाम से फर्जी भुगतान आइडी बनाया था। मार्च २०२० में उसने तत्कालीन कार्यपालक अभियंता प्रभात कुमार सिंह के कहने पर दो करोड़ 71 लाख ६२ हजार 533 रुपये छह चेक बनाया था।

इसमें तत्कालीन डिविजनल अकाउंटेंट स्व. सुरेंद्र पाल मिंज व प्रभात कुमार सिंह ने भी हस्ताक्षर किया था। इसके बाद रांची के तत्कालीन कोषागार पदाधिकारी मनोज कुमार व तत्कालीन हेड क्लर्क शैलेंद्र कुमार को दस प्रतिशत कमीशन पर सेट किया और फर्जी बिल तथा चेक पास करवाया था।

ये दो करोड़ 71 लाख ६२ हजार 533 रुपये उसके अपने व उसकी कंपनी मेसर्स राकड्रिल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड के बैंक खाते में ट्रांसफर हुए थे।

ईडी ने अनुसंधान में यह भी पाया कि पेयजल एवं स्वच्छता विभाग तथा रांची के कोषागार कार्यालय के पदाधिकारियों की मिलीभगत से संतोष कुमार व उसकी कंपनी मेसर्स राकड्रिल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड के खाते में कुल २२ करोड़ 93 लाख 4२ हजार 947 रुपये स्थानांतरित हुए।

अनुसंधान में यह भी जानकारी मिली कि संतोष कुमार ने तत्कालीन कार्यपालक अभियंता प्रभात कुमार सिंह के निर्देश पर दिसंबर २०२२ में मेसर्स राकड्रिल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड नामक कंपनी बनाई थी। कुल २२.93 करोड़ रुपये में से 1२ करोड़ रुपये की नकदी निकासी हुई थी।

वहीं, 1२ करोड़ दो लाख रुपये 11 लोगों को स्थानांतरित हुए थे।

जिन 11 लोगों के खाते में 1२ करोड़ 0२ लाख रुपये स्थानांतरित हुए थे, उनमें तत्कालीन कार्यपालक अभियंता प्रभात कुमार सिंह (1.75 करोड़ रुपये), तत्कालीन कार्यपालक अभियंता राधो श्याम (एक करोड़ रुपये), तत्कालीन कार्यपालक अभियंता चंद्रशेखर (तीन करोड़ रुपये), तत्कालीन अधीक्षण अभियंता निरंजन कुमार (80 लाख रुपये), डिविजनल अकाउंटेंट परमानंद कुमार (एक करोड़ रुपये), डिविजनल अकाउंटेंट स्व. सुरेंद्र पाल मिंज (30 लाख रुपये), कोषागार पदाधिकारी मनोज कुमार (15 लाख रुपये), कोषागार पदाधिकारी सुनील कुमार सिन्हा (85 लाख रुपये), पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कर्मी संजय कुमार सिंह (10 लाख रुपये), पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के कर्मी रंजन कुमार सिंह (सात लाख रुपये) व संतोष कुमार स्वयं (तीन करोड़ रुपये) शामिल थे जिसका विवरण निम्नानुसार रहा बैंक खातों का मेसर्स राकड्रिल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड के यस बैंक के खाता नंबर 806330000६609 में 169509२0 रुपये।

मेसर्स राकड्रिल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड के एक्सिस बैंक के खाता नंबर 9२30२000२451668 में 13444650 रुपये।

संतोष कमार के केनरा बैंक के खाता नंबर 1969101010933 में २3541२94 रुपये।

संतोष कुमार के एसबीआइ खाता नंबर 39187२२9438 में 33049834 रुपये।

संतोष कुमार के एसबीआइ खाता नंबर 41506771906 में 44365077 रुपये।

संतोष कुमार के एसबीआइ खाता नंबर 30२4२418496 में २3654576 रुपये।

संतोष कुमार के एसबीआइ खाता नंबर 101603087२२ में 1395000 रुपये।

संतोष कुमार के एसबीआइ खाता नंबर 35२84388703 में २6443120 रुपये।

मेसर्स राकड्रिल कंस्ट्रक्शन प्राइवेट लिमिटेड के आइसीआइसीआइ बैंक के खाता नंबर 1750501153२ में 19013917 रुपये।

संतोष कुमार के एसबीआइ खाता नंबर 351752856६7 में 807२750 रुपये।

संतोष कुमार के बैंक आफ इंडिया के खाता नंबर 49041011001२928 में 19411809 रुपये।

यानी कुल २२934२947 रुपये।

ईडी ने अनुसंधान में पाया कि संतोष कुमार ने म्यूचुअल फंड में करीब ६ से सात करोड़ रुपये का निवेश किया। शेष उसके बैंक खाते में रहे। संतोष कुमार ने यह भी स्वीकारा की पेयजल एवं स्वच्छता विभाग में यह भ्रष्टाचार जारी था। फर्जी बिलिंग के आधार पर भुगतान हुए थे। यहां टेंडर आवंटन के एवज में करीब 10 प्रतिशत का भुगतान हुआ था।

इसमें कमीशन के रूप में विभागीय मंत्री, सचिव व इंजीनियर को भी शेयर बंटा था। तत्कालीन कार्यपालक अभियंता प्रभात कुमार सिंह पेयजल एवं स्वच्छता विभाग रांची में चार जुलाई २०17 से 19 अगस्त २०२० तक रहे। इस अवधि में सरकारी खाते से दो करोड़ 71 लाख ६२ हजार 833 रुपये की निकासी हुई थी।

ये रुपये संतोष कुमार व कुछ कंपनियों के खाते में फर्जीवाड़ा कर स्थानांतरित हुए थे। इसके बाद छह जुलाई २०२३ से चंद्रशेखर कार्यपालक अभियंता रहे और इनके कार्यकाल में भी बड़े पैमाने पर सरकारी खाते से निजी लोगों व कंपनियों के खाते में रुपये स्थानांतरित हुए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023